



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 5] नई दिल्ली, बुधवार, मई 11, 1983/वैशाख 21, 1905
No. 5] NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 11, 1983/VAISAKHA 21, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद्

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 मई 1983

संख्या : 7-1/83- सी० सी० एच :-केन्द्रीय सरकार
होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 की धारा 20
की उपधारा (ii) और धारा 33 के खण्ड (झ) (ञ)
और (ट) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, और
केन्द्रीय सरकार की पूर्व मंजूरी से निम्नलिखित विनियम
बनाती, अर्थात् :-

भाग-1

प्रारंभिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ : (1) इन विनियमों का
संक्षिप्त नाम होम्योपैथी (डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम 1980
है ।

(2) ये भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को
प्रवृत्त होंगे ।

परिभाषाएं : इन विनियमों में जब तक कि संदर्भ से
अन्यथा अपेक्षित न हो, —

(i) "अधिनियम" से होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम,
1973 (1973 का 59) अभिप्रेत है ;

(ii) "पाठ्यक्रमों" से अभिप्रेत है होम्योपैथी में
पाठ्यक्रम, अर्थात्

(क) डी० एच० एम० एस० (डिप्लोमा इन होम्यो-
पैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी) पाठ्यक्रम,
और

(ख) बी० एच० एम० एस० (बेचलर आफ
होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी ;

(iii) "डिप्लोमा" से अभिप्रेत है, होम्योपैथी (डिप्लोमा
पाठ्यक्रम) विनियम 1980 के विनियम 2 के
खण्ड (iii) में यथा परिभाषित होम्योपैथी
डिप्लोमा ;

(iv) "डिग्री" से अभिप्रेत है, इन विनियमों के विनियम
3 में यथा उपबंधित होम्योपैथी डिग्री या

होम्योपैथी (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के विनियम 2 के खण्ड (iv) में यथा परिभाषित कोई डिग्री ;

- (v) "होम्योपैथी महाविद्यालय" से अभिप्रेत है, किसी बोर्ड या विश्वविद्यालय से सम्बद्ध और केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कोई होम्योपैथी महाविद्यालय ;
- (vi) "निरीक्षक" से अभिप्रेत है, अधिनियम की धारा 17 की उपधारा (i) के अधीन नियुक्त कोई आयुर्विज्ञान निरीक्षक ;
- (vii) "अध्यक्ष" से केन्द्रीय परिषद का अध्यक्ष अभिप्रेत है ;
- (viii) "द्वितीय अनुसूची" और "तृतीय अनुसूची" से अधिनियम की क्रमशः द्वितीय और तृतीय अनुसूचियाँ अभिप्रेत है ;
- (ix) "पाठ्यविवरण" और "पाठ्यचर्या" से अभिप्रेत है इन विनियमों, होम्योपैथी (डिप्लोमा पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 और होम्योपैथी (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के अधीन केन्द्रीय परिषद द्वारा यथा विनिर्दिष्ट विभिन्न पाठ्यक्रमों का पाठ्यविवरण और पाठ्यचर्या ;
- (x) "अध्यापन अनुभव" से अभिप्रेत है, केन्द्रीय परिषद द्वारा मान्यताप्राप्त किसी होम्योपैथी महाविद्यालय या किसी अस्पताल में संबंधित विषय से अध्यापन अनुभव ;
- (xi) "परिदर्शक" से अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया परिदर्शक अभिप्रेत है ।

भाग-2

3. पाठ्यक्रम :

- (i) बी० एच० एम० एस० होम्योपैथी (डिग्री) के डिग्री पाठ्यक्रम में ऐसा कोई पाठ्यक्रम समाविष्ट है जो इन विनियमों में उपबंधित पाठ्यविवरण और पाठ्यचर्या से मिलकर बना है तथा जो 5½ वर्ष में पूरा होता है । इसके अन्तर्गत अन्तिम डिग्री परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् एक वर्ष की अन्तः शिक्षता भी है ;
- (ii) अन्तःशिक्षता, होम्योपैथी महाविद्यालय से सम्बद्ध अस्पताल में और अस्पताल में अपने सभी विद्यार्थियों के लिए अन्तःशिक्षता की व्यवस्था नहीं हो तो ऐसे विद्यार्थी अन्तःशिक्षता ऐसे अस्पताल या औषधालय में प्राप्त कर सकते हैं जिसका संचालन केन्द्रीय सरकार कोई राज्य सरकार या स्थानीय निकाय करता हो ;
- (iii) विनिर्दिष्ट अवधि की अन्तःशिक्षता पूरी हो जाने और उस संस्था के जिसमें अन्तःशिक्षता प्राप्त

की गई है, प्रधान की सिफारिश पर संबंधित राज्य बोर्ड या विश्वविद्यालय सफल अभ्यर्थियों को डिग्री प्रदान करेगा ।

भाग-3

पाठ्यक्रम में प्रवेश

4. न्यूनतम अर्हता : ऐसे अभ्यर्थी को ही बी० एच० एम० एस० (डिग्री) पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाएगा जिसने—
- (क) अपने विषयों के रूप में भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में इण्टरमीडिएट विज्ञान परीक्षा या समतुल्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है ;
- (ख) उस वर्ष के 31 दिसम्बर को या उसके पूर्व, जिसने वह पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश ले, 17 वर्ष की आयु पूरी कर ली हो ।

भाग-4

पाठ्यचर्या

5. विषय : बी० एच० एम० एस० (डिग्री) पाठ्यक्रम के अध्यापन और परीक्षा के लिए विषय निम्नलिखित है, अर्थात्:—

- (i) शरीर रचना विज्ञान,
- (ii) शरीर क्रिया विज्ञान,
- (iii) औषधि आर्गेनन,
- (iv) चिरकालिक रोग और होम्योपैथी दर्शन,
- (v) मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र के मूल सिद्धांत
- (vi) रोगीवृत्त लैसा और होम्योपैथी रिपर्टरीकरण,
- (vii) होम्योपैथी भेषजी,
- (viii) होम्योपैथी मैटीरिया मैडिका,
- (ix) विकृति विज्ञान जीवाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान,
- (x) सामाजिक और निरीधक आयुर्विज्ञान जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा और वंश आयुर्विज्ञान सम्मिलित है,
- (xi) व्यवहार आयुर्विज्ञान,
- (xii) आयुर्विज्ञान और बाल आयुर्विज्ञान का व्यवसाय
- (xiii) प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान
- (xiv) शल्यक्रिया, जिसमें कर्ण नासिका कंठ और नेत्र विकृति सम्मिलित हैं,
- (xv) होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र और
- (xvi) आयुर्विज्ञान का इतिहास ।

भाग-5

पाठ्य-विवरण

6. सीधे डिग्री पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यपुस्तकें : बी० एच० एम० एस० (सीधा डिग्री) पाठ्यक्रम के लिए पाठ्य-विवरण निम्नलिखित है अर्थात् :-

भूमिका

भारत में एक रूप होम्योपैथी शिक्षा का स्वरूप अन्ततः सीधा डिग्री पाठ्यक्रम ही होगा यद्यपि अनेक कारणोंवश डिप्लोमा पाठ्यक्रम और श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम भी कुछ समय तक बने रहेंगे ।

जहां कहीं संभव है सीधा डिग्री पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है । अतः यह संभव है कि शीघ्र ही देश में सर्वत्र महाविद्यालय स्थापित हो जाएंगे । चूंकि इस पाठ्यक्रम से कुछ समय में ही भारत में होम्योपैथी शिक्षा और व्यवसाय के मानक निश्चित हो जाएंगे । अतः यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इस उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए, पाठ्य-विवरण तैयार किया जाए ।

परिणामतः निम्नलिखित पाठ्य-विवरण में यह सुनिश्चित करने का प्रयत्न किया गया है कि डिग्री महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों को अपेक्षित स्वरूप की शिक्षा प्रदान करें ।

बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा

होम्योपैथी भेषजी

सैद्धान्तिक

1. प्रस्तावना : होम्योपैथी भेषजी, उसकी विशिष्टता तथा मौलिकता, होम्योपैथी फार्मकोपिया (भेषजशेष) ।

2. निम्नलिखित के संबंध में होम्योपैथी भेषजी का प्रविषय :—

- (1) औषधि आर्गेनन (सूत्र 264 से 285 औषधि आर्गेनन)
- (2) मैटीरिया मैडिका,
- (3) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था ।

3. होम्यो-मापनाम सहित भार और माप (डेसी० सेन्टी० मिली०) ।

4. होम्योपैथी फार्मस्यूटिकल उपकरण और साधित्र ।

5. होम्योपैथी औषधियों के स्रोत, औषध-पदार्थों का संग्रहण, पहचान, शोधन, अनुरक्षण और शक्तिकृत औषधियों का अनुरक्षण ।

6. अनुपात :—

- (1) उनकी तैयारी और प्रयोग,
- (2) शोधन,
- (3) एल्कोहल की प्रमाण सामर्थ्य ।

7. कार्बनिक और रसायनों, वृक्षम्पतियों पशुओं और पशु उत्पादों, रोगोत्पादों (नोसोडस) आदि से औषधियां बनाने की पद्धतियां ।

(हेनीमन की शास्त्रीय पद्धतियां और आधुनिक पद्धतियां उनके गुण और अवगुण)

8. (क)मूल टिंक्चर घोल शक्तिकृत औषधि और सर्वेषण बनाने की पद्धतियां ।

(ख) (1) डेसीमल (वशमलव) माप

(2) सेन्टीसिमल (सेन्टीसीमल) माप के अनुसार औषधियों का शक्तिकरण ।

9. प्रवाहण (फ्लक्सियन शक्ति) —

—संषेण के द्रव रूप में परिवर्तित करने की पद्धतियां
—सीधी शक्ति (स्ट्रेट पोटेन्सी) ।

10. बाह्य प्रयोग —उसका प्रविषय —लौशन, लिनिमेंट ग्लिसैरोल और मसूम बनाने और उनके प्रयोग की पद्धतियां ।

11. नुस्खा—उसका अध्ययन, जिसमें उसके संश्लेषण भी हैं —नुस्खा लिखने और उसकी प्रमाणिकता के सिद्धान्त और पद्धति ।

12. भेषणगुण विज्ञान— औषधि सामर्थ्य—और भेषज क्रिया विज्ञान —गति की शक्ति औषधि —वागोलोजी —उपचार ।

13. औषधियों और अनुपातों के मानकीकरण का संक्षिप्त अध्ययन ।

14. होम्योपैथी भेषजी संबंध विधान का सामान्य ज्ञान ।

15. सामान्य प्रयोगशाला पद्धतियां, घोल, तनता, निस्तारण, निस्पन्दन अवक्षेपण, आसवन, क्रिस्टलन, उदात्तीकरण, (सब्लीमेशन), परिलवण आदि ।

16. कुछ महत्वपूर्ण औषध पदार्थों के जैव/भौतिक और/या रसायनिक गुणों का अध्ययन ।

17. होम्योपैथी औषधि पूविग प्रविधि ।

प्रयोगात्मक

1. होम्योपैथी फार्मस्यूटिकल उपकरण और साधित्रों की पहचान और प्रयोग तथा उनकी सफाई ।

2. महत्वपूर्ण होम्योपैथी औषधियों की पहचान ।
(संलग्न सूची देखिए)

(क)स्यूल (मेक्रासकोपिक):—

(i) कम से कम 30 औषधि पदार्थ --20 वनस्पति क्षेत्र से और 10 खनिजों और रसायनों में से ।

(ii) वनस्पति संग्रह के लिए 30 औषधि पदार्थों का संग्रहण।

(iii) 3X शक्ति तक के दो संपेषणों का सूक्ष्म अध्ययन।

3. वाटरबाथ के साथ एक औषधि पदार्थ के आंत्र स्थिरांक (मोइस्पर कान्स्टेंट) का अनुमान लगाना।

4. एथिल एल्कोहल, आसुत जल, दुग्ध शर्करा की शुद्धता परीक्षण, जिसमें आसुत जल और एल्कोहल के विनिर्दिष्ट घनत्व का अवधारण सम्मिलित है।

5. ग्लोब्यूल के आकार का अनुमान—उसका औषध प्रयोग, दुग्ध शर्करा और आसुत जल का औषध प्रयोग—खुराक तैयार करना।

6. औषधि योजन और तनु एल्कोहल घोल और तनुकरणों की तैयारी।

7. 3 पालीश्टेडों के मूल टिचरों को तैयार करना।

8. 3X तक को 3 अपरिष्कृत औषधियों के संपेषणों की तैयारी।

9. उन औषधियों के, जो डी० सी० आई० के अनुरूप नहीं हैं, मूल टिचर तैयार करना।

10. 3 मूल टिचरों का डेसिमल माप और 3 का सेंटी-सिमल माप तक शक्तिकरण।

11. 6X की 3 औषधियों का संपेषण और उनका द्रव शक्तियों में परिवर्तन।

12. बाह्य प्रयोग की औषधियां तैयार करना—प्रत्येक एक।

13. नुस्खे लिखना उनका औषधि योजन।

14. प्रयोगशाला पद्धतियां:—

- (क) उवासीकरण,
- (ख) आसवन,
- (ग) नितारना (डिस्टिलेशन),
- (घ) निस्पंदन (फिल्ट्रेशन),
- (ङ) फ्रिस्टलन,
- (च) परिस्त्रवण (परकोलेशन)।

15. बड़े पैमाने पर औषधियों के विनिर्माण के अध्ययन लिए होम्योपैथी प्रयोगशाला में जाना।

अभियान के लिए औषधियों की सूची

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| 1. कोनाइट नैप | 2. एग्रीरिकस मसकैरियस |
| 3. एण्टीमोनियम टार्ट | 4. एपिस मेलिफिका |
| 5. अर्जेंटम नाइट्रिकम | 6. आनिका माण्ट |
| 7. आर्सेनिकम एलब | 8. औरस मेटालिकम |

9. नैपटोशिया

11. बैलाडोना

13. कैमटस ग्रेण्डी

15. कैलकेरिया फास

17. कैम्फर

19. कार्थो वेजीटैलिस

21. कैमोमिला

23. चायना

25. काकुलस इन्डिकस

27. कॉलोसिन्थ

29. कूप्रम मेट

31. झोसेरा

33. ग्लोनायन

35. हीपर सल्फर

37. हाइपेरिकम

39. इपीकाकुभ्राना

41. लैकेसिस

43. मक्युरियस कर

45. मेजेरियम

47. नाइट्रिक एसिड

49. ओपियम

51. फासफोरिक एसिड

53. प्लम्बम मेट

55. रसटोक्स

57. सैम्बुकस नाइग्रा

59. सिकेलिकर

61. साइलिसिया

63. स्पोजियाट

65. स्ट्रामोनियम

62. टैरेन्टुला हिस्पैनिया

69. विरेट्रम एल्बम

81. जिंकम मेट

10. बैरापटा कार्ब

12. ब्रायोनिथा एल्ब

14. कैलकेरिया कार्ब

16. कैलेन्डुला

18. कैम्परिस

20. कास्टिकम

22. चेलीडोनियम मीजस

24. सिना

26. कोल्चकम

28. कॉनियम मैक

30. डिजिटैलिस पुरपुरा

32. डलकामारा

34. ग्रैफाइटोज

36. हायोसियाम्स नाइगर

38. इग्नेशिया

40. कैसी कार्ब

42. लाइकोपोडियम

44. मक्युरियस सल

46. नेट्रम म्यूर

48. नक्स बोमिका

50. फासफोरस

52. प्लैटिनम

54. पल्सेटिला

56. रटा

58. सैगुनेरिया कौनाडेन्सिस

60. सीपिया

62. स्पार्डजेलिया

64. स्टैनम मेट

66. सल्फर

68. थूजा आविसडैन्टैलिस

70. थिरेट्रम थिरिडि

शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान विद्यालय पूर्व अधि में सामान्य व्यक्ति का अध्ययन:

अध्ययन करने की दृष्टि से मानव शरीर रचना विज्ञान का अध्ययन सर्वाधिक जटिल है। मानव एक चेतनमनः जीव है और एक समिष्टि के रूप में कृत्यशील है। मानव ज्ञान इतना व्यापक हो गया है कि संपूर्ण मानव को निश्चित रूप में समझने के लिए, शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रियाविज्ञान और मनोविज्ञान जैसी विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का होना आवश्यक हो गया है यद्यपि ऐसा विभाजन समीचीन मात्र है, मानव आज भी अविभाज्य है।

चेतना जीवन और उसकी गोचरता की व्याख्यान तो कोशिका क्रिया विज्ञान या क्वांटम क्रियाविधि के रूप में की जा सकती है और न ही शरीर क्रिया विज्ञान संबंधी

सिद्धान्तों के, रसायन—भौतिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं, आधार पर की जा सकती है।

यद्यपि अभी तक शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान का शिक्षण, पूर्णतः दो भिन्न भिन्न विषयों के रूप में किया जाता रहा है तथापि उन दोनों के बीच कोई निश्चित विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती है। रचना (शरीर रचना विज्ञान) और क्रिया (शरीर क्रिया विज्ञान) एक ही वस्तु के दो पहलू हैं और क्रिया-रसायन प्रक्रियाएँ, जीवन जैसी व्याख्या आयोग्य गोचरता की बाह्य अभिव्यक्ति मात्र हैं:—

अतः शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान का शिक्षण, निम्नलिखित उद्देश्यों को सामने रखकर किया जाना चाहिए, अर्थात् :—

- (1) आकृतिक, क्रियाजन्य और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को, जो एक क्रियाशील इकाई के रूप में जीवधारी के आर्गेनिज्म का अवधारण करते हैं और उसे प्रभावित करते हैं, समझाना ;
- (2) मानव शरीर के रचनात्मक आर्गेनिज्म और सामान्य शरीर क्रिया को परस्पर संबद्ध करना और उनका निर्वहन करना, और तत्पश्चात् ऐसे निश्चित आधार प्रस्तुत करना जिनके आधार पर क्रियाओं में व्यवधान पड़ने की प्रत्याशा होती है ;
- (3) विद्यार्थी को इस बाबत समर्थ बनाना कि वह, क्षति, रोग और कुविकास के कारण उत्पन्न नैदानिक लक्षणों और संकेतों के रचनात्मक, क्रियात्मक और मनोवैज्ञानिक आधार को समझ सके ;
- (4) इसी प्रकार विद्यार्थी को वे कारण बताना जिनके आधार पर विकृतिजन्य प्रक्रियाएँ पतपती हैं तथा उसके कारण उत्पन्न होने वाली संभावित जटिलताओं को समझाना ;
- (5) विद्यार्थियों को पूर्वनैदानिक विषयों का ऐसा ज्ञान कराना जिससे कि वह अन्ततः ऐसे ज्ञान के लिए आवश्यक परीक्षणों और उपचारों (शल्य चिकित्सा सहित) की सभी साधारण पद्धतियों का क्षमतापूर्वक और युक्तियुक्त रूप में, प्रयोग कर सकें, और
- (6) विद्यार्थी को इस योग्य बनाना कि वह होम्योपैथी पद्धति में “विष विष को मारता है” कि सिद्धान्त को लागू करने के प्रयोजन के लिए रोगी की औषधि निश्चित करने के लिए विशिष्ट ध्याधि ज्ञापन (पैथोमोमोनिक) लक्षणों से उद्भूत, अपूर्व और असाधारण लक्षणों को विलग कर सके ।

शरीर रचना विज्ञान

शरीर रचना विज्ञान में शिक्षण इस प्रकार योजना-बद्ध रूप में किया जाए कि विद्यार्थी को मानव शरीर की रचना के बारे में साधारण कार्यकरण ज्ञान प्राप्त हो जाए। जो ब्यौरा उसे याद रखने हों, वे न्यूनतम हों, अधिकतम महत्व जीवधारी की क्रियात्मक रचना, न कि शव की स्थायी रचना, को दिया जाना चाहिए और वाइसेरा, पेशियों, रक्त वाहिकाओं, तंत्रिकाओं और लसवाहिकाओं की सामान्य रचनात्मक स्थितियों और मुख्य संबंधों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। शव का अध्ययन तो इस लक्ष्य का साधन मात्र है। विद्यार्थियों पर सूक्ष्म रचनात्मक ब्योरो का बोझ लादना उचित नहीं है क्योंकि उनका कोई नैदानिक महत्व नहीं है।

यद्यपि विद्यार्थी को नैदानिक अध्ययन के लिए तैयार करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे सम्पूर्ण शरीर का विच्छेदन (डिसेक्शन) कार्य सिखाया जाए किंतु उसे ऐसे विच्छेदन कार्य से बोझिल नहीं करना चाहिए और रेखांकन संबंधी (टापोग्राफीकल) ब्योरों की मात्रा न्यूनतम करके बहुत सा समय बचाया जा सकता है। साथ ही निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए :—

आयुर्विज्ञान के विद्यार्थी को केवल ऐसे ब्योरे बताना चाहिए जिनका उसके लिए कोई व्यावसायिक या सामान्य शैक्षिक महत्व हो।

2. विच्छेदन कार्य का प्रयोजन, तकनीकी दृष्टि से कुशल विच्छेदक पैदा करना न होकर विद्यार्थी को शरीर की क्रिया संबंधी जानकारी देना है और विच्छेदन कार्य इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सिखाया जाना चाहिए, अर्थात्, यदि छोटी और नैदानिक दृष्टि से अमहत्वपूर्ण रक्त वाहिकाओं का विच्छेदन न बताया जाए तो विद्यार्थी को प्रमुख रचनाओं का विच्छेदन और आकृति तथा उनके पारस्परिक संबंध भली प्रकार समझने के लिए अधिक समय मिल जाएगा।

3. आजकल अधिकतर जो कुछ विच्छेदन द्वारा सिखाया जा रहा है वह सब कुछ विच्छेदन निवर्ध (स्पेसीमन) द्वारा सिखाया जा सकता है। ऐसा करना अधिक उपयोगी भी होगा।

4. सामान्य विकिरण विज्ञान संबंधी शरीर रचना भी प्रयोगात्मक प्रशिक्षण का भाग हो सकती है। शरीर की रचना को क्रियात्मक पक्ष से संबद्ध रूप में, प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

5. वास्तविक विच्छेदन कार्य से पूर्व संबंधित अंग या तंत्र की सामान्य रचना की चर्चा की जाए और अन्त में उसके कार्यों के बारे में मौखिक रूप से बताया जाना चाहिए। इस प्रकार विद्यार्थी को उक्त रचनात्मक और क्रियात्मक ज्ञान, संबद्ध रूप में, कराया जा सकता है और शरीर रचना

तथा क्रियाओं का समस्त पाठ्यक्रम विद्यार्थी के लिए अधिक रोचक, जीवन्त और व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

6. शरीर रचना की बाबत सैद्धांतिक लेक्चरों के एक बड़े भाग का स्थान प्रदर्शनों के साथ ट्यूटोरियल कक्षाएं ले सकती हैं।

पाठ्यक्रम के पचासवर्ती भाग में नैदानिक और अनु-प्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान पर कुछ लेक्चरों या प्रदर्शनों की व्यवस्था की जा सकती है। अच्छा हो यह कार्य क्लिनिशियन करे। उसका उद्देश्य क्लिनिशियन को, भौतिक लक्षणों के रचनात्मक आधारों और रचनात्मक ज्ञान के महत्व को दर्शाते करना हो।

विभिन्न विषयों को सम्बद्ध रूप में प्रस्तुत करने की दृष्टि से, काशिक रूप में, गोष्ठियों और सामूहिक चर्चाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

औपचारिक क्लास रूम लेक्चरों को कम करके प्रदर्शनों और ट्यूटोरियलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

संयुक्त अध्यापन एवं प्रदर्शन सत्र होने चाहिए जिनमें नैदानिक सामग्री की सहायता से, नैदानिक विषयों के संबंध में शरीर रचना के अनुप्रयुक्त पहलुओं का प्रदर्शन किया जाए। यह पन्द्रह दिन में एक बार किया जाना चाहिए और आवश्यकतानुसार यह आरंभिक लेक्चरों के क्रम का भागरूप हो सकता है।

प्रत्येक मास शरीर क्रिया विज्ञान विभाग और जीव-रसायन विभागों की संयुक्त गोष्ठियां होनी चाहिए। स्थूल शरीर रचना विज्ञान, ऊतक विज्ञान, भ्रूण विज्ञान और आनुवंशिकी का शिक्षण पारस्परिक रूप में भली प्रकार समाकलित होना चाहिए। शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, जिसमें जीव रसायन सम्मिलित है, के क्षेत्रों और पद्धतियों में शिक्षण यथासंभव समाकलित रूप में होना चाहिए।

सैद्धांतिक

मानव शरीर रचना विज्ञान का पूर्ण पाठ्यक्रम, जिसमें शारीरिक अंगों का साधारण कार्यकरण ज्ञान सम्मिलित है। वाईसेरा, पेशियों, रक्त वाहिकाओं, तंत्रिकाओं और संवाहिकाओं की सामान्य रचनात्मक स्थितियों और व्यापक संबंधों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों पर प्रत्येक प्रकार के सूक्ष्म शारीरिक व्यौरों को, जिनका कोई नैदानिक महत्व नहीं है, बोझ लादना उचित नहीं है।

विद्यार्थियों को शरीर रचना-निर्देशों को पहचानना और हाल में किए गए विच्छेदनों से प्रकट रचनाओं का अभिज्ञान और उनसे संबंधित प्रश्नों का उत्तर देना, सिखाया जाना चाहिए। उन्हें अस्थियों और उनकी संघियों से जिनके अन्तर्गत कशेरुका (वटेब्रा) भी है, खोपड़ी और लम्बी अस्थियों के अस्थिभ्रन की रीति की जानकारी होनी चाहिए।

सूक्ष्म व्यौरों पर बल उतना ही दिया जाना चाहिए जितना आयुर्विज्ञान और शल्य चिकित्सा को समझने या उस संबंध में उनका उपयोग करने के लिए आवश्यक हो। विद्यार्थियों से यह आशा की जाती है कि वे पेशियों के कार्य को भली प्रकार समझने के लिए उनके संलग्नों की जानकारी प्राप्त करें किंतु प्रत्येक पेशी के मूल और निवेशन के यथावत व्यौरों को जानना उनके लिए आवश्यक नहीं है। यह अपेक्षित नहीं है कि उन्हें हाथ, पैर, उनकी संघियों के अन्य व्यौरों की और खोपड़ी की छोटी अस्थियों के व्यौरों की जानकारी हो।

शरीर रचना विज्ञान की पाठ्य-चर्चा को निम्नलिखित शीर्षों में विभाजित किया जाना चाहिए :—

I. स्थूल शरीर रचना विज्ञान—निम्नलिखित खंडों में पढ़ाया जा सकता है —

(क) प्रदर्शनों सहित आरंभिक लेक्चर,

(ख) तंत्र संबंधी (सिस्टेमेटिक) शृंखला

अध्ययन के अन्तर्गत होना चाहिए डिडक्टिव लेक्चर, लेक्चर, प्रदर्शन, सतही और विकिरण संबंधी शरीर रचना विज्ञान, श्व विच्छेदन और विच्छेदित निर्देश का अध्ययन। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान तथा तथ्यों के पारस्परिक संबंध को, जीवन्त शरीर रचना में समाकलित कर दिया जाना चाहिए। उन भागों के अंग रेखांकन संबंधी व्यौरों पर बल दिया जाना चाहिए जो सामान्य व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण हैं।

(i) उर्ध्व शाखा, आंतरिक शाखा, सिर, ग्रीवा, वक्ष, उवर और श्रोणि (पेल्विस) का प्रवेशानुसार और एक तंत्र के पश्चात् दूसरे तंत्र का अध्ययन किया जाना चाहिए (विशिष्टतः विकास और उसकी विषमताओं, प्रादेशिक तंत्रिका वितरण, कृत्यशील समूहों या पेशियों-संघियों के संबंध में या अन्यथा-और अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान के प्रति विशेष निर्देश करते हुए)।

(ii) अन्तः स्रावी (एन्डोक्राइन) अंग—विकास और अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान के प्रति विशेष निर्देश किया जाए।

II. परिवर्धनजन्य शरीर (डेवलपमेंटल) रचना विज्ञान—सामान्य सिद्धांतों और परिवर्धन और वृद्धि के आनुवंशिक तथा पर्यावरणीय कारणों के प्रभाव पर लेक्चर दिए जाने चाहिए तथा चार्ट, माडेल और स्लाइड दिखाए जाने चाहिए।

III. तंत्रिका-शरीर रचना (न्यूरो एनाटामी)—मस्तिष्क और मेरुदण्ड तथा प्रमुख तंत्रिका पथ की स्थूल रचना। पारसरीय तंत्रिका, फ्रेनिकल तंत्रिका, उनके संबंध, पथ और वितरण।

स्वसंचालित तंत्रिका तंत्र — परिवर्धन और विषमताएं। अनुप्रयुक्त रचना।

अध्ययन के लिए, लेक्चर दिए जाने चाहिए, लेक्चर-प्रदर्शन, मस्तिष्क और कार्ड का विच्छेदन और नैदानिक पार-स्परिक संबंध, बताया जाना चाहिए।

टिप्पण :— शरीर क्रिया तंत्रिका तंत्र के अध्ययन से पूर्व प्रायोगिक अध्ययन किया जाना चाहिए । प्रारंभ में ही नैदानिक पाठ्यक्रम से सहसंबंध स्थापित करना वांछनीय है ।

IV. सूक्ष्म शरीर रचना विज्ञान (ऊतक विज्ञान) हिस्टोलोजी)—कोशिका, उपकला ऊतक, संयोजक ऊतक, पेशी ऊतक, तंत्रिका ऊतक की आधुनिक संकल्पनाएं ।

(अ) आरंभिक लेक्चर

(क) कोशिका संघटकों की आधुनिक संकल्पना और उनके कार्य—क्यों कोशिकाएं विभाजित होती हैं, कोशिका विभाजन उनके प्रकार और महत्व ।

(ख) आनुवंशिक व्यक्तित्व (जेनेटिक इन्डिविजुअलिटी)—

(i) प्राथमिक आनुवंशिकता—परिभाषा, स्वास्थ्य और रोग, जीव और उसके पर्यावरणों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के परिणाम, होम्योपैथी की दृष्टि से इस ज्ञान की उपयोगिता ।

(ii) मेन्डेल के सिद्धांत और उनका महत्व ।

(iii) अनुप्रयुक्त आनुवंशिकता ।

(आ) परिवर्धन संबंध शरीर रचना विज्ञान—15 लेक्चर

(इ) सामान्य शरीर रचना और सूक्ष्म शरीर रचना—15 लेक्चर

(ई) प्रादेशिक शरीर रचना :

(क) ऊर्ध्व शाखा—15 लेक्चर

(i) ढांचा, संधियों की स्थिति और कार्य,

(ii) पेशी समूह तंत्रिका जालिका,

(iii) धमनी प्रदाय, विष निकासी, तंत्रिका बाहिका बन्डल, लसवाहिका और लसिका पर्व, तंत्रिकाओं का अस्थियों से संबंध ।

(iv) संधियां—विशिष्टतः स्कंध एल्बो और कलाई संधियां, पेशियों, जो संचलन पैदा करती हैं, तंत्र क्षति के परिणाम ।

(v) अस्थियों और संधियों का विकिरण, अस्थिभवन, आयु अवधारण ।

(vi) अनुप्रयुक्त शरीर रचना ।

(vii) प्रमुख धमनियों, तंत्रिकाओं का तल चिह्नांकन ।

(ख) निम्नशाखा—15 लेक्चर

(i) ढांचा, संधियों की स्थिति और कार्य ।

(ii) पेशी समूह, कटि (तंत्रिका) जालिका ।

(iii) धमनी-प्रदाय, विष निकासी, तंत्रिका बाहिका बन्डल, लसवाहिका और लसिका पर्व ।

(iv) संधियां, विशिष्टतः कटि सेरूमि, मितम्ब, घुटने और टखने की संधियां, संचलन पैदा करने वाली पेशियों, तंत्र क्षति के परिणाम ।

(v) अस्थियों और संधियों का विकिरण, अस्थिभवन, आयु अवधारण ।

(vi) अनुप्रयुक्त शरीर रचना ।

(vii) प्रमुख धमनियों, तंत्रिकाओं का तल चिह्नांकन ।

(ग) वक्ष—15 लेक्चर

(i) वक्ष की पेशियों की संधियों का ढांचा—भित्ति—डायफ्राम, तंत्रिका वितरण—उदरीय और वक्ष श्वसन, आयु के साथ अंतर । स्तनगण्ड लसिका निकासी ।

(ii) प्लूरा और फेफड़े ।

(iii) थेमीडायस्टीनम, हृदय, हृदय-धमनी, बड़ी बाहिका, श्वास प्रणाल (ट्रेशिया) ओसोफेगस, लसिका पर्व, थाइमस की व्यवस्था और रचना ।

(iv) हृदय, महाधमनी, फेफड़ों, त्राकोग्राम का विकिरण ।

(v) अनुप्रयुक्त शरीर रचना ।

(vi) तल चिह्नांकन—प्लूरा, फेफड़े, हृदय-हृदय बाल्व, महाधमनी का बार्डर, आर्च, अनु० वेनाकेव, श्वास प्रणाल का द्विविभाजन ।

(घ) उदर और श्रेणि—25 लेक्चर

(i) उदरीय भित्ति-त्वचा और पेशियां तथा तंत्रिका वितरण, फौसिया, पेरिटोनम, रक्त बाहिकी, लसवाहिका, स्वचालित गण्डिका, जालिका ।

(ii) उदर, छोटी आंतें, उन्डुक, एपेन्डिक्स, बड़ी आंतें ।

(iii) ड्यूडेनम, अग्न्याशय (पेनक्रियाज), किडनी, गवीनी, सुपरा रीनल

(iv) जिगर और पित्ताशय

(v) श्रेणि, ढांचा और संधियां, श्रेणि पेशियां, पुरुष और स्त्री में बाह्य और आंतरिक जनेन्द्रिय कटितंत्रिक जालिका, बाहिकाएं, लसवाहिका, स्वचालित गंडिका, जालिका ।

(vi) उदर और श्रेणियों की रक्त बाहिका और तंत्रिका जालिका, प्रवेश द्वारा शिरा तंत्र ।

(vii) निर्दिष्ट पीड़ा की अनुप्रयुक्त रचना, प्रवेश द्वारा व्यवस्थित शाखामिलन, पुरुष और स्त्री में मूत्राशय का कैथराइजेशन ।

(viii) अंगों और रक्त बाहिकाओं का तल चिह्नांकन ।

(ङ) सिर और ग्रीवा—25 लेक्चर ।

(i) गिरोबल्क (स्काल्प)—तंत्रिका वितरण, बाहिकामय प्रदाय मध्य तानिका धमनी ।

- (ii) आनन—आनन अभिव्यक्ति की मुख्य पेशियां, समूह पेशियां, चर्बण पेशियां, स्वप्ना तंत्रिका वितरण और क्षतिपूर्क (रिपेयर) पेशियां, बाह्यकामय प्रदाय, मरम्मत शिरोबल्क और आनन झुरियों के सिद्धांत ।
- (iii) फलकें, नेत्र गोलक, अश्रु साधित, नेत्र गोलक की संचालक पेशी ।
- (iv) नासा केविटी, नासाप्रसनी, पट, कंकाई, पैरानैसल साइनस, युस्टेशियन ट्यूब, लसिकाभ समूह ।
- (v) मुख केविटी और फौरिंस ।
- (vi) स्वरयंत्र और फौरिंस रचना के स्वरयंत्र भाग (कोई ब्यारे नहीं), कार्य, तंत्रिका प्रषाय, लैरिंगो-स्कोपी रूप ।
- (vii) सिर और ग्रीवा की ग्रीव कशेरुका (सर्विकल बटिब्रा) ग्रंथियां ।
- (viii) ग्रीवा, उरः कर्णमूल (स्टनोमेस्टायड) ब्रेशियल प्लेक्सस, मुख्य धमनियों और शिराओं की रचना, लसिका पर्व (लिफ नोड) की स्ववृत्ति (डिस्पोजिशन), निकासी क्षेत्र, फेनिक तंत्रिका, थाइरायड ग्रन्थि और उसका रक्त प्रदाय, पराथायराइड, ट्रेशिया, सेसोफेंगस । सबमेन्डीबुलर और उपजिह्वा लाला (सेलिबरी) ग्रंथियां ।
- (ix) दन्त और डेन्टीटर
- (x) बाह्य, मध्य और आंतरिक कर्ण
- (xi) अनुप्रयुक्त रचना
- (xii) हल चिह्नानकन : कर्णपूर्व (पारोटिड) ग्रंथि, मध्य मस्तिष्क आवरण धमनी, थाइरायड ग्रंथि, सामान्य आन्तरिक और बाह्य कैरोटिड धमनियां ।

(अ) तंत्रिका रचना—10 लेक्चर

- (i) मस्तिष्क आवरण—कार्य
- (ii) प्रमस्तिष्क (सेरेब्रम)—स्थान निर्धारण क्षेत्र, बाह्यकामय प्रदाय (वास्कुलर सप्लाई) आधारी गंडिका बेमल गेंगलिओन, आंतरिक केपसूल ।
- (iii) अनुमस्तिष्क (सेरेबेलम) कार्य
- (iv) पान्स, मेड्यूलर मध्य मस्तिष्क, करोटि तंत्रिका (केनियल) अंगघात ।
- (v) (सेरेब्रो-स्पइनल) मस्तिष्क मेरुतरल—बनना, परिचालन, कार्य अवशोषण ।

(vi) करोटि तंत्रिका—मूल, क्रम (कम से कम रचनात्मक ब्यारों के साथ), वितरण क्षेत्र ।

(vii) सुषुम्ना (स्पाइनल) आवरण खण्ड, कशेरुका कालम से खण्ड का संबंध, मेरु तंत्रिका वितरण ।

(viii) अनुकम्पी और परा अनुकम्पी तंत्रिका तन्त्र, स्थिति, वितरण, कार्य ।

(ix) कटिबेध की अनुप्रयुक्त रचना, निषिष्ट (रेफर्ड) बर्दे, सुषुम्ना संवेदनाहरण (एनस्वेसिया), वधित आन्तर करोटि (इन्ट्राकेनियल) दाब ।

प्रयोगात्मक

एक मास/शैक्षणिक भासों में संपूर्ण मानव शरीर को विच्छेदन (डिसेक्शन) के लिए 160 घंटे दिए जाएंगे ।

1. प्रत्येक विच्छेदन पूर्ण हो जाने पर वह डिमास्ट्रेटर को दिखाया जाएगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुज्ञा लेना अनिवार्य है ।

2. अंग आबंटन से पूर्व प्रत्येक विद्यार्थी को डिमास्ट्रेटर द्वारा लिए गए अंग की अस्थियों की बावत मौखिक परीक्षण उत्तीर्ण करना होगा ।

3. प्रत्येक मान्यताप्राप्त महाविद्यालय द्वारा अनुसरण किए जाने वाले मार्गदर्शन के अनुसार प्रायोगिक शरीर रचना की कक्षा के लिए मुद्रित फार्म होने चाहिए ।

विच्छेदन के लिए मार्गदर्शन

नाम :

सत्र :

वर्ष :

रोल नं०

मस्तिष्क नेत्र गोलक

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमास्ट्रेटर को दिखाया जाएगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुज्ञा लेना अनिवार्य है ।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूर्ण होने की तारीख :

टिप्पणियां :

डिमास्ट्रेटर

आचार्य,

शरीर रचना विज्ञान

मस्तिष्क मेज गोलक

मद	प्रारंभ की गई मद	अंक		परीक्षक
		विच्छेदन	मौखिक	
1	2	3	4	5
1.	मस्तिष्क और कुंड की कला (मैम्ब्रेन)			
2.	मस्तिष्क की उपरिस्थ (सुपरफिशल) रक्त वाहिकाएं			
3.	उपरिस्थ शरीर रचना पार्श्विक (लेटरल) तल चिकित्सा तल मस्तिष्क आधार			
4.	प्रमस्तिष्क (सैरेब्रम)—			
	(क) विवर (फिशर) सुल्सी और गाइनी लोब मोटर और संवेदी क्षेत्र			
	(ख) (कार्पस कालोसम) महा संयोजिका पार्श्विक निलय (लेट्रल बेन्ट्रिकल)			
	(ग) टेला कार्डाई और तृतीय निलय			
	(घ) थैलामस और कार्पस स्टर्नैटम			
	(ङ) परियोजी, संगम और प्रक्षेपक तन्तु			
	(च) रिनानसेफेलान			
5.	मध्य मस्तिष्क—			
	प्रमस्तिष्क वृत्तक (पेंडकल) पिंड चतुष्टि (क्वाड्रीजेमीना) वृष्टि पथ			
6.	मध्य मस्तिष्क—			
	(क) पोन और चौथी निलय (बेन्ट्रिकल)			
	(ख) सुषुम्मा शीर्ष			
	(ग) अमुमस्तिष्क (सैरिबैलम)			
7.	उतार और चढ़ाव पथ			
8.	कपाल रेखांकन (टोपोग्राफी)			
		योग	_____	
		प्रतिशत	_____	
9.	बाह्य (ट्यूबिक) कंचुक—			
	स्कलीरा			
	कार्मिया			
	कोराइड			
10.	आइरिस, सिलियरी बाड़ी—सिलियरी तंतुिका और वाहिकाएं			
11.	रीफरेक्टिव माध्य—			
	नेत्रोद तारा			
	लेंस और उसके कैपसूल			
	विट्रियस ह्यूमर रेटिना			
		योग	_____	
		प्रतिशत	_____	

1

2

3

4

5

सिर और ग्रीवा

नाम :

सत्र :

रोल नं० :

वर्ष :

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमास्ट्रैटर को दिखाया जायेगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुज्ञा लेना अनिवार्य है ।

डिमास्ट्रैटर

आचार्य,
शरीर रचना विज्ञान

1. शिरोबल्क और टैम्पोरल प्रदेश का उपरिस्थ विच्छेदन
2. मस्तिष्क निकालना—
 - (i) कपाल तन्त्रिका की मूल
 - (ii) कपाल-आधार
 - (क) अग्र (फोसा) खात
 - (ख) मध्य खात
 - (ग) पश्च खात
3. पश्च प्रदेश—
 - (i) ग्रीवा उपरिस्थ विच्छेदन
 - (ii) उप पश्च त्रिकोण
4. पीठ—

पेशियों की पहचान
5. मेरुदण्ड मज्जा, मेन्ब्रेन और स्नायु इलेवा
6. मुख और अश्रु साधिल
7. आबिट
8. ग्रीवा त्रिकोण अग्र
9. ग्रीवा त्रिकोण पश्च—
 - (i) कैसेटिड त्रिकोण
 - (ii) पेशीय त्रिकोण
 - (iii) ग्रीवा मध्य रेखा
 - (iv) हाइजेस्टिक त्रिकोण
 - (v) सक्त्रमेन्डिबुलर प्रदेश
10. ग्रीवा गंभीर विच्छेदन
 - (i) वाहिकाएं
 - (ii) तन्त्रिका
 - (iii) फेरक्स की पार्श्विक भित्ति
 - (iv) अनुकम्पी ट्रंक का ग्रेव (सर्विकल) भाग
11. कर्णपूर्व (पैरोटिड) प्रदेश

1	2	3	4	5
12. इन्फा कपाल प्रवेश (i) आष्टिक गेंगलिआन और कर्णपट : तंत्रिका (ii) मस्तिष्क आवरण-साइनस				
13. मेण्डिबुलर संधि				
14. प्रिवेन्टेबल प्रदेश				
15. क्रानिक वर्टेब्रल और वर्टेब्रल संधि				
16. मुख और फॉरिक्स				
17. नासा और उपांग साइनस				
18. स्फेनों पैलेटाइन प्रवेश— (i) पैटरीगो—पैलेटाइन फोसा (ii) पैटरीगो—मैक्सिलेरी विदर (iii) मैक्सिलेरी तन्त्रिका और स्फेनो पैलेटाइन गेंगलिआन				
19. लैरिक्स				
20. जीह्वा				
21. श्रवण साधन (i) बाह्य कर्ण (ii) मध्य कर्ण, मास्टराइड एण्ड्रम (iii) आन्तरिक कर्ण				
		योग	—	
		प्रतिशत	—	
नाम :				
सत्र :		रोल नं० :		
वर्ष :				
		वक्ष		
पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमांस्ट्रेटर को दिखा दिया जाये और अगली मध लेने से पूर्व उसकी अनु-मति प्राप्त करना आवश्यक है ।				
अंग वितरण की तारीख :				
अंग पूर्ण होने की तारीख :				
टिप्पणियां :				
खासार्थ, क्षरीर रचना विज्ञान				
डिमांस्ट्रेटर				
मध	प्रारंभ की गई मध	अंक		
		विच्छेदन	मीखिक	परीक्षक
1. अथ वक्षीय मिति				
2. इन्टरकोस्टल का विच्छेद				
3. स्थान और अन्तर्वस्तु				

1	2	3	4	5
---	---	---	---	---

4. अग्र संधि—

(i) (उरोस्थि जलुक स्तनों क्लेविकुलर)

(ii) कान्द्रोस्टर्नल

(iii) इन्द्राकेन्द्रल संधि

3. फेफड़ों और फुसफुस प्लेक्सस की प्लूरा रुट

4. अग्र मीडियास्टिनम औ सुपीरियर मीडिस्टिनम

5. मध्य मीडियास्टिनम तथा पैरीकार्डियम

6. प्रेनिक और वेगस तंत्रिका हृदय प्लेक्सस

7. हृदय

8. पश्च मीडियास्टिम और उसकी अन्तर्वस्तु

9. अनुकम्पी वक्ष भाग—उसकी शाखाएं और वितरण

10. पश्च वक्ष भित्ति-इन्टरकोस्टल वाहिकाएं और तंत्रिका

11. डायफ्रेग्मम

12. कशेरुका (वर्टीब्रल) --कास्टो-कशेरुका संधियां

13. तल रचना

योग _____
 प्रतिपाल _____
 उबर _____

नाम :

सत्र :

वर्ष :

रोल नं०

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमांस्ट्रेटर को दिखाया जायेगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुज्ञा लेना अनिवार्य है।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूर्ण होने की तारीख :

टिप्पणियां :

डिमांस्ट्रेटर

आचार्य,
 शरीर की रचना

1. मूलाधार

2. बाह्य जननांग

पुरुष

स्त्री

3. पश्च उदरीय भित्ति

सुपरभैटिक कार्ड

राउण्ड लिनामेंट

4. उदरीय कवचटी

आशय की स्थिति और संबंध

1	2	3	4	5
5.	पैरीटोनियम---			
	मूहत्तर सैक			
	लघुत्तर सैक			
6.	मासेन्टेरिक वाहिकाएं			
7.	पेट, काकलायक एक्सिस और आन्त्र शिरा			
8.	छोटी आंतें (जेजुनम और इलियम)			
9.	बड़ी आंतें एलियाक कोलन तक			
10.	ड्यूडेनम, अग्न्याशय और तिल्ली			
11.	जिगर			
12.	वृक्क, सुपरारेनल ग्रन्थि और उदरीय भ्रिस्त			
13.	डायफ्रेगम			
14.	अनुकम्पी तन्त्र, कोविलियारक और महावागनो प्लेक्सस			
15.	ओरेटर, इन्फा वेनोकेवा, सामान्य आन्तरिक और बाह्य इलियाक वाहिकाएं			
16.	उदर का लसिका तन्त्र			
17.	तंत्रिका का लम्बर प्लेक्सस और लम्बर वाहिकाएं			
18.	श्रोणिका (पेल्विस)--विस्कोरा की स्थिति और संबंध			
19.	हाइपोभैस्ट्रिक वाहिकाएं और उनकी शाखाएं			
20.	पेल्विक फेसिया और पेल्विक पेशियां-- गवीनी (यूरेटर) का श्रोणिका (पेल्विस) भाग			
21.	अवग्रह बृहवथान्त्र (सिग्माछूड कोलन), रेक्टम, एनल केनल			
22.	मूत्राशय, प्रास्ट्रेट और मूत्रमार्ग			
23.	डिव ग्रन्थि, गर्भाशय, गर्भाशय-ट्यूब, योनि			
24.	श्रोणि तंत्रिका			
25.	संधियां--			
	लुम्बोत्रिक (सेकल)			
	सेक्रो इलियाक			
	सैक्रा क्राकीजील			
	सिफासिस प्यूबिस			

योग

प्रतिशत

सुपीरियर शाखा

नाम :

सत्र :

वर्ष :

रोल नं०

1

2

3

4

5

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमास्ट्रेटर को दिखाया जाना चाहिये और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुशा लेना अनिवार्य है।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूर्ति की तारीख :

टिप्पणियां

आचार्य,
शरीर रचना विज्ञान

1. पीठ का उपरिस्थ विच्छेदन
2. पैक्टोरल प्रदेश और एकजीलेरी फोसा
3. स्कंध और स्कैपुलर प्रदेश
4. क्यूबीटल फोसा
5. बाहु-अग्र
6. बाहु-पश्य
7. अग्रबाहु अग्र
8. हथेली--उपरिस्थ विच्छेदन
9. हथेली-गभीर विच्छेदन
10. अग्रबाहु पश्य
11. हस्त पृष्ठ
12. स्कंध संधि
13. एल्बो और रेडियो अल्नर संधि
14. कलाई संधि और हस्थ संधियां

योग _____

प्रतिशत _____

निम्न शाखा

नाम :

सत्र :

वर्ष :

रोल नं० :

पूर्ण होने जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमास्ट्रेटर को दिखाया जायेगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुशा लेना अनिवार्य है।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूर्ति की तारीख :

टिप्पणियां :

डिमास्ट्रेटर

आचार्य,
शरीर रचना विज्ञान

1. सोल का उपरिस्थ विच्छेदन
2. त्रिस्तंभ प्रदेश
3. जाम्बुफुठ (पापलीटील) फोसा

- | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
|-----|--|---|---|---|
| 4. | जानुपुच्छ (बाई) | | | |
| 5. | जानु के संपूर्ण अग्रभाग का उपरिस्थ विच्छेदन—
क्यूटेनियस तंत्रिका
क्यूटेनियस बाहिकाए
गंभीर फेसार्ई | | | |
| 6. | गंभीर विच्छेदन
(क) फेमोरल शीथ और फेमोरल हृत्निया
(ख) एडक्टर प्रदेश
(ग) एडक्टर केनाल
(घ) क्वार्ड्रीसिप्स पेसी | | | |
| 7. | अग्र टिबियोफाइबुलर प्रदेश, पद वृष्ठ | | | |
| 8. | पेरोनियल प्रदेश | | | |
| 9. | पश्च टिबियोफाइबुलर प्रदेश, उपरिस्थ और मध्य कक्ष | | | |
| 10. | सोल का गंभीर विच्छेदन | | | |
| 11. | नितम्ब संधि | | | |
| 12. | घुटना संधि | | | |
| 13. | टिबियोफाइबुलर संधि | | | |
| 14. | चाप सहित पद संधियां | | | |

योग _____

प्रतिशत _____

शरीर रचना विज्ञान के लिखित प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किये जायेंगे:—

प्रश्नपत्र I—उपरिमाखा, सिर, मुख, प्राची और मस्तिष्क

प्रश्नपत्र II—धोरेक्स, उदर, श्रोणि और निम्न माखा

शरीर क्रिया विज्ञान

शरीर क्रिया विज्ञान के शिक्षण का प्रयोजन विद्यार्थी को सामान्य मानव के विभिन्न अंगों और तंतुओं के कार्यों प्रक्रियाओं और पारस्परिक संबंधों को बताना है जिससे कि रोगग्रस्त हो जाने पर विद्यार्थी रोग के कारण होने वाली विकृतियों को सामान्य मानवों के निर्देश से समझ कर रोग का निदान और उपचार कर सके। होम्योपैथी की दृष्टि में मानव-शरीर, जीवन और मस्तिष्क का एक समाकलित रूप है, यद्यपि जोरक में रासायनिक-भौतिक क्रियाएं भी होती हैं तथापि वह उनसे परे है। जब तक कि मानव में जीवनी-शक्ति का एमीनीकरण नहीं होता, किसी रोग के लक्षण उत्पन्न नहीं हो सकते। उक्त विज्ञान के शिक्षण का उद्देश्य, महत्वपूर्ण घटनाओं और स्वस्थ रहते हुए उनमें निहित रासायनिक-भौतिक क्रियाओं, का वर्णन है।

विभिन्न पद्धतियों का शिक्षण विभिन्न विभागों के बीच निकट सहयोग से संपन्न किया जाना चाहिए। शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान के विभागों का संयुक्त पाठ्यक्रम होना चाहिए, जिससे कि इन विषयों की अध्यापन में अधिकतम समन्वय हो सके।

कालिक रूप में गोष्ठियों की जानी चाहिए और शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान तथा जीव रसायन के अध्यापक, विद्यार्थियों को यह समझाएं कि समाकलित कार्यक्रम अधिक उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए स्थूल और सूक्ष्म रचनाओं का ज्ञान शरीर रचना विज्ञानी स्पष्ट करेगा और क्यापचयी (मेटाबोलिक) प्रक्रिया में उपकोशकीय कणों की भूमिका तथा उनके निर्धारण का ढंग, जीव रसायनज्ञ स्पष्ट कर सकता है और अन्त में शरीर क्रिया विज्ञानी, विनिर्दिष्ट कार्यों में योगदान करने वाले विशिष्ट जीव-

रासायनिक और रचनात्मक संघटकों का समन्वय स्पष्ट करते हुए, इकाई के रूप में कोशिकाओं के व्यवहार को समाकलित रीति में समझा सकता है। विद्यार्थियों को गोष्ठियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है और इन्हीं प्रयोगात्मक विषय समाकलित रीति में प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

संज्ञात्मक

1. प्रस्तावना :

जीवन की मूल घटनाएं। कोशिका और उसके विभेद। शरीर के ऊतक और अंग।

2. जैव रासायनिक सिद्धान्त :

प्रोटोप्लाज्म के प्राथमिक संघटक / प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट्स द्रव और त्रयों का रसायन, इन्जाइम।

3. जैव भौतिक सिद्धान्त :

सान्द्रण की इकाई—विलयों, आयनों, विद्युत अपघट्य (इलेक्ट्रोलेट) और विद्युत गैर-अपघट्य निस्यन्दन (फिल्टरेशन, विसरण अल्टा निस्यन्दन, डायलीसिस, तल तनाव, अवशोषण, जलानुवर्तन (हायड्रोड्राप्सी), डोमन संतुलन, कोलायड, अम्ल, क्षार सान्द्रण एच।

4. तांत्रिक पेशी क्रिया :

तांत्रिक में उत्तेजन प्रक्रिया और उत्तेजित होने पर तांत्रिका द्वारा प्रकट परिवर्तनों का प्रसार। तांत्रिका में ध्रुवण घटना। इलेक्ट्रोप्लेक्स। विघटन की प्रतिक्रिया। तांत्रिक-पेशी। पारेषण। शरीर में विभिन्न प्रकार की पेशियां। उत्तेजना मिलने पर परिवर्तन और संकुचन प्रक्रिया। पेशीय श्रम की क्रिया। राइसर गुणावगुण।

5. रक्त रचना :

रक्त की मात्रा का विनियमन और उसका अवधारण, रक्त का विनिर्दिष्ट घनत्व। रक्त की प्रतिक्रिया और उसका विनियमन। रक्त प्लाज्मा की रचना और कार्य। प्लाज्मा-प्रोटीन और उनके कार्य। अस्थि मज्जा, मूल रचना, वसा, रक्त के निमित्त तत्व के कार्य, हीमोग्लोबिन-रसायन और उसके योगिक तथा व्युत्पत्ति, रक्त स्कन्धन (कोध्रागुलेशन) हीमोलीसिस, रक्त समूह।

6. हृदवाहिका तन्त्र (कार्डियो वाकुलर) :

हृदयपेशी की रचना और गुण, हृदय साइकिल, वाल्वों की क्रिया, हृदय ध्वनि एपेक्स बीट, हृदय और हृदय (धमनी) परिसंचरण। विद्युत कार्डियोग्राम, हृदय-उत्पादन। हृदय आवेग का मूल और प्रसार। हृदय तांत्रिका विनियमन, हृदय रीफ्लेक्स रक्त पथ और परिसंचरण, धमनियों, कोशिकाओं और शिशुओं की रचना, मस्तिष्क की विचित्रताएं, फुस-

फुसी, हेपटिक, पोर्टल और रीमल परिसंचरण। पूर्ण परिसंचरण का समय, रक्त बहाव का वेग। नाड़ी, धमनी और शिशु, रक्त वाहिका, तांत्रिकाएं वितरण और परिसंचरण नियंत्रण। रक्त चाप और उसका विनियमन। कोशिका परिसंचरण का नियंत्रण।

7. रेटिक्यूल एन्डोथीलियल तन्त्र और लसीका (लिम्फ) :

उक्त तन्त्र (अं० १०० तन्त्र) पित्ती लसीका ग्रन्थियां, कोशिका द्रव और लसीका उडेमा।

8. श्वसन-तंत्र :

श्वसन अंगों की रचना और सूक्ष्म संरचना, श्वसन संचलन की क्रियात्मक बनावट, स्पाइरोमीटरी, श्वसन रसायन निवर्धित, श्वसित वायुकोष की वायु की रचना। श्वसन भागफल, आधारी चयापचय (मेटाबोलिज्म) रक्त में वायु और उससे तना। रक्त में O_2 और सी O_2 का परिग्रहण। आन्तरिक और बाह्य श्वसन की क्रियाविधि। श्वसन का नियंत्रण। चेनीज, स्टोक्स श्वसन। अवशसन, कण्ट श्वास, अर्चि, साइनोसिस, श्वासावरोध, उष्ण और निम्न वायुमण्डलीय दाब का प्रभाव, वशानुकूलन, पर्वतीय रुग्णता, फैसन रोग, कृत्रिम श्वसन, परिसंचरण पर श्वसन का प्रभाव।

9. पाचन तन्त्र :

चयापचय पोषण और आहार विज्ञान, सामान्य आहार, विटामिन, दूध और उसके गुण। पाचन अंग और उनकी रचना तथा कार्य, विभिन्न पाचक रस, क्रियाविधि और कार्य। जिगर, एलीमन्टरी केनाल का संचलन। खाद्य पदार्थ का विक्षेप (डिफेक्शन), पाचन और अवशोषण तथा उसका चयापचय। प्रोटीन का जैविक मूल्य। रक्त शर्करा और उसका विनियमन। खनिज चयापचय और भुधा के दौरान चयापचय। व्यक्ति का पोषण।

10. ज्ञानेन्द्रियां : साधारण लक्षण, वर्गीकरण, संवेदना, संवेदी-अंग और संवेदी-मार्ग।

(क) दृष्टि — नेत्र की रचना, अपवर्तन की भूलें और उनका सुधार। नेत्र गोलक के पटलों के समंजन (एकीमोडेशन), रचना और कार्यों की क्रियाविधि, नेत्र प्रतिवर्तन, दृष्टिक्षेत्र दृष्टिपथ। रंग दृष्टि, रंग अंधता, वाइनाकुलर दृष्टि।

(ख) श्रवण शक्ति : श्रवण साधित की रचना। ध्वनि तरंग चालन। हेल्महोल्ट का सिद्धांत। कोचलियर अनुपुति। वेस्टीबुलर साधित।

(ग) स्वाध और सुगंध : ग्रहण अंगों की रचना और कार्य -

(घ) त्वक् (क्यूटेनस) और गंभीर संवेदना—रचना और कार्य और ग्रहण अंग।

11- स्वर और वाक् ; लैरिक्स की रचना, स्वर और वाक् की उत्पत्ति की क्रियाविधि।

12. अंतः स्थायी (एन्डोक्राइन) तंत्र :

13. प्रजनन : प्राथमिक और गौड़ लिंग, लिंग गुण । स्तन ग्रन्थि और प्रोस्ट्रैट । प्लेसेन्टा और उसके कार्य । गर्भ-श्वसन और परिसंचलन ।

14. उत्सर्गी तंत्र : किडनी-मूत्र बनना और उसकी रासायनिक रचना । किडनी की रचना और कार्य । मूत्र के संघटक, सामान्य और असाधारण । मूत्र की मात्रा । मूत्रण की क्रिया [बृक्क, (रीनल)] दक्षता परीक्षण ।

15. त्वचा तन्त्र : त्वचा की रचना और कार्य, पसीने और सेबम का बनना, स्त्राव, संघटन । शरीर तापमान और उसका विनियमन ।

16. तंत्रिका तंत्र : तंत्रिका तंत्र के विकास का इतिहास । सुषुम्ना (स्पाइनल कॉर्ड) और प्रतिवर्त तथा उसके गुण । प्रमस्तिष्क मेरु तरल । सिनेप्टिक संघरण । उत्तेजित और संवेदी स्थितियों पर नियंत्रण । दैहिक संवेदी ग्राहक और पथ टेलामस । परिमस्तिष्क कार्टेक्स मोटर और संबद्ध क्षत्र पिरामिडल और एक्स्ट्रा पिरामिडल पथ, आधारीक गैंगलिया । पाश्चर और लोकोमोशन । संवेदी और मोटर । पुरुष में मोटर बिन्दु, जालीय रचना । ई ई जी निद्रा स्वचालित तंत्रिका तंत्र । हाइपोथेलामस और लिम्बिक तंत्र । कंडीशनल प्रतिवर्त, अनुमस्तिष्क (सेरीबेलम)

शरीर क्रिया (प्रयोगात्मक)

1. मूत्र तलछट के सामान्य और असामान्य संघटकों की परीक्षा । शर्करा, यूरिया, एस्क्यूमन, एसीटोन और पिप्त के लिए मात्रात्मक (क्वांटिटेटिव) परीक्षा ।

2. लाल रक्त कणिका (आर० बी० सी०) और श्वेत रक्त कणिका, कुल गणना (काउण्ट) करना और रक्त धब्बा-फिल्म और श्वेतरक्त कण स्कंदन का विभेदक गणना तथा रक्तस्त्राव समय, हीमोलोबीन आकलन । लाल रक्त कणों की भ्रूणरता और तलछट दर ।

3. सामान्य शरीर क्रिया उपकरण और साधनों की पहचान और प्रयोग विधि ।

4. ऊतकों (टिश्यू) और अंगों के ऊतक विज्ञानी निदर्शों (स्पेसिमें) की पहचान, अर्थात्, जिगर, किडनी, फेफड़े, थाइराइड, अग्न्याशय पनक्रियाज, तिल्ली, ट्रेशिया, ससोफेगस, आमाशय, जीहृवा, आंतें, बड़ी आंतें, टेस्टी, ओवरी, अस्थिल, दसा ऊतक शुष्मना, अधिवृक्क ग्रंथि, पैरोटिड, ग्रन्थि, अग्र पीयूषिका (पिट्यूटेरी), स्लाइबरी ग्रंथी, त्वचा, पैराथाइराइड ग्रंथि, (सेरीबेलम) प्रमस्तिष्क कार्टेक्स हृद-पेशी । शरीर क्रिया विज्ञान के लिखित प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में बांटे जाएंगे अर्थात् :—

प्रश्नपत्र—1 जैव भौतिकी के तत्व, ऊतक विज्ञान, रक्त और लसिका, हृदवाहिका (कार्डियोवास्कुलर) तंत्र, रेटीक्यूरो एण्डोथेलियल तन्त्र, तिल्ली, श्वसन, मूत्र उत्सर्जन, त्वचा, शरीर के तापमान का विनियमन संवेदी अंग ।

प्रश्नपत्र - 2 अंतः स्त्रावी अंग, तंत्रिका तंत्र, तंत्रिका पेशी, शरीर क्रिया । पाचन तंत्र और श्वसापचय प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और द्रव एनजाइम का जैव-रसायन । पोषण ।

प्रयोगात्मक परीक्षा

पूर्ण अंक 100

अंक

1. सामान्य और असामान्य मूत्र (मात्रात्मक) के भौतिक और रसायनिक संघटकों की परीक्षा 20
2. रक्त (आर० बी० सी० और डब्ल्यू बी० सी०) की कुल सेल गणना या परिसरीय (परीफरल) रक्त के विभेदक (डिफरेंशियल) गणना या होमोग्लोबीन के प्रतिशत के आकलन की प्रगणना । 15
3. उपकरणों और साधनों के बारे में मौखिक परीक्षा 16
4. 2 ऊतक विज्ञानी स्लाइडों की पहचान 10
5. प्रयोगिक शरीर क्रिया विज्ञान 15
6. प्रयोगशाला नोटबुक 10
7. प्रयोगों के बारे में मौखिक परीक्षा 15

मनोविज्ञान

सामान्य मनोविज्ञान की प्रस्तावना

- (क) विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा और अन्य विज्ञानों से उसका अंतर
- (ख) मस्तिष्क की संकल्पना
- (ग) मेसमार और उसका सिद्धांत—चेतनता की हिप-नोटिज्म रचना ।
- (घ) फ्रायड और उसका सिद्धांत—अचेतन की गति-शीलता कामलिप्ता का विकास
- (ङ०) मनोविज्ञान की अन्य समकालीन विचारधाराएं
- (च) स्वस्थ और रुग्ण होने पर मस्तिष्क और शरीर के बीच संबंध
- (छ) प्रतिशत । कल्पना । आईडिएशन बुद्धि । स्मृति
- (ज) बोध, कोनेशन, अनुभव, सहजवृत्ति, व्यवहार ।

होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका

होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका की रचना अन्य मेटीरिया मेडिकाओं की रचना से भिन्न है । होम्योपैथी का विचार है कि मानव-शरीर के पृथक-पृथक अंगों या तंत्रों पर अथवा पशु शरीर पर या उसके भिन्न-भिन्न हिस्सों पर औषधि क्रिया का अध्ययन, ऐसी क्रिया का जीवन प्रक्रिया पर प्रभाव के एक पक्ष का अध्ययन मात्र है । इसमें हम औषधि की क्रिया का समग्र रूप में मूल्यांकन नहीं कर पाते हैं । और परिणामतः वह रूप हमारे अध्ययन से छूट जाता है ।

2. औषधि क्रिया का आवश्यक और संपूर्ण ज्ञान तभी हो सकता है जब स्वस्थ व्यक्ति पर मात्रात्मक भिनाप्टिक औषधि का प्रयोग किया जाए। इसी पद्धति से हम व्यक्ति के सम्पूर्ण मन और शरीर से संबंधित बिखरे हुए आंकड़ों को समझ सकते हैं और परिणामतः ऐसे समग्र मानव पर ही औषधि ज्ञान का प्रयोग किया जाना है।

3. होम्योपैथी मेंटीरिया मेडिका में ऐसी औषधि से उत्पन्न लक्षणों का कार्यप्रदर्शी (शिमेटिक) व्यवस्थाक्रम वर्णित होता है उसमें उनके निर्वहन या अंतरण-संबंध के बारे में कोई सिद्धांत या स्पष्टीकरण नहीं दिया जाता है। प्रत्येक औषधि का संश्लेषणात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए और इसी के आधार पर होम्योपैथी का विद्यार्थी ऐसी औषधियों का पृथक-पृथक और मनिप्टि रूप में अध्ययन करने और उपयुक्त नुस्खा लिखने में सफल हो सकेगा।

4. सर्वप्रथम, आम तौर से होने वाले रोगों पर अति-सामान्य औषधियों और पाथीनेस्टों की चर्चा की जानी चाहिए जिससे कि विद्यार्थी नैदानिक (क्लीनिकल) कक्षा में या आउटडोर ड्यूटी पर ऐसी औषधियों के प्रयोग से भली प्रकार परिचित हो जाएं। उनकी विस्तृत और गंभीरता पूर्वक व्याख्या की जानी चाहिए और इस संदर्भ में, विद्यार्थियों को ऐसी औषधियों का तुलनात्मक और पारस्परिक संबंध भी स्पष्ट किया जाना चाहिए। विद्यार्थी को औषधियों के प्रभाव क्षेत्र और सामूहिक संबंधों से पूर्णतः परिचित कराया जाना चाहिए।

कम सामान्य और असाधारण औषधियों की मात्रा की रूपरेखा बताकर, उनके केवल विशिष्ट गुणों और लक्षणों के स्पष्टीकरण पर ही जोर दिया जाना चाहिए। तत्पश्चात् असाधारण औषधियों का अध्ययन कराया जाना चाहिए।

5. ट्यूटोरियल अवश्य होने चाहिए जिससे कि एक छोटी संख्या में विद्यार्थी, अध्यापक के निकट संपर्क में आ सकें और रोगी के उपचार के संबंध में मेंटीरिया मेडिका के प्रयोग का अध्ययन कर सकें और उसे समझ सकें।

6. चिकित्साशास्त्र पढ़ते समय विद्यार्थी का ध्यान मेंटीरिया मेडिका की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए जिससे कि रोग लक्षणों को देखते ही संबंधित औषधि की पूर्वस्य से औषधि निर्दिष्ट की जा सके। विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे रोगों, मेंटीरिया मेडिका के व्यापक स्रोतों का उपयोग करें और विशिष्ट रोगों के लिए कुछ-औषधियों मात्र को रट कर अपने ज्ञान को सीमित न करें। हेनीमैन के इस दृष्टिकोण से विद्यार्थी न केवल प्रकट होने वाले रोग लक्षणों को ही उचित रूप में समझकर रूग्ण अवस्था में उनके रोगहर मूल्य को जान सकेगा अपितु औपचारिक परीक्षा संबंधी उसका बोझ भी कम हो जाएगा। अन्यथा वर्तमान रूग्ण तो रोगों के प्रति एलोपैथिक दृष्टिकोण की ओर झुका हुआ है, जो आर्गेनन के सिद्धांतों के प्रतिकूल है।

मेंटीरिया मेडिका का प्रयोग, आउटडोर और अस्पतालों के बाड़ों में मौजूद रोगियों के संदर्भ में समझाया जाना चाहिए।

तुलनात्मक मेंटीरिया मेडिका और चिकित्साशास्त्र पर लेक्चरों और ट्यूटोरियलों को यथासाध्य विभिन्न विभागों में नैदानिक आयुर्विज्ञान पर होने वाले लेक्चरों के साथ, संबद्ध दिया जाना चाहिए।

7. औषधियों के बारे में शिक्षण के लिए महाविद्यालय में हर्बेरियम शीटें और अन्य निदर्श विद्यार्थियों को प्रदर्शित किए जाने चाहिए। लेक्चरों को आकर्षक बनाया जाना चाहिए और पौधों तथा अन्य सामग्री के स्लाइड दर्शाते करके संबंधित पक्ष को स्पष्ट किया जाना चाहिए।

8. (अ) प्रारंभिक लेक्चर : होम्योपैथी मेंटीरिया मेडिका के शिक्षण में निम्नलिखित विषयों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए, अर्थात् :—

(क) होम्योपैथी मेंटीरिया मेडिका का स्वरूप और प्रविषय

(ख) होम्योपैथी मेंटीरिया मेडिका के स्रोत

(ग) मेंटीरिया मेडिका के अध्ययन के अनेक ढंग

(घ) औषधियों का अध्ययन निम्नलिखित शीषों के अधीन किया जाना चाहिए, अर्थात् :—

(1) सामान्य नाम, प्रकृतिक क्रम, प्राकृतिक आवास, प्रयुक्त भाग, तैयारी

(2) औषधि पूर्वस्य के स्रोत

(3) विशिष्ट लक्षणों और वृत्तियों पर जोर देते हुए औषधि की लाक्षणिकी (सिमटोमैटोलाजी)

(4) औषधियों का तुलनात्मक अध्ययन

(5) सवृण, विरोधी, प्रतिकारी और सुसंगत औषधियां

(6) उपचारार्थ प्रयोग (अनुप्रयुक्त मेंटीरिया मेडिका)

(इ) शुश्रू की बायोकेमिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार 12 टिश्यू दवाओं का अध्ययन।

परिशिष्ट 1

बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा के लिए मेंटीरिया मेडिका के पाठ्य विवरण में सम्मिलित औषधियों की सूची

- | | |
|-------------------------|------------------------|
| 1. एन्नोटैनम | 2. एकोनाइट नैपिलस |
| 3. एसक्यूलस हिप | 4. इथूजा सिनापियम |
| 5. एलियम सेबा | 6. एलोसोकोइडाइना |
| 7. एमोनियम कार्ब | 8. एण्टीमोनियम क्रूड |
| 9. एण्टीमोनियम टाट्रिकम | 10. एपिस मेसिकिक |
| 11. अर्जेंटम मेटालिकम | 12. अर्जेंटम माइट्रिकम |

13. आर्निक। माण्ट	14. आर्सेनिकम एल्बम	7. एमोनियम म्यूरिएटिकम	8. एनाकाडियम आरिएण्टे- लिस
15. आरम ट्रि	16. आरम मेटालिकम	9. एपोसाइनम कैन	10. आर्सेनिकम आयोड
17. बैपटीशिया टिन	18. बेराइट कार्ब	11. बिस्मथ	12. ब्रोमियम
19. बेलाडोना	20. बार्बरिस बलर्गरिस	13. बोविस्टा	14. कैकटस ग्रैण्डी
21. बोरेक्स	22. कोरेक्स	15. कैलकेरिया आर्स	16. कैम्फर
23. कैलकेरिया कार्ब	24. कैलेन्डुला	17. कैल्थरिस	18. कैलीडोनियम मेजस
25. कार्बोवेज	26. कास्टिकम	19. कोनियम मैकुलैटम	20. डिजीटैलिस पर
27. कैमोमिला	28. सिना	21. फेरम मेट	22. कैली ब्रोम
29. सिकोना आफ	30. कल्थिकम औटम	23. फियोजोटम	24. नैट्रम कार्ब
31. कलोसिन्थ,	32. ड्रोसेर	25. नक्स मस्केटा	26. ओपियम
33. डल्कामारा	34. यूफेशिया	27. पैट्रोलियम	28. फासफोरस
35. जैससीमियम	36. प्रेफाइज	29. फाइटोलैकका	30. प्लाटिना मेट
37. हीपर सल्फर	38. हैलीबोरस	31. सीपिया	
39. ह्योसियामस	40. इनेशिया		
41. इपोकाक	43. कैलीबाईन्ड्रोम		
43. कैलीकार्ब	44. कैकेसिस		
45. लिडम पाल	46. लाइकापोडियम		
47. मर्क्यूरियस कर	48. मर्क्यूरियस सल		
49. नाइट्रिक ऐसिड	50. नक्स बोमिका		
51. पाडोफाइलम	52. पल्सेटिला		
53. रसटाक्स	54. सिकेलीकर		
55. स्वाजिया टोस्टा	56. सल्फर		
57. थूजा औक्सिस	58. बेराट्रम एल्ब		
59. कैलकेरिया फलोर	60. कैलकेरिया फास		
61. कैलकेरिया सल्फ	62. फेरम फास		
63. कैलीम्योर	64. कैली फास		
65. कैली सल्फ	66. मैगनेसिया फास		
67. नेट्रम म्योर	68. नेट्रम फास		
69. नेट्रम सल्फ	70. साइलेशिया		

परिशिष्ट 2

बी० एच० एम० एस० द्वितीय परीक्षा के लिए मेटेरिया मेडिका का पाठ्य विवरण

बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा (परिशिष्ट—1) के लिए 70 औषधियों की सूची के अतिरिक्त, बी० एच० एम० एस० द्वितीय परीक्षा के लिए मेटेरिया मेडिका के पाठ्य-विवरण में निम्नलिखित अतिरिक्त औषधियां सम्मिलित की गई हैं :—

परीक्षा

- | | |
|----------------------|---------------------|
| 1. ऐसेटिक ऐसिड | 2. एक्टिया रेसिमोसा |
| 3. एगस्टिकस मसकेरियस | 4. एगस कैकटस |
| 5. एल्युमिना | 6. अम्मा प्रीसिया |

परिशिष्ट 3

बी० एच० एम० एस० तृतीय और चतुर्थ परीक्षाओं के लिए मेटेरिया मेडिका का पाठ्य विवरण

बी० एच० एम० एस० प्रथम और द्वितीय परीक्षाओं (परिशिष्ट 1 और 2) के लिए औषधियों की सूची के अतिरिक्त बी० एच० एम० एस० तृतीय और चतुर्थ परीक्षाओं के लिए मेटेरिया मेडिका के पाठ्य विवरण में निम्नलिखित अतिरिक्त औषधियां सम्मिलित की गई हैं :—

- | | |
|------------------------|------------------------|
| 1. एबिस कैन | 2. एबिस नायग्रा |
| 3. एफालिफा इण्डिका | 4. एक्टिया स्पाइकेटा |
| 5. एडोनिस वर्नालिस | 6. एड्रिनेलिन |
| 7. एन्थ्रैसिनम | 8. एण्टीमोनियम आर्स |
| 9. आर्टेमिसिया बल्बैरि | 10. एसाफोटिडा |
| 11. एस्टेरियस रबेम्स | 12. एबाना सेटाइवा |
| 13. बैसीलीनम | 14. बेराइट म्योर |
| 15. बेलिसपिरेमिस | 16. बेन्जियोक एसिड |
| 17. ब्लाटा ओरिएण्टैलिस | 18. ब्यूफो रैन |
| 19. क्लेडियम | 20. कैनाबिस इण्डिका |
| 21. कैनाबि सेटाइवा | 22. कैप्सिकम |
| 23. कार्बो एनीमैलिस | 24. कार्बोलिक ऐसिड |
| 25. कार्डुअस मैरिएमस | 26. कारसाइलोसिन |
| 27. कोलोफाइलम | 28. सिड्रन |
| 29. सियानोबस | 30. चिनिनम सल्फ |
| 31. कोलस्टेरियम | 32. साइक्यूटा विरोसा |
| 23. क्लैमैटिस | 34. कोका |
| 35. काकुलस इण्डिकस | 36. काफिया कूड |
| 37. कोलिन्सोनिया | 38. कान्डीउरंगो |
| 39. कोरालियम | 40. क्रीटिंगस |
| 41. क्रोकस सेटा | 42. क्रोटेलस ह्यारिडस |
| 43. क्रोटन टिग | 44. क्रूप्रम मेट |
| 45. माइक्लोमैन | 46. डायस्कोरिया विलोसा |
| 47. डिफथेरिनम | 48. इकुइसिटम हाईगेल |
| 49. एरिगैरान | 50. यूपेटेरियम पर्फा |

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| 51. फ्लोरिक एसिड | 52. ग्लोनायन |
| 53. ग्लेलोनियस | 54. हाइड्रॉस्टिस |
| 55. हाइड्रोकोटाइल | 56. हाइड्रोरिकम |
| 57. आयोडियम | 58. कैल्मिया लैटीफालिया |
| 59. लैक केनाइनम | 60. लैक डेफ |
| 61. लिलियम टिग | 62. लिथियम कार्ब |
| 63. लोबेलिया इन्फुलाटा | 64. लिसिन |
| 65. मैगनेसिया कार्ब | 66. मैगनेसिया म्यूर |
| 67. मैलेन्डिनम | 68. मैडैह्विनम |
| 69. मेफाइटिस | 70. मेलिलोटस |
| 71. मिनिमैन्थिस | 72. मर्क्यूरियस सियानेटस |
| 73. मर्क्यूरियस डलसिस | 74. मर्क्यूरियस सल |
| 75. मिलीफोलियम | 76. मेजेरियम |
| 77. मस्कस | 78. क्यूरकस |
| 79. म्यूरियाटिक एसिड | 80. नैजा |
| 81. ओनासमोडियम | 82. आर्कजैलिक एसिड |
| 83. पैसीफ्लोरा | 84. पैट्रोलियम |
| 85. फासफोरिक एसिड | 86. फाइजस्टिग्मा |
| 87. पिकरिक एसिड | 88. प्लम्बम मैट |
| 89. सोरिनम | 90. पायरोजेनियम |
| 91. रैडियम ब्रोम | 92. रैनानक्यूलस |
| 93. रैफनस | 94. रैटेनहिया |
| 95. रिजम | 96. रडोडेंड्रम |
| 97. रिजमैक्स | 98. रुटा |
| 99. सेबाडिला | 100. सैवाल सेरुलेटा |
| 101. सैबाइना | 102. सेम्बुकस नाइया |
| 103. सैगुइनेरिया कैनाडेन | 104. सैनिक्विउला |
| 105. सासापेरिला | 106. स्कुइला |
| 107. स्पाइजेलिया | 108. स्टेनम |
| 109. स्टेफिसैन्थिया मेट | 110. स्टिकटा एल्मोनरिस |
| 111. सेलेनियम | 112. सल्फ्यूरिक एसिड |
| 113. स्ट्रामोनियम | 114. सिम्फाइटम |
| 115. सिफिलीनम | 116. सिमिजियम जैबो |
| 117. टेबेकम | 118. टेटेक्साकम |
| 119. टैरीबिस्थिना | 120. टेरेण्डुला |
| 121. थेरीडियन | 122. थैलस्पीबुरसा |
| 123. थायरायडिनम | 124. थ्रिलिउआपेम्डुलम |
| 125. यूरेटिका यूरेन्स | 126. आस्टिलागो |
| 127. बेक्सीनियम | 128. बेलेरिआना |
| 129. बेरियोलिनम | 130. बेरेट्रम विर |
| 131. विका वाइनर | 132. वाइपेरा |
| 133. लाइबर्नम ओप्यूलस | 134. एक्सरे |
| 135. जिकम मेट | |

होम्योपैथी दर्शन का आर्गेनन और सिद्धांत बी० एच० एम०
एस० प्रथम, द्वितीय और तृतीय

परीक्षाएं

हेनीमन का आर्गेनन आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कृति और एक संहिताबद्ध मौलिक रचना है। आर्गेनन

के अध्ययन तथा होम्योपैथी के इतिहास और उसके संस्थापक की जीवनी से यह दर्शाया जाता है कि होम्योपैथी, रोगी के उपचार और नैरोग्य जैसी एक महत्त्वमानवीय समस्या के समाधान के लिए तर्क प्रेरक तार्किक पद्धति के उपयोग का एक साधन है। अतः तर्क के, वियोजक और प्रेरक दोनों ही, मूल सिद्धांत की पूर्ण जानकारी अत्यावश्यक है। तदनुसार आर्गेनन इस रीति से पढ़ाया जाना चाहिए कि विद्यार्थी को उस तर्कपूर्ण सिद्धांत की जटिलताएं स्पष्ट हो जाएं जिस पर होम्योपैथी की आधारशिला रखी हुई है और जिसकी सहायता से होम्योपैथी को अपना दैनिक कार्य करने में आसानी और प्रत्येक रोगी का उपचार करने में सुविधा होती है।

व्यवहारिक पक्ष को भली प्रकार समझ और याद कर लिया जाना चाहिए जिससे कि चिकित्सक के रूप में व्यावहारिक कार्य को भली प्रकार किया जा सके।

बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा

प्रारंभिक लेक्चर—10

विषय

होम्योपैथी क्या है ?

यह चिकित्साशास्त्र का कोई विशेष स्वरूप मात्र न होकर एक से पूर्ण चिकित्सा-पद्धति है। इसका जीवन, स्वास्थ्य, रोग उपचार और नैरोग्य के प्रति एक सुभिन्न दृष्टिकोण है।

—इसका पूर्णतः तर्कपूर्ण और वस्तुपरक आधार और दृष्टिकोण।

—होम्योपैथी अनन्यतः एक वस्तुपरक और युक्तिपूर्ण चिकित्सा पद्धति है।

—अभिगम और पद्धति की दृष्टि से होम्योपैथी पूर्णतः वैज्ञानिक है।

—यह संप्रेषित तथ्यों और आंकड़ों पर तथा ऐसे संप्रेषित तथ्यों और आंकड़ों से संबद्ध अपुथक्करणीय प्रेरक और वियोजक तर्क पर आधारित है।

—होम्योपैथी का सभी निदानपूर्व और परानैदानिक और नैदानिक विषयों के प्रति सुभिन्न दृष्टिकोण है।

—सभी परानैदानिक और निदानपूर्व विषयों के बारे में प्रारंभिक विचार। उनके पारस्परिक संबंध और संपूर्ण जीवधारियों के साथ संबंध।

—नैरोग्य और स्वास्थ्य के प्रयोजन के लिए होम्योपैथी के सिद्धांतों के कारगर उपयोग के लिए उन विषयों के अत्यावश्यक तत्वों के अध्ययन का महत्व।

—गतिशील भेषजगुण विज्ञान (पूषिण) और होम्योपैथी की फार्मसी के सुभिन्न तार्किक लक्षण।

2. हेनीमन का जीवन और होम्योपैथी के पथप्रदर्शक तथा उनका योगदान।

3. हेनीमन भेषज आर्गेनन—सूत्र 1 से 70 तक

बी० एच० एम० एस० द्वितीय परीक्षा

1. हेनीमन की भेषज आर्गेनन, बी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के दौरान समाप्त कर दी जानी चाहिए। परीक्षा, सूत्र 1 से 145 तक ही सीमित रहनी चाहिए।

2. भेषज आर्गेनन की प्रस्तावना (पांचवा और छठा संस्करण)

3. होम्योपैथी दर्शन (क) होम्योपैथी दर्शन पर कैंट के लेक्चर, (ख) होम्योपैथी दर्शन पर स्टुर्ट क्लोज—लेक्चर्स एण्ड एसेज (दि जीनस आफ होम्योपैथी), (ग) आर्ट और क्योर बाई होम्योपैथी—एच० राबर्ट (घ) साइंस आफ थेराप्यूटिक्स—इनहम। होम्योपैथी दर्शन पर लेक्चरों के दौरान निम्नलिखित मदों की व्यवस्था की जानी चाहिए :—

- (i) होम्योपैथी का प्रविषय।
- (ii) होम्योपैथी का तर्क।
- (iii) जीवन, स्वास्थ्य, रोग और अस्वास्थ्य।
- (iv) संवेद्यता, प्रतिक्रिया और अविकार्यता।
- (v) गंभीर और चिरकालिक दोषों के होम्योपैथी सिद्धांत की साधारण विकृति।
- (vi) होम्योपैथी दर्शन।
- (vii) शक्तिकरण और अत्यन्त सूक्ष्म खुराक और औषधि तथा औषधि शक्ति।
- (viii) होम्योपैथी दृष्टिकोण के रोगी की परीक्षा
- (ix) सकल लक्षणों का महत्व और जटिलताएं।
- (x) लक्षण-मूल्य।
- (xi) होम्योपैथी रोगवृद्धि।
- (xii) उपचार (औषधि) के प्रभाव को देखकर पूर्वानुमान।
- (xiii) दूसरा नुस्खा।
- (xiv) कठिन और ठीक न होने वाले रोगी-उपशमन।

4. ह्युजेज की कृति, "प्रिसिपिल्स एण्ड प्रैक्टिस आफ होम्योपैथी" का प्रस्तावना संबंधी अध्याय। आर्गेनन पर प्रारंभिक लेक्चर देने वाले आचार्यों से यह निवेदन है कि वे विद्यार्थियों के मस्तिष्क में उन तर्कपूर्ण सिद्धांतों की जटिलताएं बँटाल दें जिन पर होम्योपैथी की आधारशिला रखी गई है। आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में होम्योपैथी के सभी पहलुओं की दृष्टि से उसका ठीक-ठीक स्थान निर्धारण करने के लिए विद्यार्थियों का परिचय, पश्चिम में आयुर्विज्ञान के विकास के इतिहास और हेनीमन के उसमें योगदान से भली प्रकार करा दें। हेनीमन के जीवन पर भी प्रकाश डालें।

बी० एच० एम० एस० तृतीय परीक्षा

1. हेनीमन का औषधि आर्गेनन (पांचवा और छठा संस्करण)।

2. होम्योपैथी आयुर्विज्ञान का इतिहास—जैसा कि वह हेनीमन के समय में था; हेनीमन की प्रारंभिक जीवन, विद्यमान उपचार पद्धति से उत्पन्न उसकी निराशा, हेनीमन के "विष विष को मारता है" सिद्धांत की खोज, हेनीमन का पश्चात्कर्त्ती जीवनवृत्त। विभिन्न देशों में होम्योपैथी का प्रवेश। होम्योपैथी के प्रवर्तक और उनका योगदान। होम्योपैथी का अद्यतन विकास। होम्योपैथी के विकास की वर्तमान धारा। होम्योपैथी का अन्य चिकित्सा पद्धतियों पर प्रभाव।

3. होम्योपैथी दर्शन।

4. चिरकालिक रोगों पर हेनीमन की पुस्तक।

आर्गेनन का शीर्षों के अनुसार अध्ययन

अ. सिद्धांतिक पक्ष पर लेक्चर (सूत्र-1-70)

- (क) चिकित्सक का लक्ष्य और सर्वोत्तम नैरोग्य आदर्श—सूत्र 1 और 2
- (ख) चिकित्सक का ज्ञान—सूत्र 3 और 4
- (ग) रोगों का ऐसा ज्ञान जिससे अनुमान लगाएं जाते हैं—सूत्र 5 से 15 तक
- (घ) औषधि ज्ञान—सूत्र 19 से 21
- (ङ) उपचार की अन्य पद्धतियों की तुलना में होम्योपैथी का मूल्यांकन—सूत्र 22 से 69 तक
- (च) संक्षेप—नैरोग्य के लिए तीन शर्तें—सूत्र 70

आ. आर्गेनन के प्रयोगात्मक भाग को निम्नलिखित विषयों में विभाजित किया और पढ़ाया जाएगा, अर्थात्:—

- (क) नैरोग्य और रोगीवृत्त लेने के लिए आवश्यक बातें—सूत्र 71 से 104 तक
- (ख) औषधि की पेशोजेनेटिक शक्तियां, अर्थात्, औषधि प्रविण या किस प्रकार औषधि ज्ञान प्राप्त हो, सूत्र 105-145
- (ग) किस प्रकार ठीक औषधि का चयन किया जाए—सूत्र 147-150, 153 और 155
- (घ) ठीक खुराक—सूत्र 157, 160-164, 169, 171 और 173
- (ङ) स्थानिक रोग—सूत्र 204, 206 और 208
- (च) मानसिक रोग—सूत्र 210 से 230 तक
- (छ) सविराम रोग—सूत्र 231, 232, 236, 238, 240-242
- (ज) खुराक निर्णयन और औषधि देने के ढंग—सूत्र 245, 248, 252, 253, 256, 262 263, 269, 270, 272, 275, 276, 280, 286, 289, 290 और 291।

प्रयोगात्मक

आर्गेनिन ज्ञान का प्रयोगात्मक उपयोग:—

अंतरंग और बहिरंग दोनों विभागों में नैदानिक लक्षण—होम्योपैथी दृष्टिकोण से रोगी-परीक्षा:—

- (क) रोग अवधारण
 (ख) रोग वर्गीकरण
 (ग) लक्षण मूल्यांकन
 (घ) लक्षण श्रेणीकरण
 (ङ) औषधि और शक्ति का चयन तथा खुराक की पुनरावृत्ति } लक्षण मूल्यांकन
 (च) रोगवृद्धि या होम्योपैथी रोग वृद्धि
 (छ) दोषपरक (मियासर्मेटिक) निदान
 (ज) दूसरा नुस्खा
 (झ) उपचार के प्रभाव को देखकर पूर्वानुमान

बी० एच० एम० एस० तृतीय परीक्षा

बी० एच० एम० एस० तृतीय परीक्षा में आर्गेनिन और होम्योपैथी दर्शन के सिद्धांत के प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे, अर्थात्:—

प्रश्नपत्र 1—आर्गेनिन की प्रस्तावना (पांचवां और छठा संस्करण)—सूत्र 1—294 तक

- प्रश्नपत्र-2—(i) होम्योपैथी आयुर्विज्ञान का इतिहास।
 (ii) होम्योपैथी दर्शन।
 (iii) चिरकालिक रोग।

विकृति विज्ञान, जीवाणु विज्ञान और परिजीवी विज्ञान

(1) विकृति विज्ञान और जीव रसायन का अध्यापन बहुत सतर्कतापूर्वक और न्यायपूर्ण रूप में किया जाना चाहिए। एलोपैथी, उक्तक चिकित्सा विज्ञान और जीव रसायन को रूग्ण परिस्थितियों से संबद्ध करके यह समझता है कि जीवाणु, रोगों के परिस्थितिजन्य कारण हैं किंतु होम्योपैथी रोगों को पूर्णतः प्राणशक्ति का गतिशील विक्षोभ (डिस्टर्बेंसेज) मानती है जिसकी अभिव्यक्ति ऐसी सचेत संवेदनाओं और कार्यों से होती है जिनके कारण व्यापक उक्तक परिवर्तन हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। उक्तक-परिवर्तन स्वयं रोगों का आवश्यक भाग नहीं है और तबनुसार वह होम्योपैथी में औषधि देकर उपचार की विषयवस्तु नहीं है।

(2) लुइस पेस्चर और राबर्ट कोच की खोजों के पश्चात् से चिकित्सा क्षेत्र में इस सिद्धांत में विश्वास किया जाने लगा है कि “कीटाणुओं का नाश करके रोग को ठीक करो”। किंतु पश्चात्पूर्वी अनुभव से यह प्रकट हुआ है कि इसके अनावा एक आमक तथ्य और भी है जिसके कारण रोग का संक्रमण और वास्तविक उत्पत्ति होती है। यह तथ्य है रोगी की सुप्ताहता (एसप्टिबिलिटी) चूंकि होम्योपैथी मानव के विभिन्न अस्वास्थ्यकर तथ्यों सूक्ष्म जीवी या

अन्यथा के प्रति प्रतिक्रियाओं से ही मुख्यतया संबंधित है अतः रोग उत्पत्ति में जीवाणु या विषाणु की भूमिका, होम्योपैथी के क्षेत्र में पूर्णतः गौण है।

(3) यद्यपि जीव रसायन का ज्ञान कुशल होम्योपैथी चिकित्सक के लिए आवश्यक है तथापि इसकी आवश्यकता, चिकित्साशास्त्र के लिए न होकर निदान पूर्वानुमान रोगों की रोकथाम और सामान्य व्यवस्था के लिए है। इसी प्रकार विकृति विज्ञान का ज्ञान, रोग अवधारण पूर्वानुमान, रोगी और रोग के लक्षणों के बीच विभेद और उपयुक्त होम्योपैथी औषधि की खुराक और शक्ति का निश्चय करने के लिए आवश्यक है।

(4) विद्यार्थियों को विकृति विज्ञान का केवल छोटा मोटा आधारीक प्रशिक्षण ही, जिसका कोई विशेषज्ञीय मुकाबल न हो, दिया जाना चाहिए। विकृति विज्ञान के शिक्षकों को यह नहीं भूलना चाहिए कि उनका उद्देश्य चिकित्सा व्यवसायियों को, विशिष्टतः होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसायियों को प्रशिक्षण देना है न कि विकृति विज्ञान के प्राविधिज्ञों (टैक्नीशियन) या विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना। जीवित न कि मृत रोगी ही इस विषय के अध्यापन का मुख्य लक्ष्य है।

(5) विकृति विज्ञान के अनुपेक्षान का प्रयोजन यह है कि विद्यार्थी व्यक्तिपरक लक्षणों और वस्तु परक लक्षणों को सहबद्ध कर सकें, वैज्ञानिक लक्षणों का निर्वचन कर सकें और उनका पारस्परिक संबंध समझ सकें, क्योंकि यही विकृति विज्ञान का प्रमुख आधार है।

प्रस्तावना: विकृति विज्ञान का प्रविषय—पुरानी विचारधारा—नई विचारधारा (होम्योपैथी) किस प्रकार विकृति विज्ञान का अध्ययन किया जाए।

संज्ञात्मक

जीवाणु विज्ञान :

आकारकी जीवविज्ञान, विसंक्रमण, रसायन-चिकित्सा, कृत्रिम माध्य (मीडिया) संक्रमण, प्रतिरक्षा, प्रतिक्रिया, इम्यूनिटी अतिसंवेधता, त्वचा परीक्षण जीवाणु, स्वभाव का व्यवस्थित अध्ययन—महत्व। सामान्य विकारी और अविकारी जातियों का आकारिक, सांस्कृतिक, जीव रसायनिक सीरमी और विषालु व्यवहार। रोग जीवाणुओं से उत्पन्न विकृति संबंधी परिवर्तन और उनका प्रयोगशाला निदान। स्टेफिलोकोकाई, स्ट्रेप्टोकोकाई, डिप्लोकोकाई, नाइसीरिया, माइकोएक्टेरियम क्षय (टाइप) माइकोबैक्टेरियम लेपरी, स्पार्डोरोकेटीज और विकृति संबंधी माइकोबैक्टेरी के नाम और उनके बीच अंतर, कानीबैक्टीरियम डिप्थीरी, ऐरोबिक स्पोर युक्त बैक्टीरिया बेसीलस एन्थ्रीस, अवायुजीव, रोगजनको (पैथोजेन) के साधारण और विशिष्ट लक्षण। कुछ महत्वपूर्ण गैर रोगजनकों के नाम। ग्राम निगेटिव आंत्र जीवाणु रोगजनक सालमोनेलिया विषरिक्त बैक्टेरियम, पास्टेरुनेना का वर्गीकरण पहचान। हीमोफीलिस, सूडोमोन, ब्रूसेला, रिकेट्सिया, प्रोटैयस,

स्पाइरोकेटीज का सामान्य ज्ञान—सामान्य ज्ञान, टैपोनेमा पैलिडम और लप्टोस्पाइरेक्टरो हीमोरेगियास के ब्योरे । वायरस—साधारण लक्षण, रोग वर्गीकरण, कुछ प्रमुखी वायरस रोगों से लेप्ते, छोटी माता, रेबीज, जीवाणुभोजी से प्रतिरक्षा के कुछ उपाय ।

2. परजीवी विज्ञान:

प्रमुख राइजोपोडा के प्रोटीजोआ-वर्गीकरण नाम एण्ट हिस्टोलीटिक आकार की रोगजनन और रोगजनक विभिष्ट-ताएं निदान, प्लासमोडिया की एटिकोली स्पोरोजी से भिन्नता, जातियों का जीवनवृत्त और रोगजनन प्रन्तर ।

मैस्टिगोफोरा—सामान्य स्थूल आकृतिक लक्षण, वर्गीकरण, रोगजनन, बैक्टर, कालाफर का विकृति विज्ञान, महत्वपूर्ण लक्षण स्रोत बैलेटीडियम कोलाई को कारण रोग ।

कृमि—कुछ पक्षों की परिभाषा, साधारण वर्गीकरण, नेमाटोड, सेस्टोड और ट्रेमाटोड के बीच अन्तर सेस्टोड और नेमाटोड महत्वपूर्ण जातियों के मुख्य विभेदक आकृतिक लक्षण और जीवनवृत्त तथा रोगजनन, जिगर, फेफड़ों, आंतों और रक्त का संक्रमण—सामान्य जीवनवृत्त—सिस्टोसोमों और अन्य ट्रेमाटोडों के बीच अन्तर ।

3. विकृति विज्ञान:

(क) सामान्य विकृतिविज्ञान के सिद्धान्त:

क्षति शोथ और निरोहण (रिपेयर) अपघटन (डिजन-रेशन), क्लाउडी सूजन और श्वपरीक्षा, भ्रपघटन । स्थिरीकरण के सिद्धान्त । फेटी परिवर्तन लिपाईड भ्रपघटन । नेक्रोसिस और गैंग्रीन । पिगमेंट कैल्शियम और यूरिक अम्ल विक्षोभ । चयापचय । अविटामिनता । अरक्तता । विकास में अव्यवस्था मोब्राप्लेसिया, इनाप्लेसिया, एट्राफी, हाईपरट्राफी, एरीसिपेडस, न्योप्लाज्म वर्गीकरण, बिनाइन और मैलिनेन्ट, प्रसार, मनोवैज्ञानिक तत्व, प्रायोगिक कैंसरजनन, सिद्धांत, परिचालन, विघ्न, क्लोथिंग अनिद्रा, थ्राम्बोसिस, एम्बोलिज्म, इन्फेक्शन, हाइ-परीमिया (शाक) झटके ।

(ख) विकृति विज्ञान और विशेष अंग ।

सामान्य अव्यवस्था में विकृत शरीर रचना (मैक्रोस्कोपिक) ।

(ग) नैदानिक और रासायनिक विकृति विज्ञान ।

रक्त—विभिन्न प्रयोजनों के लिए संग्रहण हीमोग्लोबीन आकलन लाल रक्त कणिकाओं, विम्बाणु, एम०सी०एच० एम०सी०बी०, एम०सी०एच०सी० की कुल संख्या, गणना, विभेदी श्वेत कोषिका गणना मलेरिया, परजीवी, लीशमैनिया, रेटीफेरल रक्त में ट्राइपैनीसोम, एरो या स्प्लीन पंक्थर सामग्री । लाल और श्वेत रक्त कणिकाओं का विकास । ल्यूकेमिया । एरीथ्रसाइट तलछटीकरण, रक्त कल्थर । एल्डीहाइड और चापड़ा परीक्षण । रतस्राव और स्कन्दन समय । प्रोथ्रोम्बिन समय ।

रक्त समूह रक्त शर्करा का आकलन, शर्करा सद्यता परीक्षण । जिगर कार्य परीक्षण, विशिष्टतः विलिखित ।

बेनडेनजर्ग प्रतिक्रिया, पीलिया इन्डेक्स, प्रभागी प्रयोगाहार मूत्र—यूरिया आकलन, यूरिया समाप्ति परीक्षण, जल रोग, मूत्रिक जमाव फेसेज, विभिन्न ओषा-विभेदीकरण बैसीलेरी आंव । अमीवी आंव । कंठ स्वाव, थूक, सी०एस०एफ०, एसिटिक और प्लूरा तरलों की परीक्षा ।

प्रयोगात्मक

नैदानिक और रासायनिक विकृति विज्ञान:

हीमोग्लोबीन का आकलन (एसीडोमीटरी) द्वारा लाल और श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या । पतली और मोटी फिल्मों का सेटिंग । विभेदक गणना और परजीवी । इरिथ्रो-साइट तलछटीकरण वर, मूत्र, भौतिक, रासायनिक, सूक्ष्मदर्शी एल्ब्यूमन और शर्करा की मात्रा, फेसेज-भौतिक रासायनिक (कोकल्ट रक्त) और सूक्ष्म सूक्ष्मदर्शी—ओषा और प्रोटोजोआ के लिए ।

विसंक्रमण की रीतियां भाष्य की तैयारी, सूक्ष्मदर्शी का प्रयोग । ग्राम और अम्ल फास्ट अभिरंजक स्टेन । माडिलिटी तैयारी । ग्राम पाजिटिव और नेगेटिव कोकी और बेसिली । कोरीनेबैक्टेरियम-ग्राम के लिए विशेष स्टेन और मबाव और थूक के फास्ट स्टेन ।

हेकोकीज प्लेट—शर्करा प्रतिक्रियाएं-ग्राम अभिरंजन और ग्राम की चरता (मोटीलिटी), नेगेटिव आंश बैक्टेरिया । अदीप्त क्षेत्र प्रकाशन द्वारा पारशुरेला और स्पाइरोकीटज का बाहुडल और प्रदर्शन—फेन्टानस का स्टेन—लोबाडिट्स अभिरंजन । नेक्रोबायोसिम के प्रदर्शन का ढंग ।

विकारी ऊतक विज्ञान:

पैराफीन और हिमशीत सैक्शनों के स्थिरीकरण, अन्तःस्थापन, कर्तन और अभिरंजन के ढंग की बाबत प्रयोगात्मक प्रशिक्षण । धूसर यकृतीभवन (थ्रे हेपेटाइजेशन) गंभीर एपेन्डिसाइटिस, चिरकालिक एपेन्डिसाइटिस, सेप्टिक जिगर फोड़ा । कर्णाकुर (ग्रैनुशेलन) ऊतक फेफड़े का क्षय, पोर्टल सिरोसिस, फेटी जिगर, मलेरीजिगर, एथिरीमा, पेपीलोमा, फाइब्रो एडीनोमा, तन्तुपेशीआबुर्द (फाइब्रोमायोमा), स्क्वेयस सेल्ड और बेसल सेल्ड कार्सिनोमा, एडोिनोकार्सिनोमा कठोर, कार्सिनोमा, एमसेफलाइड कार्सिनोमा, लसिका ग्रंथि में गौड कार्सिनोमा, गोल और तर्कु स्पिन्डल कोशकीय सार्कोमा ।

व्यवहार आयुर्विज्ञान और विषविज्ञान:

होम्योपैथी आयुर्विज्ञान के विद्यार्थी के लिए यह विषय व्यावहारिक महत्व का है क्योंकि होम्योपैथी के चिकित्सकों को सरकार ऐसे क्षेत्रों में नियुक्त करना चाहती है जहां उनको चिकित्सा-विधिक मामले देखने होते हैं, श्व परीक्षा करनी होती है और ऐसे मामलों में साध्य देनी होती है । इन उद्देश्यों की पूर्ति की दृष्टि से व्यवहार आयुर्विज्ञान में जो प्रशिक्षण आजकल दिया जा रहा है वह अपर्याप्त है ।

उक्त पाठ्यक्रम के लिए अनेक लेक्चर और प्रदर्शन किए जाने चाहिए जिनके अन्तर्गत निम्नलिखित विषय भी पढ़ाए जायें अर्थात्:—

1. चिकित्सक प्रक्रिया

व्यवहार आयुर्विज्ञान (मेडीकल ज्यूरिसपूडेन्स) की परिभाषा न्यायालय और उनका अधिकार क्षेत्र ।

2. चिकित्साचर (मेडीकल इथिक्स)

चिकित्सक रजिस्ट्रीकरण संबंधी विधि और चिकित्सक तथा राज्य के पारस्परिक संबंध । होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 और उसके अधीन आचार संहिता, चिकित्सक और रोगी व्यावसायिक गोपनीयता संबंधी अनाचार चिकित्सक और विभिन्न कानून (अधिनियम)—प्रांतीय और केन्द्रीय, जैसे कर्मकार प्रतिकर अधिनियम, लोक स्वास्थ्य अधिनियम, क्षति अधिनियम, बाल विवाह, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, विद्यालय अधिनियम, चिकित्सीय गर्भ समाप्ति अधिनियम, पागलपन अधिनियम, भारतीय साक्ष्य अधिनियम आदि ।

3. व्यवहार आयुर्विज्ञान

जीवित और मृत व्यक्तियों की परीक्षा और पहचान अंग, अस्थियां, धब्बे आदि, स्वास्थ्य, चिकित्सा-विधिक, शवपरीक्षा चिह्न, प्रक्रम और परिणाम, पूर्तिभवन (प्यूट्री-फिकेशन), ममीभवन, साबुनीकरण, मृत्यु के प्रकार, कारण, माध्यम, प्रारंभ आदि । हमले, द्रवण, क्षतियां और हिंसा के कारण मृत्यु । श्वासावरोध के कारण मृत्यु, रक्त परीक्षा, रक्त धब्बे, शक धब्बे, जलना, गरम तरल से जलना, विद्युत के झटके आदि । भूखा रहना, गर्भाधान, प्रसव, गर्भसास, शिशुवध, लैंगिक अपराध, राज्य जीवन के संबंध में उन्मत्तता और दुर्घटना बीमा ।

विषयविज्ञान

सामान्य विषाक्तता विभिन्न विषयों के लक्षण और उपचार, शव-स्वरूप और परीक्षण के बारे में लेक्चरों का पृथक पाठ्यक्रम होना चाहिए । निम्नलिखित विषयों का अध्ययन:—

खनिज अम्ल संक्षारक सब्लीमेंट आर्सेनिक और उसके मिश्र एल्कोहल अफीम और उसके धार, कार्बोलिक अम्ल, कार्बोन मोनोक्साइड, कार्बन डाईआक्साइड । मिट्टी का तेल केनेबिस, इंडिका, कोकीन, बेलेडोना, स्ट्रीकिन और नक्स घोमिका, एकोनाइट, ओलेन्डर, सर्पविष, प्रूसिक अम्ल, सीसा-विष देना ।

4. चिकित्सा-विधिक शव परीक्षा

शव स्वरूप अभिलेखन सामग्री, रासायनिक परीक्षक को भेजना । रासायनिक परीक्षक और प्रयोगशाला निष्कर्षों का निर्वचन । व्यवहार आयुर्विज्ञान में लेक्चर-पाठ्यक्रम पूरा करने वाले विद्यार्थियों को चाहिए कि वे व्यावहारिक आयुर्विज्ञान के आचार्य द्वारा की जाने वाली चिकित्सा-विधिक शव परीक्षा को देखने और समझने के लिए सभी संभव प्रयास करें । ऐसी आशा की

जाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम दस शव परीक्षाएं देखे और समझे ।

5. प्रदर्शन

- (1) अस्त्र
- (2) कार्बनी और अकार्बनी विष
- (3) विषालू पीछे
- (4) चिकित्सा-विधिक विषयक चार्ट, चित्र, माडेल, एक्सरे फिल्म आदि ।

निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान तथा परिवार कल्याण

(स्वास्थ्य शिक्षा और अनुबंधी आयुर्विज्ञान)

यह पाठ्यक्रम आयुर्विज्ञान अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को लेक्चरों, प्रदर्शनों और फील्ड अध्ययन द्वारा अध्ययन के तृतीय वर्ष में सिखाया जाना चाहिए । यह विषय सर्वोत्तम महत्व का है और आयुर्विज्ञान-अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों का ध्यान, निरोधक आयुर्विज्ञान के महत्व और सकारात्मक स्वास्थ्य के प्रोन्नयन के लिए उपायों की ओर सदैव आकर्षित किया जाना चाहिए ।

उसका कार्य, रोगहर प्रयोजनों के लिए होम्योपैथी औषधियां निश्चित करने मात्र तक सीमित न होकर समाज में एक व्यापक भूमिका अदा करना भी है । उसे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्याओं का ज्ञान होना चाहिए जिससे कि वह, न केवल रोगहरण वरत परिक्षेत्र कल्याण सहित निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में भी, कारगर भूमिका निभाने का दायित्व संभाल सके ।

1. सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान संबंधी सिद्धांतों की प्रस्तावना, व्यक्ति और समाज, निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान का लक्ष्य और प्रविषय, रोगों के सामाजिक कारण और रोगी की सामाजिक समस्याएं । स्वास्थ्य और रुग्णता के संवर्ध में आर्थिक तत्त्वों और परिवारण का पारस्परिक संबंध ।

2. शरीरक्रिया संबंधी स्वास्थ्य विज्ञान :

(क) भोजन और पोषण—स्वास्थ्य और रोग के संदर्भ में भोजन । संतुलित आहार । पोषण कमियां और पोषण संबंधी पर्यवेक्षण । भोजन तैयार करना, कुम्भ का पाश्चुरीकरण । खाद्य अपमिश्रण और निरीक्षण ।

खाद्य विषाक्तता—

- (ख) वायु, प्रकाश और धूप
- (ग) जलवायु का प्रभाव—अर्द्रता तापमान, दाब और अन्य मौसमी परिस्थितियां—सुखक्षेत्र-सघन आबादी का प्रभाव ।
- (घ) वैयक्तिक स्वास्थ्य—(सफाई-आराम-निद्रा, कार्य)—शारीरिक कसरत और प्रशिक्षण, पोषण (दुग्धिक) में स्वास्थ्य प्रशिक्षण ।

परिवर्णीय सफाई :

- (क) परिभाषा और महत्व ;
- (ख) वायुमण्डलीय दूषण—वायु शुद्धिकरण, वायु विसंक्रमण/वायुजनि रोग ।
- (ग) जलप्रदाय-स्रोत और प्रयोग । अशुद्धताएं और शुद्धिकरण । नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक जल प्रदाय । पयजल के मानक, जलजन्य रोग ।
- (घ) मयवहन-शहरों और कस्बों तथा ग्रामों में मलहन का ढंग, सैफ्टिक टैंक, शुष्क शौचालय - जेल बलाजेट । मल निपटारा, रोग समाप्त, कुड़ा-करकट फिकवाना, भस्मीकरण ।
- (ङ) मेलों और उत्सवों में सफाई ।
- (च) विसंक्रमण-विसंक्रमक, ड्यूडेरैन्ट, एन्टीसैफ्टिक, कीटनाशी, विसंक्रमण और निर्जीवाणुकरण ।
- (छ) कीट-कीटनाशी और विसंक्रमण रोग और कीट संबंध । कीट नियंत्रण ।
- (ज) प्रोटोजोआ और कृमि रोग-प्रोटोजोआ और कृमि का जीवन चक्र, उनका निरोध ।

6. आर्थोबैज्ञानिक सांख्यिकी:- संचारी रोगों के निरोध और नियंत्रण के सामान्य सिद्धान्त । प्लेग, हैजा, चेचक, डिफ्थीरिया, कुष्ठ, क्षयरोग, मलेरिया, कालाजार, फाइनेरिया, सामान्य वायरल रोग, अर्थात् सामान्य टण्डी खसरा, छोटी माता, पोलियो, संक्रामक हैपीटाइटिस, कृषि संक्रमण, एन्ट्रिक ज्वर और पेचिण पशुरोग जो मानव को लग सकने हैं । उनका वर्णन और सम्पर्क या विन्दक द्वारा उनके फैलने को रोकने की रीति । पर्यावरणीय बाहकों से संक्रमण (जल, स्पल, खाद्य कीट, पशु, फाउन्डीय आदि) । रोगनिरोध और टीका लगाने के बारे में है होमियोपैथिक दृष्टिकोण । रोगों का प्राकृतिक इतिहास ।

7. मातृ और बाल स्वास्थ्य, विद्यालय स्वास्थ्य सेवाएं, स्वास्थ्य शिक्षा, गामिनिक स्वास्थ्य-प्राथमिक सिद्धान्त, विद्यालय आयुर्विज्ञान, उसके उद्देश्य और रीति ।

8. परिवार कल्याण-डेमोग्राफी-संचरण सारणी, राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम, ज्ञान, गर्भनिरोधकों के प्रयोग के बारे में दृष्टिकोण । जनसंख्या और उसकी वृद्धि-नियंत्रण ।

9. गार्बेजिनिक स्वास्थ्य प्रशासन और अन्तरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संबंध ।

टिप्पण-फील्ड प्रदर्शन-जल शुद्धिकरण संयंत्र, संक्रामक रोग अस्पताल आदि ।

शल्यक्रिया, जिसके अन्तर्गत होमियोपैथी चिकित्साशास्त्र भी है ।

जब औषधि निष्फल हो जाती है तो शल्यक्रिया की भूमिका प्रारंभ होती है । बाहरी भागों की विकृत अवस्था ही,

जिसमें यांत्रिक कौशल की आवश्यकता होती है, शल्य चिकित्सा का विषय है किन्तु जब क्षति इसनी व्यापक या गंभीर हो कि उसमें अंगों में तीव्र प्रतिक्रिया उत्पन्न हो जाए तो औषधियों की सहायता से तत्काल उपचार आवश्यक है ।

शल्यक्रिया रोगों के अन्य उत्पादों (एण्ड प्रोडक्ट) को हटा देती है किन्तु शल्यक्रिया के पूर्ववर्ती और पश्चात्वर्ती उपचार की आवश्यकता मूल विकृति को ठीक करने और अनुगमों (सीक्वेल) या जटिलताओं को रोकथाम करने के लिए होती है ।

चूंकि होमियोपैथी में अनेक परिस्थितियों में आन्तरिक औषधि प्रयोग हो सकता है, अतः औषधि प्रयोग की भूमिका शल्यक्रिया की भूमिका से अधिक व्यापक है । इस दृष्टि से शल्यक्रिया का विस्तार सीमित है । किन्तु औषधि के अनुपूरक के रूप में शल्यक्रिया का भी होमियोपैथी में एक विशिष्ट स्थान है । इसलिए शल्यक्रिया का अध्यापन भी तदनु रूप होना चाहिए ।

(क) शल्यक्रिया के सिद्धान्तों का क्रमबद्ध रूप में अध्यापन पाठ्यक्रम ।

(ख) नैदानिक प्रशिक्षण के प्रारंभिक भागों के दौरान, विद्यार्थी को, जब उसे रोगियों का भारसाधन नहीं सौंपा जाता है, नैदानिक परीक्षा के मूल सिद्धान्त बताए जाने चाहिए । इनके अन्तर्गत शारीरिक लक्षण, सामान्य उपकरणों का प्रयोग, घावों पर सेपसिस और एण्टीसेपसिस पट्टी बांधना आदि हैं ।

(ग) शल्यक्रिया-पद्धति, जिसमें भौतिक चिकित्सा सम्मिलित है, में प्रायोगिक अनुदेशन ।

(घ) प्राणी की लघु शल्यक्रिया का शिक्षण ।

(ङ) निम्नलिखित विषयों में अनुदेशन :

(i) विकिरण विज्ञान और विद्युत चिकित्सा विज्ञान तथा शल्यक्रिया में उनका उपयोग ।

(ii) रतिज रोग ।

(iii) विकलांग विद्या

(iv) दन्तरोग ।

(v) गौशवावस्था और बालावस्था के शल्यक्रिया-रोग ।

(ख) सुविधा की दृष्टि से यह सुझाव है कि शल्यक्रिया के नैदानिक पाठ्यक्रम के दौरान निम्नलिखित रूप में शिक्षण किया जाना चाहिए ।

बी०एच०एम०एस० द्वितीय

1. साधारण:- अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान और अनुप्रयुक्त शरीर क्रिया विज्ञान । सामान्य शल्यक्रिया प्रक्रिया । शोध, संक्रमण, अविनिश्चित संक्रमण, विनिश्चित संक्रमण, पूषीभवन (सपूरेशन), कीटविज्ञान और शल्य रोग, इन्फ्यूनिटी, क्षतियों नील, व्रण, रक्तस्राव, झटका, जलना और तप्त तरक दाह, ट्यूमर और सिस्ट, त्वचा और उपत्वक ऊतक, अस्तर होना और

गैंग्रिन, रक्त बाहिकाओं और तन्त्रिका तन्त्र के रोग, अस्थि-क्षति मंघि क्षति अंग क्षति, तेल्विस क्षति, अस्थि और काटिलेज रोग और ट्यूमर, मंघिरोग। पृथक-पृथक मंघि के रोगों का नैदानिक प्रकटीकरण। अंग विकृति। अंगीछेदन। कृत्रिम अंग। तन्त्रिका और रोग। पेशी टन्डन। बर्सा।

2. सामान्य रोग।

3. दन्त शल्यक्रिया।

4. पट्टी बांधने और अन्यशल्यक्रिया उपकरणों पर लेक्चर और प्रदर्शन।

बी०एच०एम०एस० तृतीय

1. साधारण—स्काल्प और स्कल की क्षतियां और रोग, मस्तिष्क और उसकी मेम्ब्रन, चेहरा, अंग, मुख, जबड़ा, जिह्वा, स्लावी ग्रन्थियां, ग्रीवा, थाइराइड, पराथाइराइड और थाइमस, वक्ष, स्तन और थोरेमिस बाइसेरा, स्पाइन, उदरीय परजीवी और पेरीटोनियम, पेट, इयोडनम, जिगर, गान्ग्लेण्डर और पित्ताशय, पेनक्रिया और वृक्क, आंत्र, रेक्टम और एनल केनाल। आंत्र अवरोध, हृनिया, किडनी, यूरेटरा, ब्लेडर यूरेथ्रा और जननांगों की क्षति। और रोग अधिवृक्क और स्वसंचालित तन्त्रिका तन्त्र के रोग।

2. कर्ण, नासा, कंठ विज्ञान (ई०एन०टी०) कर्ण, नासा और कंठ के सामान्य रोगों और दुर्घटनाओं का ज्ञान। इसमें श्वास-प्रणाली-श्वसनी वृक्ष और ग्राम नली सम्भीमलिन हैं। साथ ही शरीर रचना, शरीर क्रिया, विकृति उपचार और सामान्य आपरेटिव उपायों का ज्ञान।

3. नेत्र विज्ञान—नेत्र की नैदानिक परीक्षा—नेत्र की व्यक्तिपरक और वस्तुपरक प्राथमिक रचना, पलकें, अत्रुसाधित, नेत्रश्लेषमला (कंजकटाइवा) कोनिया, स्कलेरा आइरिस, रोमक ब्राडी और लेन्स ग्लूकोमा, आइडिल सेल्युलाइटिस नेबोल्सेध, अन्वनेत्रशोध, सर्वनेत्र शोध, रेटीना और नेत्र तन्त्रिका के सामान्य रोग जो साधारण स्थितियों से संबंधित हैं। नेत्र पलकों और नेत्रबालक की क्षतियां। नेत्र का प्राथमिक अपवर्तन। भेंगा आपथेल्मोसकोपी नेत्र का सामान्य आपरेगन और उसके उपांग।

4. एकसरे लेक्चर-प्रदर्शन।

5. शैशवावस्था और बाल्यवस्था के रोगों की शल्यक्रिया

टिप्पणः—1. इस नियम के अध्यापकों को चाहिए कि वे संपूर्ण अध्ययन काल के दौरान विद्यार्थी का ध्यान उसके नरोधक पक्ष की ओर आकर्षित करें।

2. आयुर्विज्ञान की इन शाखाओं के शिक्षण का उद्देश्य यह होना चाहिए कि विद्यार्थी को सामान्य परिस्थितियों के अभिज्ञान तथा होम्योपैथी उपचार की जानकारी के लिए पर्याप्त ज्ञान प्राप्त हो जाए।

3. बी०एच०एम०एस० द्वितीय और तृतीय कक्षाओं में से प्रत्येक में हर विद्यार्थी, 20 पूर्ण रोगीवृत्त प्रस्तुत करेगा।

प्रत्यक्रिया के लिखित प्रश्नों को निम्नलिखित रूप में विभाजित किया जाएगा, अर्थात्:—

प्रश्नपत्र 1

साधारण शल्यक्रिया:—शोध विनिर्दिष्ट और अविनिर्दिष्ट संक्रमण, रक्तस्राव सटका (शाक), जलना, जलमर और गैंग्रिन। ट्यूमर और सिस्टम। तन्त्रिका रोग और क्षतियां, पेशी टण्डन और ब्रसां। तन्त्रिका रोग बाहिका तन्त्र तथा तिल्ली—

मिर और ग्रीवा शल्यक्रिया जिममें थाइराइड वक्ष की शल्यक्रिया सम्मिलित है और जन्मजात विषमताएं।

उदरीय शल्यचिकित्सा जिमके अन्तर्गत गेस्ट्रोइन्टेस्टाइनल तंत्र है। अन्थि और मंघि शल्यक्रिया। स्पाइन की क्षतियां और रोग।

अंग विकृतियां।

थोराइक शल्यक्रिया और होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र।

प्रश्नपत्र 2

कर्ण, नेत्र, कंठ विज्ञान सामान्य रोग नेत्र विज्ञान। दन्त और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र और होम्योपैथी में शल्यक्रिया।

प्रसूति विज्ञान, स्त्रीरोग विज्ञान तथा शिशु स्वास्थ्य जिमके अन्तर्गत होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र भी हैं।

होम्योपैथी का इन विषयों की बाबत ही दृष्टिकोण है जो उसका औपधि और शल्यक्रिया के सम्बन्ध में है किन्तु प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान के अध्ययन के दौरान होम्योपैथी चिकित्सक को स्थानिक परिस्थितियों का निदान करने या जीवनरक्षी उपाय के रूप में या यान्त्रिक एकावट को दूर करने के लिए शल्यक्रिया करना आवश्यक हो वहाँ, विशिष्ट वैज्ञानिक अन्वेषण पद्धति समझाने का प्रयत्न किया जाए।

स्त्री की पारिवारिक विकृति दूर करने या ऐसे वैज्ञानिक विकृत गर्भ को ठीक करने के लिए सर्वोत्तम उपयुक्त समय गर्भकाल ही है और इस बात पर विशिष्टितः जोर दिया जाना चाहिए।

विद्यार्थियों को नवजात शिशु की बाबत भी शिक्षित किया जाना चाहिए। यह तथ्य कि माना और बालक एक ही

जैविक इकाई है और यह विचित्र निकटवर्ती क्रियात्मक संबंध बाल्यकाल के प्रथम दो वर्ष तक विद्यमान रहता है, भली प्रकार समझाया जाना चाहिए।

प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान तथा शिशु स्वास्थ्य जिसमें गर्भकाल की अनुप्रयुक्त शरीर रचना और क्रिया तथा प्रसव सम्मिलित हैं के सिद्धान्तों और पद्धति का क्रमबद्ध अनुदेशन।

बी०एच०एम०एस० द्वितीय पाठ्यक्रम

प्रसूतिविज्ञान:—अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान डिव का विकास। गर्भ और उसके अनुषंगी, संगर्भता-सामान्य संगर्भता पैतृक देखभाल असामान्य संगर्भता की प्रस्तावना। प्रसव-सामान्य, असामान्य प्रसव की प्रस्तावना। पुरपूरियम, सामान्य पुरपूरियम। प्रसवोत्तर देखभाल।

स्त्रीरोग विज्ञान :—शरीर रचना और शरीरक्रिया, स्त्री रोग संबंधी परीक्षा। स्त्री जननांगों में विषमताओं का विकास सैक्स हार्मोन विकारयुक्त कार्य श्चतु स्राव संबंधी विषयताएं। बिस्थापन (डिस्प्लैसमेंट)।

शिशु-स्वास्थ्य : नवजात शिशु की देखभाल।

बी०एच०एम०एस तृतीय पाठ्यक्रम

प्रसूति विज्ञान :—संगर्भता—असामान्य संगर्भता, गर्भस्राव मोलर संगर्भता, गर्भाणय बाह्य संगर्भता, प्लेसेन्टा और मेम्ब्रन के रोग। संगर्भता के टोनसेमिया। एण्टेपार्टम गर्भस्राव। जननांगी पथ का विकार, रेट्रोवर्जन, प्रापलेप्स आदि। बहुसंगर्भता। मन्द संगर्भता। संगर्भता से सम्बद्ध सामान्य विकार प्रसव असामान्य उपस्थापन और स्थिति यमन (द्विचन)। कांडे और अंगों का प्रण (प्रोलेप्स)। गर्भाणय की क्रियाओं में असामान्यताएं। मृदुअंगों की असामान्य स्थिति पेल्विस संकुचन। अवरुद्ध प्रसव जन्म केनाल की क्षतियां। सामान्य प्रसूति-आप्रेषण प्रसूतकाल असाधारण प्रसूतकाल, संक्रमण। अन्य सामान्य विकार।

स्त्री रोग विज्ञान :—शोथ अल्सर होना और स्त्री जननांगों के अभिघातज विकृति, नवोत्पत्ति सामान्य स्त्री रोग सम्बन्धी आपरेषण और विकिरण-चिकित्सा।

शिशु स्वास्थ्य :—स्तनपान-कृत्रिमपान अपरिपक्वता की व्यवस्था, श्वासावरोध जन्म क्षतिया और नवजात शिशु के सामान्य विकार।

टिप्पण :—1. अध्ययन के दौरान इस विषय पर लेक्चरों के माध्यम से विद्यार्थी का ध्यान उसके निरीक्षक पक्ष की ओर सदैव आकर्षित किया जाना चाहिए।

2. आयुविज्ञान की इस शाखा में अनुदेशन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि विद्यार्थी को सामान्य स्थितियों, उनके अभिज्ञान और उपचार की जानकारी का पर्याप्त ज्ञान हो जाए।

3. प्रत्येक विद्यार्थी 20 पूर्ण-रोगीवस्त तैयार करके प्रस्तुत करेगा वह बी०एच०एम०एस० द्वितीय और तृतीय में से प्रत्येक कक्षा में दस-दस रोगीवस्त तैयार करके प्रस्तुत करेगा।

प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान के लिखित प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे अर्थात्—

प्रश्नपत्र 1—प्रसूति विज्ञान नवजात शिशु, शिशु स्वास्थ्य और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

प्रश्नपत्र 2—स्त्रीरोग विज्ञान और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

आयुविज्ञान जिस के अन्तर्गत होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र भी है।

होम्योपैथी का रोग के प्रति एक सुभिन्न दृष्टिकोण है। वह रोग की पहचान न तो उसके प्रमुख लक्षणों से और न शरीर के किसी अंग या भाग के लक्षणों से करती है। वह रोगी का समग्ररूप में उपचार करती है। रोगी के कुल लक्षणों से जो कुछ प्रकट होता है उसके अनुसार वह उपचार करती है। अतः रोगी के केवल रोग का नाम होम्योपैथी के लिए महत्वपूर्ण नहीं है।

होम्योपैथी का यह आधारभूत सिद्धान्त कि वह रोगी का उपचार करती है रोग का नहीं, विद्यार्थियों के मस्तिष्क में भली प्रकार बैठ दिया जाना चाहिए। अतः तभी सच्चे होम्योपैथी बन सकेंगे जब उक्त दृष्टिकोण उनमें समाविष्ट कर दिया जाएगा।

आयुविज्ञान मूलतः एक प्रयोगात्मक विज्ञान है और उसे रोगी की शय्या के निकट न कि कक्षा में, अधिक समझा जा सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि महाविद्यालय में विद्यार्थियों के अध्ययन के उत्तरार्ध भाग में उन्हें विस्तृत नैदानिक प्रशिक्षण दिया जाए।

(क) आयुविज्ञान के सिद्धान्तों और व्यवसाय में क्रमबद्ध अनुदेशन का पाठ्यक्रम।

(ख) नैदानिक काल के प्रथम तीन मासों में विद्यार्थी को, जब उसे रोगी का भारसाधन नहीं सौंपा जाता है, नैदानिक परीक्षा, जिसके अन्तर्गत शारीरिक लक्षण, स्टेथेस्कोपी

आपथेलमास्कोप आदि जैसे सामान्य उपकरणों का प्रयोग भी है, के प्राथमिक तरीकों का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

ग. होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र और नुस्खा लिखने की शिक्षा।

घ. सुविधा की दृष्टि से यह सुझाव है कि आयुर्विज्ञान के नैदानिक पाठ्यक्रम के दो वर्षों के दौरान निम्नलिखित रीति में अनुदेष्टन किया जाना चाहिए।

बी०एच०एम०एस० द्वितीय

अनुप्रयुक्त शरीर रचना और शरीर क्रिया विज्ञान। श्वसन तन्त्र के रोग।

पाचनतन्त्र और पेरीटोनियम के रोग। रक्त तिल्ली और लसिका ग्रन्थियों के रोग। फुसफुस क्षय रोग। अन्तः लवी तन्त्र के विकार। अनुप्रयुक्त मेटैरिया मेडिका होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

बी०एच०एम०एस० तृतीय और चतुर्थ संक्रमण रोग।

हृद बाहिका तन्त्र के रोग।

जनन-मूत्रिक तन्त्र के रोग।

लोको मोटर तन्त्र के रोग।

कुष्ठ सहित त्वचा रोग।

मनोवैज्ञानिक आयुर्विज्ञान।

द्रापीकल रोग।

शिशु और बाल रोग।

अनुप्रयुक्त मेटैरिया मेडिका होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

टिप्पण :

1. शिक्षक को चाहिए कि वह अध्ययन काल के दौरान विद्यार्थी का ध्यान उसके निरीधक पक्ष की महत्ता की ओर ही आकर्षित करें।

2. चिकित्साशास्त्र की इन शाखाओं के शिक्षण का उद्देश्य इस बाबत पर्याप्त ज्ञान कराना हो कि विद्यार्थी सामान्य स्थितियों, उनके अभिज्ञान और होम्योपैथिक उपचार से भली प्रकार परिचित ही जाए।

3. प्रत्येक विद्यार्थी 20 पूर्ण रोगीकृत तैयार करके प्रस्तुत करेगा। इनमें से 10 बी० एच० एम० एस० द्वितीय में, 10 बी० एच० एम० एस० चतुर्थ कक्षा में तैयार और प्रस्तुत किए जाएंगे।

आयुर्विज्ञान के लिखित प्रश्न पत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे :—

प्रश्न पत्र —

संक्रमक रोग, अन्तः स्त्रावी ग्रन्थि तन्त्र के विकार, चयापचय के रोग और न्यूनतम रोग। पाचन तन्त्र पेरीटो-

नियम के रोग और श्वसन तन्त्र के रोग, रक्त रोग, तिल्ली और लसिका ग्रन्थियों के रोग, द्रापीकल रोग। होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

प्रश्नपत्र 2

लोकामोटर तन्त्र के रोग, हृद-बाहिका तन्त्र के रोग, मूत्र-जननांगी तन्त्र के रोग, बाल रोग, तन्त्रिका तन्त्र रोग, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा, सामान्य त्वचा रोग, होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

होम्योपैथी रिपर्टरी

होम्योपैथी मेटैरिया मेडिका लक्षणों का एक विश्वकोष है। सभी औषधियों के सभी लक्षणों को और उनके विशिष्ट श्रेणीकरण को याद करना किसी के लिए संभव नहीं है। रिपर्टरी एक अनुक्रमणिका है, मेटैरिया मेडिका के लक्षणों का एक सूचीपत्र है और व्यवहार की दृष्टि से सुव्यवस्थित है। उसमें औषधियों का पारस्परिक श्रेणीकरण भी उपदर्शित किया गया है। उससे उपयुक्त औषधि के शीघ्र चयन में, अत्यधिक सुविधा होती है। रिपर्टरियों की सहायता के बिना होम्योपैथी व्यवसाय करना अशुभव है और सर्वोत्तम रिपर्टरी वही है जो स्वयं में पूर्ण है। इस प्रकार होम्योपैथी मेटैरिया मेडिका और रिपर्टरी दो यमल (ट्रिवन) हैं।

औषधियों और रुग्ण स्थितियों के बीच अनिवार्य संबंध ज्ञात करने के विभिन्न तरीके और कोटियां हैं और इसी कारण रिपर्टरियां भी अनेक प्रकार की हैं। उपयुक्त औषधि (सिमिलियम) खोज निकालने में प्रत्येक का अपना अपना महत्व है।

रोगीवृत्त लेना :

चिरकालिक रोगी का वृत्त लेने में कठिनाइयां। वृत्त अभिलिखित करना और अभिलेख रखने की उपयोगिता।

लक्षणों का समग्र रूप : नुस्खा लिखने के लिए लक्षण असामान्य, विशिष्ट और विचित्र लक्षण साधारण और वैयक्तिक लक्षण/विलेपन (एलीमिनेटिंग) लक्षण रोग विश्लेषण सामान्य और असामान्य लक्षण मानसिक लक्षणों की महत्ता साधारण लक्षणों के प्रकार और स्रोत अनुषंगिक लक्षण।

1. रिपर्टरियों का इतिहास।
2. रिपर्टरियों के प्रकार।
3. रोगीवृत्तों का प्रदर्शन जो बोहिगसेन पद्धति पर तैयार किए गए हों।
4. कंट रिपर्टरी—केस प्रदर्शन के साथ व्यापक अध्ययन
5. बोगर्मे बोहिगसेन रिपर्टरी—रिपर्टरी के लिए उसका योगदान।
6. 5 केसों के प्रदर्शन के साथ कांड रिपर्टरी/कांड रिपर्टरी से लाभ प्रदर्शनों सहित प्रयोगात्मक लेक्चर।

प्रयोगात्मक

विद्यार्थी और रिपॉर्टरिया

- (i) कैंट के अनुसार 15 संक्षिप्त केस।
- (ii) 10 चित्रकालिक केस (कैंट के अनुसार दीर्घ केस)।
- (iii) 5 केसों की क्राम चैकिंग।

भाग 6

परीक्षा

बी० एच० एम० एम० प्रथम परीक्षा

7. परीक्षा में प्रवेश, स्कीम परीक्षा की स्कीम आदि :

(i) किमी भी अन्डरग्रेजुएट को बी० एच० एम० एम० प्रथम परीक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा विषयों में निम्नलिखित शिक्षा पाठ्यक्रम, सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक, किसी होम्योपैथी महाविद्यालय में ऐसे विद्यालय के प्रधान को समाधान प्रद रूप में, नियमित रूप में पूरा किया हो।

संबंधित विषयों में लेक्चरों/प्रदर्शनों/प्रयोगात्मक/नैदानिक कक्षाओं/गोष्ठियों आदि की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित रूप में होगी, अर्थात् :—

विषय	सैद्धान्तिक लेक्चर/प्रदर्शन/प्रयोग/ट्यूटोरियल की कक्षाओं की संख्या	
*प्रस्तावना, जिसमें मेटीरिया 150 मेडिका और होम्योपैथी + 100 दर्शन सम्मिलित है	250 घंटे	50 घंटे
शरीर रचना विज्ञान	200 घंटे	450 घंटे
जीव रसायन सहित शरीरश्रिया विज्ञान	250 घंटे	400 घंटे
होम्योपैथी भेषजी	50 घंटे	100 घंटे

*होम्योपैथी के प्रादुर्भाव के प्रति विशिष्ट निर्देश करते हुए विद्यार्थियों को सामान्यतया, आयुर्विज्ञान के इतिहास के बारे में प्रारम्भिक लेक्चर दिए जाने चाहिए। आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में हेनीमनक सामान्य योगदान, हेनीमन की जीवनी, भारत में होम्योपैथी के विकास के इतिहास, होम्योपैथी में विभिन्न विचारधाराओं और उनके तर्कपूर्ण मूल्यांकन, विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के मौलिक सिद्धान्तों के तुलनात्मक अध्ययन, शरीर रचना विज्ञान, शरीर श्रिया विज्ञान, शरीर विकृति विज्ञान जैसे आधुनिक आयुर्विज्ञानों की प्रस्तावना, उनके पारस्परिक संबंधों और नैदानिक विषयों के लिए उनकी सुसंगतता, होम्योपैथी व्यवसाय में जीव रसायन और विकृति विज्ञान के महत्व (उदाहरणार्थ, नैदानिक सामग्रियों

का प्रदर्शन), होम्योपैथिक दर्शन की रूपरेखा, स्वस्थ और रोग होने पर ममत्र मानव के अध्ययन, सामान्यतया प्रयुक्त कुछ महत्वपूर्ण औषधियों के औषध-स्वरूपों के उदाहरणों सहित मेटीरिया मेडिका के दर्शन की प्रस्तावना तथा उसके अध्ययन, चिकित्सीय, शल्य चिकित्सीय और स्त्री रोग विज्ञान संबंधी रोगों के प्रति समाकलित दृष्टिकोण, कुछ आम प्रयोग की आधुनिक औषधियों के भेषजिक प्रभाव के परिचय, जिसमें त्रि: विद्यार्थियों को उन आधुनिक औषधियों से होने वाले चिकित्साजन्य रोगों के बारे में कुछ ज्ञान हो जाए, जीव-सांख्यिकी की प्रस्तावना, तर्क-मनोविज्ञान और मनोविकार चिकित्सा के संक्षिप्त अध्ययन, परिवर्तनशील समाज में चिकित्सक की भूमिका, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण की आवश्यकताओं तथा उनके कार्यक्रमों के बारे में भी विद्यार्थियों को प्रारम्भिक लेक्चर दिए जाने चाहिए।

महत्वपूर्ण औषधियों के औषधि-स्वरूपों तथा होम्योपैथी दर्शन की सहायता में होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

बी० एच० एम० एम० प्रथम परीक्षा बी० एच० एम० एम० प्रथम पाठ्यक्रम के 16 मास के पश्चात् परीक्षा ली जानी चाहिए।

(ii) परीक्षा, लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक होगी।

(क) होम्योपैथी भेषजी की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक प्रयोगात्मक परीक्षा तथा एक मौखिक परीक्षा होगी।

(ख) शरीर रचना विज्ञान की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होगी।

(ग) शरीर श्रिया विज्ञान की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होगी।

(घ) मेटीरिया मेडिका और होम्योपैथी दर्शन की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र और एक मौखिक परीक्षा होगी।

प्रत्येक विषय के सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा।

(iii) जो अभ्यर्थी किसी विषय में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेगा उसे उस विषय में विशेष योग्यता (आनर) प्राप्त घोषित किया जाएगा परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा एक बार में उत्तीर्ण कर ली हो।

(iv) बी० एच० एम० एम० प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अभ्यर्थी को सभी परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।

(v) होम्योपैथी और संबद्ध सभी चिकित्सा विषयों में उत्तीर्ण-अंक प्रत्येक परीक्षा में (लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक) 50 प्रतिशत होंगे।

(vi) प्रत्येक विषय के लिए पूर्णांक और उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक निम्नलिखित होंगे अर्थात्:—

विषय	लिखित	मौखिक	प्रयोगात्मक	योग पूर्णांक उत्तीर्णांक
भेषजी (फार्मसी)	100 50	50 25	50 25	200 100
शरीर रचना विज्ञान	200 100	100 50	100 50	400 200
शरीर क्रिया विज्ञान और जीवरसायन				
मैटोरिया मेडिका और होम्योपैथी	200 100	100 50	100 50	400 200
दर्शन (परिशिष्ट 1 से 29 पीपीकेस्ट	100 50	50 25	- -	200 100
ग्रोवधिया अपभिन है, आर्गेनन सूत्र 1 से 145 तक)				

बी० एच० एम० एस० द्वितीय परीक्षा :

8. (i) किसी भी अभ्यर्थी को बी० एच० एम० एस० द्वितीय परीक्षा में प्रवेश तभी दिया जाएगा जब उसने:—

- (क) बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा कम से कम एक वर्ष पूर्व उत्तीर्ण कर ली हो; और
- (ख) बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् किसी मान्यताप्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालय में उस महाविद्यालय के प्रधान को समाधान-प्रद रूप में, सभी परीक्षा विषयों में, कम से कम एक वर्ष का निम्नलिखित पाठ्यक्रम, सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक, नियमित रूप में पूरा किया हो।

(ii) संबंधित विषयों में लेक्चरों, प्रदर्शनों और प्रयोगात्मक/सैदानिक कक्षाओं की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित होगी अर्थात्:—

विषय	सैद्धान्तिक	प्रयोगात्मक/ सैदानिक/ ट्यूटोरियल कक्षाएं
(1)	(2)	(3)
विकृति विज्ञान, जीवाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान	150	50
व्यवहार आयुर्विज्ञान और विषय विज्ञान	50	20
सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान (जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा और आनु- वंशिक आयुर्विज्ञान सम्मि- लित है)	150	100
मैटोरिया मेडिका	50	70
आर्गेनन और होम्योपैथी दर्शन	125	100

(iii) बी० एच० एम० एस० द्वितीय परीक्षा, बी० एच० एम० एस० पाठ्यक्रम के ढाई वर्ष की समाप्ति पर ली जाएगी।

(iv) परीक्षा, इसमें बताएं गए रूप में लिखित, मौखिक, प्रयोगात्मक और या नैदानिक होगी, प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा।

(v) विकृति विज्ञान, जीवाणुविज्ञान और परजीवी विज्ञान की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र और एक मौखिक परीक्षा होगी जिसमें सूक्ष्म दर्शी और सूक्ष्मदर्शी-निर्देशों पर प्रश्न भी सम्मिलित होंगे।

(vi) स्वास्थ्य शिक्षा और आनुवंशिक आयुर्विज्ञान सहित सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक निदर्श स्पार्टिंग तथा पहचान के बारे में परीक्षा होगी।

(vii) व्यवहार आयुर्विज्ञान और विषय विज्ञान की परीक्षा में, एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक निदर्श—स्पार्टिंग तथा अभिज्ञान संबंधी परीक्षा होगी।

(viii) होम्योपैथी मैटोरिया मेडिका की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होगी।

(ix) आर्गेनन की परीक्षा में, एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।

(x) जो अभ्यर्थी किसी भी विषय में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेगा उसे उस विषय में विशेष योग्यता (आनर) प्राप्त घोषित किया जाएगा परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा एक बार में उत्तीर्ण कर ली हो।

(xi) बी० एच० एम० एस० द्वितीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अभ्यर्थी को सभी परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।

(12) द्वाय्योपैथी और संबद्ध तमो निरिक्षा विषया में उत्तीर्ण-अंक, प्रत्येक परीक्षा में (लिखित, मौखिक और परीगात्मक) 50 प्रतिशत होंगे।

(13) प्रत्येक विषय में पूर्णांक और उत्तीर्णांक हानि के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक निम्नलिखित होंगे, अर्थात्:—

विषय	लिखित		मौखिक		प्रयोगात्मक		योग	
							पूर्णांक	उत्तीर्णांक
विकृति विज्ञान-व्यवहार आयुर्विज्ञान और विष-विज्ञान	100	50	50	25	50	25	200	100
सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान (स्वास्थ्य शिक्षा और और आनुवंशिक आयुर्विज्ञान सहित)	100	50	50	25	50	25	200	100
मेटोरिया मेडिका	100	50	50	25	50	25	200	100
आर्गेनन और होम्योपैथिक दर्शन	100	50	50	25	50	25	200	100

बी०एच०एम०एस० तृतीय परीक्षा

9. (1) किसी अभ्यर्थी को बी०एच०एम०एस० तृतीय परीक्षा में तमो प्रवेश दिया जाएगा जब उसने:—

- (क) बी०एच०एम०एस० द्वितीय परीक्षा कम से कम एक वर्ष पूर्व उत्तीर्ण करली हो; और
- (ख) बी०एच०एम०एस० प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् किसी मान्यताप्राप्त होम्योपैथी महा-विद्यालय में, उस महाविद्यालय के प्रधान को समाधानप्रश्न रूप में सभी परीक्षा विषयों में कम से कम दो वर्ष का निम्नलिखित पाठ्यक्रम-सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक-नियमित रूप में पूरा किया हो।

(2) संबंधित विषयों में लेक्चरों, प्रदर्शनों और प्रयोगात्मक नैदानिक कक्षाओं की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित होगी, अर्थात्:—

विषय		
1. शल्य क्रिया, जिसमें कर्ण, नासा, कंठ, नेत्र, दन्त और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र सम्मिलित है।	200 (दो वर्षों में)	150—शल्य क्रिया बाई और बहिर्ग विभाग में तीन-तीन मास के दो सत्र।
2. प्रसूतिविज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान, शिशु स्वास्थ्य और होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र।	200 (दो वर्षों में)	150—प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान बाई तथा बहिर्ग विभाग में होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र में तीन-तीन मास के दो सत्र।
3. मेटोरिया मेडिका	200 (दो वर्षों में)	75
4. आर्गेनन और दर्शन	250 (दो वर्षों में)	100

(3) बी०एच०एम०एस० तृतीय परीक्षा, बी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के साठे तीन वर्ष की समाप्ति पर ली जाएगी।

(4) परीक्षा, इसमें उपबन्धित रूप में लिखित, मौखिक, प्रयोगात्मक और या नैदानिक होगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा।

(5) शल्यक्रिया की परीक्षा के दो सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक नैदानिक परीक्षा होगी। प्रत्येक विद्यार्थी को नैदानिक परीक्षा के लिए कम से कम एक घंटे का समय दिया जाएगा जिसमें वह किसी विशिष्ट रोगी के मामले में शल्यक्रिया संबंधी उपचार की आवश्यकता तथा होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र के प्रविषय के प्रति विशिष्ट निर्देश करते हुए, अपने रोगियों की परीक्षा करेगा और उनकी रिपोर्ट देगा।

(6) प्रयोगात्मक परीक्षा, जिसमें शल्यक्रिया संबंधी उपकरणों तथा अन्य साधनों के प्रयोग पर प्रश्न ऐसी परीक्षा के विशेष भाग होंगे।

(7) प्रसूति विज्ञान, स्त्री रोग विज्ञान और शिशु स्वास्थ्य की, जिसमें नवजात के रोग सम्मिलित हैं, परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा जिसमें शरीर विकृति संबंधी निर्देश, मोडेल और एक्सरे फिल्मों पर तथा उपकरणों एवं साधनों पर भी, प्रश्न पूछे जाएंगे और एक नैदानिक परीक्षा होगी जिनके लिए प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम एक घंटे का समय दिया जाएगा जिसमें वह होम्योपैथी दृष्टिकोण में औषधि वर्गीकरण विज्ञान और चिकित्सा शास्त्रीय निदान के प्रति निर्देश करते हुए, अपने रोगियों की (एक प्रसूति रोग का और एक स्त्री रोग का) परीक्षा करेगा और उनकी रिपोर्ट देगा।

(8) मेटोरिया मेडिका की परीक्षा में, एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। इस प्रयोगात्मक परीक्षा में विद्यार्थी एक एक करके दो रोगियों की परीक्षा करेगा। प्रत्येक रोगी के लिए कम से कम आधे घंटे का समय दिया जाएगा जिसमें विद्यार्थी उसकी परीक्षा करेगा और उस पर अपनी रिपोर्ट देगा।

(9) आर्गेनन की परीक्षा में, दो सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और शल्यक्रिया प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। प्रयोगात्मक परीक्षा दीर्घकालिक रोगों की बाबत होगी।

जिसमें, रोगीवृत्त लेने, लक्षणों का मूल्यांकन करने और उपचारार्थ मार्गदर्शन के लिए, आर्गेनन के निदानों को लागू किया गया है, ऐसे रोगी की परीक्षा करने और उस पर रिपोर्ट देने के लिए, कम से कम दो घंटे का समय दिया जाएगा।

(10) जो अभ्यर्थी किसी विषय में 75% या उससे अधिक अंक प्राप्त करेगा उसे उस विषय में विशेष योग्यता (आन्तर) प्राप्त घोषित किया जाएगा परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा एक बार में उत्तीर्ण कर ली हो।

(11) बी०एच०एम०एस० तृतीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अभ्यर्थी को सभी परीक्षा-विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।

(12) होम्योपैथी और संबद्ध सभी चिकित्सा विषयों में उत्तीर्ण अंक प्रत्येक परीक्षा में (लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक) 50% होंगे।

(13) प्रत्येक विषय के लिए पूर्णांक और उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक-न्यूनतम अंक, निम्नलिखित होंगे, अर्थात् :-

विषय	लिखित		मौखिक		प्रयोगात्मक		योग	
	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
शल्यक्रिया	200	100	100	50	100	50	400	200
प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान	200	100	100	50	100	50	400	200
आर्गेनन और होम्यो० दर्शन	200	100	100	50	100	50	400	200
मेटिरिया मेडिका	100	50	100	50	100	50	300	150

बी०एच०एम०एस० चतुर्थ परीक्षा

	1	2	3
त्वचा रोग (होम्योचिकित्सा शास्त्र सहित)		20	
2. होम्योपैथी मेटिरिया मेडिका	200		125 (एक वर्ष में)
3. रिपोर्टरी	100		150 (तीन वर्षों में)

10. (1) किसी अभ्यर्थी को बी०एच०एम०एस० चतुर्थ परीक्षा में नमी प्रवेश दिया जाएगा जब उसने,--

(क) बी०एच०एम०एस० तृतीय परीक्षा कम से कम एक वर्ष पूर्ण उत्तीर्ण कर ली हो, और

(ख) बी०एच०एम०एस० प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् किना मान्यताप्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालय में, उस महाविद्यालय के प्रधान को समाधानप्रश्न रूप में, सभी परीक्षा विषयों में कम से कम तीन वर्षों का निम्नलिखित पाठ्यक्रम सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक-निर्दिष्ट रूप में पूरा किया हो।

(2) संबंधित विषयों में लेक्चरों, प्रदर्शनों और प्रयोगात्मक/नैदानिक कक्षाओं की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित होगी, अर्थात् :-

विषय	सैधरहित	प्रयोगात्मक/नैदानिक/ ट्यूटोरियल कक्षाएं
(1)	(2)	(3)
1. औपचि अभ्यास (प्रीक्टिस अफ मेडिसिन)	250 (तीन वर्षों में)	400 (होम्योपैथी बोर्ड और बहिरंग विभाग, जिसके अंतर्गत बाल, मानसिक और त्वचा- रोग विभाग भी हैं, में तीन तीन मास के तीन सत्र)
बाल रोग	40	
मानसिक रोग और	40	

(iii) बी०एच०एम०एस० चतुर्थ परीक्षा, बी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के 4½ वर्ष की समाप्ति पर ली जाएगी।

(iv) परीक्षा, इसमें बताए गए रूप में, लिखित, मौखिक प्रयोगात्मक या नैदानिक होगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा।

(v) चिकित्सा परीक्षा (जिसमें बाल, मानसिक और त्वचा चिकित्सा सम्मिलित है) के दो प्रश्नपत्र होंगे—एक मौखिक परीक्षा और एक शय्यागत प्रयोगात्मक परीक्षा। प्रयोगात्मक परीक्षा में दो साधारण रोगियों का रोगवृत्त लेकर और होम्योपैथी वृष्टिकोण से रोगवर्गीकरण और चिकित्सीय निदान का अवधारण किया जाएगा। प्रत्येक रोगी के लिए आधे घंटे का समय दिया जाएगा।

(vi) मेटिरिया मेडिका की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक शय्यागत प्रयोगात्मक परीक्षा होंगी। प्रयोगात्मक परीक्षा में रोगी की परीक्षा करने और उस पर अपनी रिपोर्ट देने के लिए कम से कम दो घंटे का समय दिया जाएगा।

(vii) रिपटरी की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और रिपटरी कार्य संबंधी दो रोगियों के बारे में एक-प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।

(viii) जो अभ्यर्थी किसी विषय में 75% या उससे अधिक अंक प्राप्त करेगा उसे उस विषय में विशेष योग्यता (आनर) प्राप्त अभ्यर्थी घोषित किया जाएगा परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा एक बार में उत्तीर्ण कर ली हो।

(ix) बी०एच०एम०एस० तृतीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अभ्यर्थी को सभी परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।

(x) सभी विषयों में होम्योपैथी और अन्य संबद्ध विषयों में—उत्तीर्ण अंक (विषय के प्रत्येक भाग में) 50% होंगे।

(xi) प्रत्येक विषय में पूर्णांकों तथा उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम अंकों की संख्या निम्नलिखित होगी, अर्थात्:—

विषय	लिखित		मौखिक		प्रयोगात्मक		योग	
	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
औषधि	200	100	100	50	100	50	400	200
होम्योपैथी, मैटीरिया, मेडिका	200	100	100	50	100	50	400	200
रिपटरी	100	50	50	25	50	25	200	100

(xii) परीक्षाफल और पुनः प्रवेश : (i) परीक्षा में प्रवेश के लिए प्रत्येक विद्यार्थी परीक्षा के प्रारंभ की तारीख से कम से कम 21 दिन पूर्व, संबंधित प्राधिकारी को परीक्षा फीस सहित विहित प्ररूप में अपना आवेदन पत्र भेजेगा;

(ii) परीक्षा निकाय परीक्षा के पश्चात् यथा सम्भव शीघ्र सफल विद्यार्थियों की निम्नलिखित रीति से क्रमबद्ध एक सूची प्रकाशित करेगा अर्थात्:—

(क) योग्यताक्रम में प्रथम दस विद्यार्थियों के नाम और रोल नम्बर, और

(ख) अन्य विद्यार्थियों के क्रमबद्ध रोल नम्बर।

(iii) प्रत्येक विद्यार्थी को परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर संबंधित परीक्षा निकाय द्वारा विहित प्ररूप में एक प्रमाणपत्र दिया जाएगा।

(iv) यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में बैठता है किन्तु किसी विषय या विषयों में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो उसे प्रथम परीक्षाफल के प्रकाशन की तारीख से छह सप्ताह के पश्चात् परीक्षा के उस भाग के विषय या विषयों में, जिनमें वह उत्तीर्ण नहीं हो पाया है अनुपूरक परीक्षा देने की अनुज्ञा दी जा सकती है। इसके लिए उसे विहित परीक्षा फीस और प्ररूप में आवेदन देना होगा।

(v) यदि अनुपूरक या पश्चात्बर्ती परीक्षा में विद्यार्थी उस विषय या विषयों में उत्तीर्ण-अंक (पास मार्क्स) प्राप्त कर लेता है तो उसे संपूर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित कर दिया जाएगा।

(vi) यदि वह ऐसी अनुपूरक परीक्षा में संबंधित विषय या विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो वह अगली वार्षिक परीक्षा में उस विषय या उन विषयों में पुनः बैठ सकता है, किन्तु यह तब जब वह इस भाव का प्रमाणपत्र (विनियमों के अधीन अपेक्षित प्रमाणपत्र के अतिरिक्त) प्रस्तुत करे कि उसने अनुत्तीर्ण हुए विषय या विषयों में आगामी शैक्षिक वर्ष के दौरान अतिरिक्त अध्ययन पाठ्यक्रम प्रधानाचार्य को समाधान-प्रद रूप में पूरा कर लिया है; परन्तु शर्त यह है कि परीक्षा

के सभी भाग उस तारीख से जिसको संपूर्ण परीक्षा पहली बार हुई थी चार बार में (अनुपूरक सहित) उत्तीर्ण कर लिए जाएं।

(vii) यदि कोई विद्यार्थी विहित चार बार में सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उसे महाविद्यालय के प्रधान को संतोषप्रद रूप में सभी भागों के सभी विषयों में एक वर्ष का अतिरिक्त अध्ययन पाठ्यक्रम पूरा करना होगा तथा सभी विषयों की परीक्षा देनी होगी।

परन्तु बी०एच०एम०एस० चतुर्थ परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थी को विहित बारी के अंत में केवल एक विषय ही उत्तीर्ण करना हो तो उसे उस विशिष्ट विषय में आगामी परीक्षा में बैठने की अनुज्ञा दे दी जाएगी और उसे यह परीक्षा इस विशेष बारी में पूरी करनी होगी।

(viii) साधारणतया सभी परीक्षाएं ऐसी तारीखों को, स्थानों और समयों पर की जाएंगी जो परीक्षा प्राधिकारी निश्चित करें।

(ix) परीक्षा प्राधिकारी, असाधारण परिस्थितियों में, अपने द्वारा ली गई किसी भी परीक्षा को पूर्णतः या भागशः रद्द कर सकता है किन्तु यह तब जब वह इसकी सूचना होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् को दे दे और उन विषयों में पुनः परीक्षा की व्यवस्था ऐसे रद्दकरण की तारीख से तीस दिन के भीतर कर दे।

9. परीक्षक : (1) ऐसे किसी व्यक्ति को जिसके पास चार वर्ष के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त होम्योपैथी में डिप्लोमा या कोई डिग्री नहीं है अथवा ऐसे व्यक्ति को जिसके पास तृतीय अनुसूची में उल्लिखित अर्हताएं नहीं हैं किसी भी बी०एच०एम०एस० (श्रेणीकृत डिग्री) पाठ्यक्रम की वृत्तिक परीक्षा के आयोजन के लिए आंतरिक या बाह्य परीक्षक के रूप में या प्रश्नपत्र सेटर के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा :

परन्तु—

- (क) किसी भी व्यक्ति को आंतरिक परीक्षक के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा यदि उसे संबंधित विषय में तीन वर्ष का अध्यापन अनुभव नहीं है,
- (ख) आन्तरिक परीक्षक के रूप में ऐसे व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया जाएगा जो डिग्री स्तर की किसी संस्था में संबंधित विषय का उपाचार्य (रीडर) सहायक आचार्य (असिस्टेंट प्रोफेसर) की पंक्ति से नीचे का है,
- (ग) किसी भी व्यक्ति को किसी संबद्ध चिकित्सा विषय के बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा जब उसके पास होम्योपैथी (शिक्षा के न्यूनतम मानक) विनियम 1980 के उपाबंध 'ख' के अनुसार किसी शिक्षक पद पर नियुक्ति के लिए यथा अपेक्षित मान्यताप्राप्त चिकित्सीय अर्हताएं हैं,
- (घ) बाह्य परीक्षक केवल होम्योपैथी महाविद्यालयों और आधुनिक आयुर्विज्ञान महाविद्यालयों के शिक्षकों में से ही लिए जाएंगे,
- (ङ) बाह्य परीक्षकों में से कम से कम एक-तिहाई बाह्य परीक्षक होम्योपैथी या आधुनिक औषधियों में चिकित्सा वृत्ति करने वाले ऐसे चिकित्सकों में से लिए जाएंगे, जो परीक्षा प्राधिकारी की राय में ख्यातिप्राप्त चिकित्सक हैं और जिन्होंने भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम 1956 के अधीन मान्यताप्राप्त कोई होम्योपैथी अर्हता या आयुर्विज्ञान अर्हता प्राप्त कर ली है,
- (च) जो व्यक्ति सरकारी नियोजन में हैं उन्हें भी बाह्य परीक्षकों के रूप में नियुक्ति के लिए विचार में लिया जा सकता है परन्तु यह तब जब उनके पास ऊपर उप-विनियम (ङ) में विनिर्दिष्ट आयु-विज्ञान-अर्हता हो,
- (छ) किसी प्रश्नपत्र सेटर को आंतरिक या बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्त किया जा सकता है ।
- (ii) प्रश्नपत्रों के परिनिर्णयन (माडरेशन) के लिए परीक्षा निकाय केवल एक या तीन से अधिक परिनिर्णयक नियुक्त कर सकता है ।
- (iii) मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षाएं संबंधित आंतरिक और बाह्य परीक्षक पारस्परिक सहयोग से लेंगे । उनमें से प्रत्येक को पूर्ण अंकों में से 50 प्रतिशत तक अंक देने का हक होगा तथा वे परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों को, परीक्षा में साबित हुई योग्यताओं के अनुसार इन्हीं अंकों में से अंक आवंटित करेंगे । इस प्रकार तैयार की गई अंक तालिका पर दोनों परीक्षक हस्ताक्षर करेंगे । प्रत्येक परीक्षक को अलग से तैयार की गई और स्व हस्ताक्षरित अंक-तालिका परीक्षा

प्राधिकारी को अलग से भेजने का हक होगा । परीक्षा प्राधिकारी इस प्रकार भेजी गई अंक-तालिकाओं पर विचार करेगा किन्तु उसे परीक्षाफल की घोषणा इन अंक-तालिकाओं के आधार पर ही करनी होगी ।

(iv) प्रत्येक होम्योपैथी महाविद्यालय परीक्षाओं के संचालन के लिए आंतरिक और बाह्य दोनों परीक्षकों को सभी सुविधाएं देगा और आंतरिक परीक्षक परीक्षाएं जी जाने के लिए सभी तैयारी करेगा ।

(v) बाह्य परीक्षक को यह हक होगा कि वह परीक्षा प्राधिकारी को होम्योपैथी महाविद्यालय द्वारा भी गई सुविधाओं में ऐसी कमियों या त्रुटियों को सूचित करे जो उसने देखी हों या जो उसके मतानुसार विद्यमान रही हों ।

(vi) वह अपनी उक्त सूचना की एक प्रति केन्द्रीय परिषद् को भी ऐसी कार्रवाई को जाने के लिए भेजेगा, जैसी केन्द्रीय परिषद् ठीक समझे ।

पी०एल० वर्मा, सचिव

CENTRAL COUNCIL OF HOMOEOPATHY NOTIFICATION

New Delhi, the 11th May, 1983

No. 7-1/83/CCH.—In exercise of the powers conferred by clauses (i), (j) and (k) of section 33 and sub-section II of Section 20 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973), the Central Council of Homoeopathy, with the previous sanction of the Central Government hereby make the following regulations, namely :—

PART I

Preliminary

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Gazette of India.

2. Definitions.—In these regulations, unless the context otherwise requires—

(i) "Act" means the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973);

(ii) "Courses" means the Course of study in Homoeopathy, namely :—

(a) D.H.M.S. (Diploma in Homoeopathic Medicine and Surgery) course; and

(b) B.H.M.S. (Bachelor of Homoeopathic Medical and Surgery) Course;

(iii) "Diploma" means a Diploma in Homoeopathy as defined in clause (iii) of regulation 2 of the Homoeopathy (Diploma Course) Regulations, 1983;

(iv) "Degree" means a Degree in Homoeopathy provided in regulation 3 of these regulations or a

Degree as defined in clause (iv) of regulation 2 of the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983 ;

(v) "Homoeopathic College" means a Homoeopathic College affiliated to a Board or a University and recognised by the Central Council ;

(vi) "Inspector" means a Medical Inspector appointed under sub-section (1) of section 17 of the Act ;

(vii) "President" means the President of the Central Council ;

(viii) "Second Schedule" and "Third Schedule" means the Second Schedule and Third Schedule respectively of the Act ;

(ix) "Syllabus" and "Curriculum" means the Syllabus and Curriculum for different Courses of study as specified by the Central Council under these regulations, the Homoeopathy (Diploma Course) Regulations, 1983 and the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983 ;

(x) "Teaching experience" means teaching experience in the subject concerned in a Homoeopathic College or in a Hospital recognised by the Central Council ;

(xi) "Visitor" means a Visitor appointed under sub-section (1) of section 18 of the Act.

3. Courses of Study :

(i) The Degree Course of B.H.M.S. (Degree) shall comprise a Course of study consisting of Curriculum and Syllabus provided in these regulations spread over a period of 5½ years, including compulsory Internship of one year duration after passing the Final Degree Examination ;

(ii) The Internship shall be undertaken at the Hospital attached to the College and in cases where such Hospitals cannot accommodate all of its students for Internship, such students may undertake their Internship in a Hospital or dispensary run by the Central Government or State Government, or local bodies ;

(iii) At the completion of the internship of the specified period and on the recommendation of the head of the Institution where Internship was undertaken, the concerned State Board or University, as the case may be, shall issue the degree to the successful candidate ;

PART III

Admission to Course

4. Minimum qualification.—No candidate shall be admitted to the B.H.M.S. (Degree) Course unless he has—

- (a) passed the Intermediate Science or its equivalent examination with Physics, Chemistry and Biology as his subjects ;
- (b) Attained the age of 17 years on or before 31st December of the year of his admission to the first year of the course.

PART IV

The Curriculum

5. Subjects.—Subjects for study and examination of the B.H.M.S. (Degree) Course, shall be as under—

- (i) Anatomy,
- (ii) Physiology,
- (iii) Organon of Medicine,
- (iv) Chronic diseases and Homoeopathic philosophy,
- (v) Fundamentals of psychology and logic,
- (vi) Case-taking and homoeopathic repertorisation,
- (vii) Homoeopathic Pharmacy,
- (viii) Homoeopathic materia medica,
- (ix) Pathology, bacteriology and parasitology,
- (x) Social and preventive medicine including health education and family medicine,
- (xi) Forensic Medicine,
- (xii) Practice of Medicine and paediatrics,
- (xiii) Obstetrics and gynaecology,
- (xiv) Surgery including E.N.T. and ophthalmology,
- (xv) Homoeopathic therapeutics, and
- (xvi) History of medicine.

PART V

Syllabus

6. Syllabus for Direct Degree Course.—Following shall be syllabus for B.H.M.S. (Direct Degree) Course :

PREFACE

A direct degree course is ultimately to be the pattern of uniform homoeopathic education in India, though for various reasons the diploma course and the graded degree course have to be continued for some time.

As the direct degree course is now being introduced wherever possible, a good number of degree colleges dotted all over the country may soon be expected. As this course will thus in time set the standard of homoeopathic education and practice in India, it is of the utmost importance that the syllabus expected to fulfil this object should be designed accordingly.

An endeavour has therefore been made in the following syllabus to ensure that the requisite type of education is imparted by the degree colleges to their students.

**FIRST B.H.M.S. EXAMINATION
HOMOEOPATHIC PHARMACY**

Theoretical

1. Introduction.—Homoeopathic Pharmacy its speciality and originality, Hom. Pharmacopoeia.
2. Scope of Homoeopathic Pharmacy in relation to :—
 - (1) Organon of Medicine (Aph 264 to 285 organon of medicine).
 - (2) Materia Medica.
 - (3) National Economy.
3. Weights and measures including Hom. Scales (Deci. Centi. Milli).
4. Homoeopathic pharmaceutical instruments and appliances.
5. Sources of Homoeopathic Drugs, process of collection of drugs substances, identification, purification, preservation and also preservation of potentised drugs.
6. Vehicles—
 - (1) their preparation and uses.
 - (2) purification.
 - (3) determination of proof strength of alcohol.
7. Methods of preparation of drugs from organic and inorganic chemicals, vegetables, animals and animal products, disease products (Nosodes) etc. (Hahnemann's classical and modern methods including merits and demerits).
8. (a) Methods of preparation of mother tinctures, solutions potencies and trituration.
 - (b) Potentisation of drugs on :—
 - (i) Decimal scale.
 - (ii) Centesimal scale.
9. Fluxion potency—methods of conversion of trituration into liquid form—straight potency.
10. External application—its scope—modes of preparation and uses, lotion, Liniment, glycerole, ointment.
11. Prescription—its study including abbreviations—principles and mode of prescription writing and its validity.
12. Pharmacology—Drug strength—Hom Pharmacodynamics—Dynamic Power—Medicine—Posology—Remedy.
13. Brief study of standardisation of drugs and vehicles.
14. General knowledge of legislation in relation to Homoeopathic pharmacy.
15. General laboratory methods solutions, dilution, Decantation, precipitation, filtration, distillation, crystallisation, sublimation, percolation etc.

16. Study of biological/mechanical and/or chemical characteristics of some important drug substances.

17. The technique of Homoeopathic drug proving.

PRACTICAL

1. Identification and uses of Homoeopathic Pharmaceutical instruments and appliances and their cleaning.
2. Identification of important Homoeopathic drugs (vide list attached).
 - (a) Microscopic—
 - (i) At least 30 drugs substances—20 from vegetable kingdom and 10 from minerals and chemicals ;
 - (ii) Collection of 30 drugs substances for her barium ;
 - (iii) Microscopic study of two triturations upto 3X potency.
3. Estimation of moisture constant of one drug substance with water bath.
4. Purity test of ethyl-alcohol, distilled water, sugar of milk including determination of sp. gravity of dist. water and alcohol.
5. Estimation of size of globule—its medication, estimation of milk sugar and Dist. water—making of doses.
6. Preparation of dispensing and dilute alcohol solutions and dilutions.
7. Preparations of mother tinctures of 3 polychrests.
8. Preparations of triturations of 3 crude drugs upto 3X.
9. Preparations of mother tinctures of drugs which do not conform to the D.S.I.
10. Potentisation of 3 mother tinctures upto 6 decimal scale and 3 centesimal scale.
11. Trituration of 3 drugs 6X and their conversion into liquid potencies.
12. Preparation of external application—one each.
13. Writing of prescriptions and dispensing of the same.
14. Laboratory Methods :—
 - (a) Sublimation.
 - (b) Distillation.
 - (c) Decantation.
 - (d) Filtration.
 - (e) Crystallisation.
 - (f) Percolation.
15. Visit to a Homoeopathic Laboratory to study the manufacture of drugs on a large scale.

LIST OF DRUGS FOR IDENTIFICATION

1. Aconitum Nap.
2. Agaricus M.
3. Antimonium Tart.
4. Apis Mellifica.
5. Argentum Nitric.
6. Arnica Montana.
7. Arsenicum Alb.
8. Aurum Met.
9. Baptisia T.
10. Baryta Carb.
11. Belladonna.
12. Bryonia Alb.
13. Cactus G.
14. Calcarea Carb.
15. Calcarea Phos.
16. Calendula.
17. Camphor.
18. Cantheris.
19. Carbo Vegetabilis.
20. Causticum.
21. Chamomilla.
22. Chelidonium M.
23. China.
24. Cina.
25. Cocculus I.
26. Colchicum A.
27. Colocynthis.
28. Conium M.
29. Cuprum Met.
30. Digitalis P.
31. Drosera.
32. Dulcamara.
33. Glonoine.
34. Graphites.
35. Hepar Sul.
36. Hyoscyamus.
37. Hypericum.
38. Ignatia.
39. Ipecacuanha.
40. Kali Carb.
41. Lachesis.
42. Lycopodium.
43. Mercurius Cor.
44. Mercurius Sol.
45. Mezerium.
46. Natrum Mur.
47. Nitric Acid.
48. Nux Vomica.
49. Opium.
50. Phosphorus.
51. Phosphoric Acid.
52. Platina M.
53. Plumbum M.
54. Pulsatilla.
55. Rhus Tox.
56. Ruta G.
57. Sambucus N.
58. Sanguinaria C.
59. Secale Cor.
60. Sepia.
61. Silicea.
62. Spigelia.
63. Spongia T.
64. Stannum Met.
65. Stramonium.
66. Sulphur.
67. Tarentula Hisp.
68. Thuja O.
69. Vertrum Album.
70. Veratrum Viride.
71. Zincum Met.

ANATOMY AND PHYSIOLOGY

Study of Normal Man in Preclinical Period

Human anatomy is the most difficult of all sciences to study. Man is a conscious mentalised, living being and functions as a whole. Human knowledge has become so vast that for precise comprehension of man as a whole development of different branches of science like anatomy, physiology and psychology was necessary. But such a division is only an expedient, man nevertheless remains indivisible.

Consciousness, life and its phenomena cannot be explained in terms of cell physiology or of quantum mechanics, nor by physiological concepts which in their turn are based on chemico-physical concepts.

Though anatomy and physiology are hitherto being taught as entirely different subjects, a water-tight barrier should not be erected between them, structure (anatomy) and function (physiology) are but correlated aspects and the physio-chemical processes are but an external expression of an inexplicable phenomenon which is life.

So anatomy and physiology should be taught with the following aims :

(i) to provide for the understanding of the morphological, physiological and psychological principles which determine and influence the organism of the living body as a functioning unit ;

(ii) to correlate and interpret the structural organism and normal physiology of the human body and thus to provide the data on which to anticipate disturbances of functions ;

(iii) to enable the student to recognise the anatomical, physiological and psychological basis of the clinical signs and symptoms of disorders due to injury, disease and maldevelopment ;

(iv) Similarly, to give the student to understand the factors involved in the development of pathological

processes and the possible complications which may arise therefrom ;

(v) to give the student such knowledge of pre-clinical subjects as will enable him ultimately to employ competently and rationally all the ordinary methods of examination and treatment (including surgery) that may involve such knowledge ; and

(vi) for enabling the student to pick out strange, rare and uncommon symptoms from pathognomonic symptoms for individualisation of patients and drugs for the purpose of applying the law of similars in homoeopathic practice.

ANATOMY

Instruction in anatomy should be so planned as to present a general working knowledge of the structure of the human body. The amount of detail which he is required to memorise should be reduced to the minimum. Major emphasis should be laid on functional anatomy of the living subject rather than on the static structures of the cadaver, and on general anatomical positions and broad relations of the viscera, muscles, blood-vessels, nerves and lymphatics. Study of the cadaver is only a means to this end. Students should not be burdened with minute anatomical details which have no clinical significance.

Though dissection of the entire body is essential for the preparation of the student for his clinical studies, the burden of dissection can be reduced and much saving of time can be effected, if considerable reduction of the amount of topographical details is made and the following points are taken into consideration.

1. Only such details as have professional or general educational value for the medical student should be presented to him.

2. The purpose of dissection is not to create technically expert prosector but to give the student an understanding of the body in relation to its function, and the dissection should be designed to achieve this end ; for example, ignoring of small and clinically unimportant blood vessels results in such clearer dissection and a much clearer picture of the main structures and their natural relationships.

3. Much that is at present taught by dissection could be demonstrated as usefully through prepared dissected specimens.

4. Normal radiological anatomy may also form part of practical training. The structure of the body should be presented linking functional aspect.

5. Actual dissection should be preceded by a course of lectures on the general structure of the organ or the system under discussion and then its function. In this way anatomical and physiological knowledge can be presented to students in an integrated form and the instruction of the whole course of anatomy and physiology made more interesting, lively and practical.

6. A good part of the theoretical lectures on anatomy can be transferred to tutorial classes with demonstrations.

A few lectures or demonstrations on the clinical and applied anatomy should be arranged in the later part of the course. They should preferably be given by a clinician and should aim at demonstrating the anatomical basis of physical signs and the value of anatomical knowledge to the clinician.

Seminars and group discussions to be arranged periodically with a view of presenting different subjects in an integrated manner.

Formal class room lectures to be reduced but demonstrations and tutorials to be increased.

There should be joint teaching-cum-demonstration sessions with clinical materials illustrating applied aspect of Anatomy in relation to clinical subjects. This should be arranged once a fortnight and even form part of series of introductory lectures if be needed.

There should be joint seminars with the departments of Physiology and Bio-Chemistry and should be organised once a month. There should be a close correlation in the teaching of gross Anatomy, Histology, Embryology and Genetics. The teaching of areas and systems in Anatomy, Physiology including Bio-chemistry should be integrated as far as possible.

THEORETICAL

A complete course of human anatomy with general working knowledge of different anatomical parts of the body. Emphasis should be laid down on the general anatomical positions and broad relations of the viscera, muscles, blood vessels, nerves and lymphatics. Candidates should not be burdened with minute anatomical details of every description which has no clinical significance.

Candidates will be required to recognise anatomical specimen and to identify and answer questions on structures displayed in recent dissections, to be familiar with the bones and their articulations including the vertebrae, the skull and with the manner of ossification of the long bones.

Emphasis will not be laid on minute details except in so far as is necessary to the understanding of or in their application to medicine and surgery. Candidates are expected to know the attachments of muscles sufficiently to understand their actions, but not the precise details of origin and insertion of every muscle. A knowledge of the minor details of the bones of the hand, foot, their articulations and details of the small bones of the skull will not be required.

The curriculum of anatomy should be divided under the following headings :—

I. Gross Anatomy—to be dealt under the following categories :—

(a) Introductory lectures with demonstrations.

(b) Systematic series.

The study to be covered by deductive lectures, lecture, demonstrations, surface and radiological anatomy, by dissection of the cadaver and study of

dissected specimen. Knowledge thus obtained together with correlation of facts should be integrated into living anatomy. Details of topographical relation should be stressed for these parts which are of importance in general practice.

(i) Superior extremity, inferior extremity, head, neck, throat, abdomen and pelvis to be studied regionally and system by system (special reference to be made to development and its anomalies, regional, innervation, functional groups of muscles in relation to joints or otherwise and Applied Anatomy).

(ii) Endocrine organs—with special reference to development and applied anatomy.

II. Developmental anatomy—General principles of development and growth and the effect of hereditary and environmental factors to be given by lectures, charts, models and slides.

III. Neuro-anatomy, Gross Anatomy of brain and spinal cord and the main nerve tracts. The peripheral nerves. Cranial nerves their relations, course and distributions.

Autonomic nervous system—Development and anomalies. Applied Anatomy.

The study to be covered by lectures, lecture-demonstrations, dissection of brain and cord, and clinical correlation.

N.B.—The practical study should precede the study of physiology nervous system. Early correlation—with the clinical course is desirable.

IV. Micro-anatomy (Histology)—Modern conceptions of cell, epithelial tissue, connective tissue, muscular tissue, nervous tissue.

(A) Introductory Lectures—

(a) Modern conception of cell-components and their functions why a cell divides, cell division—types with their significance.

(b) Genetic Individuality.—(i) Elementary genetics—definition, health and diseases, result of interaction between organism and its environments, utility of knowledge from homeopathic point of view.

(ii) Mandel's Laws and their significances.

(iii) Applied genetic.

(B) Developmental Anatomy—15 lectures.

(C) General anatomy & micro-anatomy—15 lectures.

(D) Regional anatomy.

(a) Upper Extremity—15 lectures.

(i) Skeleton, position and functions of joints.

(ii) Muscle groups, brachial plexus.

(iii) Arterial supply, venous drainage, neurovascular bundles, lymphatics and lymph nodes, relation of nerves to bones.

(iv) Joints with special emphasis on shoulder, elbow and wrist joints, muscles, producing movement, results of nerve injury.

(v) Radiology of bones and joints, ossification, determination of age.

(vi) Applied anatomy.

(vii) Surface marking of main arteries, nerves.

(b) Lower extremity—15 lectures.

(i) Skeleton, position and functions of joints.

(ii) Muscle groups, lumbosacral plexus.

(iii) Arterial supply, venous drainage, neurovascular bundles, lymphatics and lymph nodes, relation of nerves to bones.

(iv) Joints with special emphasis on lumbosacral hip, knee and ankle joints, muscles producing movement, results of nerve injury.

(v) Radiology of bones and joints, ossification, determination of age.

(vi) Applied anatomy.

(vii) Surface marking of main arteries, nerves.

(c) Thorax—15 lectures.

(i) Skeleton of joints of muscles of chest wall—diaphragm, innervation of abdominal and thoracic respiration, difference with age. The mammary gland lymphatic drainage.

(ii) The pleura & lungs.

(iii) Arrangements structures in the mediastinum, heart, coronary arteries, great vessels, trachea, oesophagus, lymph nodes, thymus.

(iv) Radiology of heart, aorta, lungs, bronchogram.

(v) Applied anatomy.

(vi) Surface marking—pleura, lungs, heart—valves of heart, border, arch of aorta, superior vena cava, bifurcation of trachea.

(d) Abdomen and pelvis—25 lectures.

(i) The abdominal wall—skin and muscles, innervation of fascia, peritoneum, blood vessels, lymphatics, autonomic, ganglia and plexuses.

(ii) Stomach, small intestine, caecum, appendix, large intestine.

(iii) Duodenum, pancreas, kidneys, ureters, suprarenals.

(iv) Liver and gall bladder.

(v) Pelvis, skeleton and joints, muscles of the pelvis, organs internal and external genitalia in the male and in the female, lumbosacral plexus, vessels, lymphatics, autonomic ganglia and plexuses.

- (vi) Blood vessels and nerve plexuses of abdomen and pelvis, the portal venous system.
- (vii) Applied anatomy of referred pain, portal systemic anastomosis, catheterization of the urinary bladder in the male and female.
- (viii) Surface marking of organs and blood vessels.
- (e) Head and neck—25 lectures.
- (i) Scalp—Innervation, vascular, supply middle meningeal artery.
- (ii) Face—Main Muscles groups—muscles of facial expression, muscles of mastication, innervation of skin and repair muscles, vascular supply, principles of repair scalp and face wrinkles.
- (iii) The eyelids, eyeball, lacrimal apparatus, the muscles that move the eyeball.
- (iv) The nasal cavity and nasopharynx, septum, conchae, paranasal sinus, eustachian tube lymphoid masses.
- (v) Oral cavity and Pharynx.
- (vi) Larynx and laryngeal part of Pharynx structure (No details) functions, nerves supply, laryngo scopic appearances.
- (vii) Cervical vertebrae joints of head and neck.
- (viii) Structures of neck, sternomastoid, brachial plexus, main arteries and veins, disposition of lymph nodes, areas of drainage, phrenic nerve, thyroid gland and its blood supply, para-thyroid the trachea, oesophagus. The position of the Sub-mandibular and sub-lingual salivary glands.
- (ix) Teeth and dentitor.
- (x) The external middle and internal ear.
- (xi) Applied anatomy.
- (xii) Surface Marking.—Parotid gland, middle meningeal artery, thyroid gland, common, internal and external carotid arteries.
- (f) Neuro-anatomy.—10 lectures.
- (i) Meninges—functions of.
- (ii) Cerebrum—areas of localisation, vascular supply basal ganglion, internal capsule.
- (iii) Cerebellum—functions.
- (iv) Pons, meduller midbrain, cranial nerves, palsies.
- (v) Cerebro-spinal fluid—formation, circulation, function, absorption.
- (vi) Cranial nerves, origin, courses (with minimum anatomical detail) areas of distribution.

- (vii) Spinal cord-coverings, segments, relation of segments to vertebral column, spinal nerves, distribution.
- (viii) The sympathetic and parasympathetic nervous system, location, distribution, function.
- (ix) Applied anatomy of lumbar puncture, referred pain, spinal anaesthesia, increased intracranial pressure.

PRACTICAL

Dissection of the whole human body in the course of 1st Months, academic months shall be 160 hrs.

1. Each dissection when completed, must be shown to the demonstrator and permission must be obtained before proceed to the next item.

2. Before allotment of a part, each student must pass the oral test of the bones on the part taken by the demonstrator.

3. There should be printed form of the class of practical anatomy as per guide lines to be followed by every recognised college.

GUIDLINE FOR DISSECTION

Name :

Session :

Year :

Roll No.

BRAIN-BULBUS OCULI

Each dissection, when completed, must be shown to one of the Demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part:—

Date of completion of part:—

Remarks :

Demonstrator,

Professor of Anatomy

Brain-Bulbus Oculi				
Item	Items started on	Marks		Examiner
		Dissection	Viva	
1. Membranes of the brain and the cisternae				
2. Superficial blood vessels of the brain				

	1	2	3	4	5
17. Nose and accessory sinuses					
18. Spheno-palatine region-					
(i) Pterygo-palatine fossa					
(ii) Pterygo-maxillary fissure					
(iii) Maxillary nerve and sphenopalatine ganglion					
19. Larynx					
20. Tongue					
21. Auditory apparatus-					
(i) External ear					
(ii) Middle ear, mastoid antrum					
(iii) Internal ear					
Total	-----				
Percentage	-----				

THORAX

Name : _____
 Session : _____ Roll No.-----
 Year: _____

Each dissection when completed, must be shown to one of the Demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part : _____
 Date of completion of part : _____

Remarks: _____
 Professor of Anatomy

Item	Items started on	Marks		Examiner
		Dissection	Viva	
1	2	3	4	5
1. Anterithoracic wall				
2. Dissection of intercostal				
3. Space and contents				
4. Ant. articulation -				
(i) Sterno Clavicular				
(ii) Chondrosternal				
(iii) Intra chondral articulations				
5. Pleura-roots of lungs and pulmonary plexus				
6. Anterior mediastinum and superior mediastinum				
7. Middle mediastinum and pericardium				
8. Phrenic and Vagus nerves cardiac plexus				
9. Heart				

	1	2	3	4	5
10. Posterior mediastinum and its contents					
11. Thoracic portion of sympathetic its branches and distribution					
12. Posterior thoracic wall-intercostal vessels and nerves					
13. Diaphragm					
14. Vertebral—Costovertebral articulations					
15. Surface anatomy					
Total	-----				
Percentage	-----				

ABDOMEN

Name : _____
 Session : _____ Roll No.-----
 Year: _____

Each dissection when completed, must be shown to one of the Demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part : _____
 Date of completion of part : _____
 Remarks: _____

Professor of Anatomy.

Demonstrator Items	Item started on	Marks		Examiner
		Dissection	Viva	
1	2	3	4	5
1. Perineum				
2. External genitals— Male Female				
3. Anterior abdominal wall Spermatic cord Round Ligament				
4. Abdominal cavity— Positions and relations of viscera				
5. Peritoneum— Greater sac Lesser sac				
6. Mesenteric vessels				
7. Stomach, Coeliac Axia, and Portal vein				
8. Small intestine (Jejunum and Ileum)				
9. Large intestine up to iliac colon				
10. Duodenum, pancreas and spleen				

1	2	3	4	5	Items	Items started on	Marks		Examiner
							Dissection	Viva	
							3	4	5
11.	Liver								
12.	Kidney, Suprarenal gland and abdominal wall								
13.	Diaphragm				1.	Superficial dissection of back			
14.	Abdominal portion of sympathetic system including coeliac and aortic plexuses.				2.	Pectoral region and axillary fossa			
15.	Aorta, Inf. Venacava, Common, internal and External Iliac vessels.				3.	Shoulder and scapular region Acromio—clavicular articulation			
16.	Lymphatic system of the abdomen.				4.	Cubital fossa			
17.	Lumbar plexus of nerves and lumbar vessels				5.	Front of the arm			
18.	Pelvis—Positions and relations of viscera				6.	Back of the arm			
19.	Hypogastric vessels and their branches.				7.	Front of the forearm			
20.	Pelvic fascia and Pelvic muscles—pelvis portion of ureter				8.	Palm of the hand—superficial dissection			
21.	Sigmoid colon, Rectum, Anal Canal				9.	Palm of the hand Deep dissection			
22.	Urinary bladder, Prostrate and urethra				10.	Back of forearm			
23.	Ovary, uterus, urine tubes, vagina				11.	Dorsum of the hand			
24.	Pelvic nerves				12.	Shoulder joint			
25.	Articulations-- Lumbo sacral Sacro iliac Sacro coccygeal Symphysis pubis				13.	Elbow and Radio-ulnar joint			
					14.	Wrist joint and articulations of the hand.			
							Total		
							Percentage		

INFERIOR EXTREMITY

Name :

Session :

Roll No. _____

Year :

Each dissection when completed, must be shown to one of the Demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part :—

Date of completion of part :—

Remarks:—

Demonstrator

Professor of Anatomy

SUPERIOR EXTREMITY

Name :

Session: _____ Roll No. _____

Year: _____

Each dissection when completed, must be shown to one of the Demonstrators, and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part:

Date of completion of part:

Remarks _____ Professor of Anatomy

Items	Items started on	Marks		Examiner
		Dissection	Viva	
		3	4	5
1.	Superficial dissection of sole			
2.	Gluteal region			
3.	Popliteal fossa			
4.	Back of thigh			

5. Superficial dissection of whole of the front of the thigh
Cutaneous nerves
Cutaneous vessels
Deep fascia
6. Deep dissection—
(a) Femoral sheath and Femoral hernia
(b) Adductor region
(c) Adductor canal
(d) Quadriceps muscle
7. Anterior tibiofibular region, Dorsum of foot
8. Peroneal region
9. Post tibiofibular region
Superficial and middle compartment
10. Deep dissection of sole
11. Hip joint
12. Knee joint
13. Tibiofibular and joints
14. Articulations of the foot including the arches

Total	
Percentage	

The written papers in Anatomy shall be distributed as follows:—

- Paper I — Upper extremity, head, face, neck and brain,
Paper II — Thorax, abdomen, pelvis and lower extremity

PHYSIOLOGY

The purpose of a course in physiology is to teach the functions, processes and inter-relationship of the different organs and systems of the normal human organism as a necessary introduction to their disturbance in disease and to equip the student with normal standards of reference for use while diagnosing and treating deviations from the normal. To a homoeopath the human organism is an integrated whole of body, life and mind; though life includes all the chemico-physical processes it transcends them. There can be no symptoms of disease without vital force animating the human organism and it is primarily the vital force which is deranged in disease. Physiology should be taught from the stand-point of description of vital phenomena and the chemico-physical processes underlying them in health.

There should be close co-operation between the various departments while teaching the different systems. There should be joint courses between the two departments of anatomy and physiology so that there is maximum co-ordination in the teaching of these subjects.

Seminars should be arranged periodically and lecturers of anatomy, physiology and bio-chemistry should bring home the point to the students that the integrated approach is more meaningful. For example, gross and minute structure will be dealt

with by the anatomist while the role of subcellular particles in metabolic processes and the method to assess them may be explained by the bio-chemist and towards the end the physiologist may deal in an integrated manner with behaviour of the cell as a unit, co-ordinating the characteristic bio-chemical and structural components sub-serving specific functions. Students should be encouraged to participate in the seminars and present the practical subjects in an integrated manner.

THEORETICAL

(1) Introductions

Fundamental phenomena of life. The cell and its differentiation. Tissues and organs of the body.

(2) Bio-chemical principles

Elementary constituents of protoplasm. Chemistry of proteins, carbohydrates and lipids. Enzymes.

(3) Bio-physical principles

Units of concentration of solutions, ions, electrolytes and non-electrolytes, filtration, diffusion, ultrafiltration, dialysis, surface tension, Absorption, hydrotrophy, osmotic equilibrium, colloid, acid, base concentration H.

(4) Nerve muscle physiology

Excitation process in a nerve and its propagation changes undergone by a nerve on stimulation. Polarisation phenomena in nerve. Electrolysis, Reaction of degeneration, Neuromuscular transmission. Different types of muscles in the body. Change on excitation and nature of the contractile process. Physiology of muscular exercise. Rigor mortis.

(5) Blood composition

Regulations of blood volume and its determination, specific gravity of blood, reaction of blood and its regulation. Composition and function of blood plasma. Plasma protein and their function. Bone marrow, origin, composition, fat, function of the formed element of blood, Chemistry of haemoglobin and its compounds and derivatives, coagulation of blood. Haemolysis, blood group.

(6) Cardio-vascular system

Structure and properties of cardiac muscle, cardiac cycle, action of valves, heart sounds, apex beat, nutrition of heart and coronary circulation, Electro-cardiogram, cardiac output. Origin and propagation of cardiac impulse. Nervous regulation of heart, cardiac reflexes, course and circulation of blood, structure of arteries, capillaries and veins, peculiarities of cerebral, pulmonary, hepatic, portal and renal circulation. Time of complete circulation, velocity of blood flow. Pulse, arterial and venous, innervation of blood vessels and control of circulation. Blood pressure and its regulation. Control of capillary circulation.

- (7) Reticulo Endothelial system and lymph Reticulo endothelial system (R.E. system), spleen lymphatic glands. Tissue fluids and lymph, odema.
- (8) Respiratory system.
Anatomy and minute structure of respiratory organs. Mechanism of respiratory movement, spirometry, chemistry of respiration. Composition of inspired, expired and alveolar air Respiratory quotient, Basal metabolism. Gases in blood and their tension. Transport of O₂ and CO₂ in blood. Mechanism of external and internal respiration, control of respiration. Cheynes-stokes respiration. Apnoea, dyspnoea, anoxia, cyanosis, asphyxia, effect of high and low atmospheric pressure, acclimatisation, Mountain sickness, caisson disease, artificial respiration, effect of respiration on circulation.
- (9) Digestive system
Metabolism, nutrition and dietetics, normal diet, vitamins, Milk its properties. The digestive organs and their structure and function, various digestive juices, mechanism and functions. Liver, movement of alimentary canal. Defecation, digestion and absorption of the food stuff, and their metabolism. Biological value of protein. Bloodsugar and its regulation. Mineral Metabolism and metabolism during starvation, Nutrition of an individual.
- (10) The sense organs
General features, classification, sensation, Sensory Organs and sensory pathways :
(a) Vision.—Anatomy of the eye. Errors of refraction and their correction, Mechanism of accommodation, structure and functions of coats of eye ball. Ocular reflexes. Visual field. Visual pathway. Colour vision, Colour blindness. Binocular vision.
(b) Hearing.—Structures of auditory apparatus, conduction of sound waves. Helmholtz theory. Cochlear response. Vestibular apparatus.
(c) Taste and smell.—Structure and function of the receptor organs.
(d) Cutaneous and deep sensation.—Structure and function and receptors.
- (11) Voice and speech
Anatomy of larynx, Mechanism of production of voice and speech.
- (12) Endocrine Organs
- (13) Reproduction
Primary and secondary sex organs and secondary sex character. Mammary gland and Prostate. Placenta and its function. Foetal respiration and circulation.
- (14) Excretory system
Kidney—formation and chemical composition

of urine, structure and functions of kidney. Constituents of urine, normal and abnormal. Volume of urine, physiology of micturition. Renal efficiency tests.

- (15) Inegumentary system
Structure and functions of skin, formation, secretion, composition of sweat and sebum. Body temperature and its regulation.
- (16) Nervous system
Evolution and history of nervous system. Spinal cord and reflexes and its properties. Control of excitatory and inhibitory states. Somatic sensory receptors and pathways Thalamus, Cerebral Cortex. Motor and associated areas, Pyramidal and extrapyramidal pathways, basal ganglia. Posture and locomotion, Sensory and motor. Motor point in man, reticular formation, EEG sleep, autonomic nervous system. Hypothalamus and limbic system. Conditional reflexes, cerebellum.

PHYSIOLOGY (Practical)

- (1) Urine-examination of normal and abnormal constituents of urinary sediments. Quantitative examination for sugar, urica, albumin, acetone and bile.
- (2) R.B.C. & W.B.C. total count making and staining blood-film and differential count of W.B.C. coagulation and bleeding time, Hb. estimation, fragility and sedimentation rate of R.B.Cs.
- (3) Identification and use of common physiological instruments and appliances.
- (4) Identification of histological specimen of tissues and organs viz. Liver, Kidney, lungs, thyroid, pancreas, spleen, trachea, oesophagus, stomach, tongue, intestine, large intestine, testes, ovary, bone, adipose tissue, spinal cord, suprarenal gland, parotid gland, anterior pituitary, salivary glands, skin, parathyroid gland, cerebellum, cerebral cortex, cardiac muscle.

The written papers in physiology shall be distributed as follows :—

Paper—I

Elements of Bio-Physics, Histology, Blood and lymph, Cardiovascular system, Reticulo-endothelial system, spleen. Respiration, Excretion of urine, skin, regulation of body temperature, sense organs.

Paper—II

Endocrine organs, nervous system, nerve muscles physiology. Digestive system and metabolism, Bio-chemistry of protein, carbohydrate and lipid, Enzymes. Nutrition.

Practical Examination

Full Marks—100

	<i>Marks</i>
(1) Examination of physical and chemical constituents of normal and abnormal urine (qualitative).	20
(2) Enumeration of total cell count of Blood (R.B.C. or W.B.C.) or differential count of peripheral blood or estimation of percentage of Hb.	15
(3) Viva-voce on instruments and apparatus	15
(4) Identification of two Histoological slides	10
(5) Experimental physiology	15
(6) Laboratory Note-Book	10
(7) Viva-voce on experiments	15

PSYCHOLOGY

Introduction to Normal Psychology

- (a) Definition of psychology as a science and its difference from other science.
- (b) Conception of the mind.
- (c) Mesmar and his theory. Hypnotism structure of consciousness.
- (d) Freud and his theory—Dynamics of the unconscious Development of the Libido.
- (e) Other contemporary schools of Psychology.
- (f) Relation between mind and body in health and disease.
- (g) Percentage. Imagination. Ideation. Intelligence. Memory.
- (h) Cognition. Conation. Affect. Instinct. Sentiment. Behaviour.

HOMOEOPATHIC MATERIA MEDICA

Homoeopathic materia medica is differently constructed as compared to other material medicas. Homoeopathy considers that study of the action of drugs on individual parts or systems of the body or on animals or their isolated organs is only a partial study of life processes under such action and that it does not lead us to a full appreciation of the action of the medicinal agent; the drug agent as a whole is lost sight of.

2. Essential, and complete knowledge of the drug action as a whole can be supplied only by qualitative synoptic drug experiments on healthy persons and this alone can make it possible to view all the scattered data in relation to the psycho-somatic whole of a person; and it is just such a person as a whole to whom the knowledge of drug action is to be applied.

3. The homoeopathic materia medica consists of schematic arrangement of symptoms produced by each drug incorporating no theories or explanations about their interpretation or inter-relationship. Each drug should be studied synthetically, analytically and comparatively, and this alone would enable a homoeopathic student to study each drug individually and as a whole and help him to be a good prescriber.

4. Polychrests and the most commonly indicated drugs for every day ailments should be taken up first so that in the clinical classes or outdoor duties the students become familiar with their applications. They should be thoroughly dealt with, explaining all comparisons and relationship. Students should be conversant with their sphere of action and family relationship.

The less common and rare drugs should be taught in outline, emphasising only their most salient features and symptoms. Rare drugs should be dealt with later.

5. Tutorials must be introduced so that students in small numbers can be in close touch with teachers and can be helped to study and understand materia medica in relation to its application in the treatment of the sick.

6. While teaching therapeutics an attempt should be made to recall the materia medica so that indications for drugs in a clinical condition can directly flow out from the provings of the drugs concerned. The student should be encouraged to apply the resources of the vast materia medica in any sickness and not limit himself to memorise a few drugs for a particular disease. This Hahnemannian approach will not only help him in understanding the proper perspective of symptoms as applied and their curative value in sickness but will even lighten his burden as far as formal examinations are concerned. Otherwise the present trend produces the allopathic approach to treatment of diseases and it is contradictory to the teaching of organon.

Application of materia medica should be demonstrated from cases in the outdoor and hospital wards.

Lectures on comparative materia medica and therapeutics as well as tutorials should be as far as possible integrated with lectures on clinical medicine in the various departments.

7. For the teaching of drugs the college should keep herbarium sheets and other specimens for demonstration to the students. Lectures should be made interesting and slides of plants and materials may be projected.

8.(A) Introductory lectures : Teaching of the Homoeopathic materia medica should include :

- (i) nature and scope of homoeopathic materia medica.
- (ii) sources of homoeopathic materia medica, and
- (iii) different ways of studying the materia medica.

(B) The drugs are to be taught under the following heads :

- (i) common name, natural order, habitat, part used, preparation.
- (ii) sources of drug proving.
- (iii) symptomatology of the drug emphasising the characteristic symptoms and modalities.
- (iv) comparative study of drugs.
- (v) complementary, inimical, antidotal and concordant remedies.
- (vi) therapeutic applications (applied materia medica).

(C) A study of 12 tissue remedies according to Schussler's Biochemic System of Medicine.

APPENDIX I

LIST OF DRUGS INCLUDED IN THE SYLLABUS OF MATERIA MEDICA FOR THE 1ST B.H.M.S. EXAMINATION

1. Abrotanum
2. Aconitum Nap.
3. Aesculus Hip.
4. Aethusa Cyn.
5. Alium Cepa.
6. Aloes Socotrina
7. Ammonium Carb
8. Antimonium Crud
9. Antimonium Tart
10. Apis Mellifica
11. Argentum Met.
12. Argentum Nit.
13. Arnica Montana.
14. Arsenicum Alb.
15. Arum Triph.
16. Aurum Met.
17. Baptisia Tin.
18. Baryta Carb
19. Belladonna
20. Berberis Vul.
21. Borax
22. Bryonia Alb.
23. Calcarea Carb.
24. Calendula
25. Carbo Veg.
26. Causticum
27. Chamomilla
28. Cina
29. Cichona Off
30. Colchicum Autm.
31. Colocynth
32. Drosera
33. Dulcamara
34. Euphrasia
35. Gelsemium
36. Graphites
37. Hepar Sulph.

38. Helleborus
39. Hyoscyamus N.
40. Ignatia
41. Ipecac
42. Kali Bich
43. Kali Carb.
44. Lachesis
45. Ledum Pal
46. Lycopodium
47. Mercurius Cor.
48. Mercurius Sol.
49. Niteric Acid
50. Nux. Vomica
51. Podophyllum
52. Pulsatilla
53. Rhus Tox.
54. Secale Cor.
55. Spongia Tosta
56. Sulphur
57. Thuja Oc.
58. Veratrum Alb.
59. Calcarea Fluor
60. Calcarea Phos.
61. Calcarea Sulph.
62. Ferrum Phos
63. Kali Mur.
64. Kali Phos.
65. Kali Sulph.
66. Magnesia Phos
67. Natrum Mur.
68. Natrum Phos.
69. Natrum Sulph
70. Silicea

APPENDIX III

SYLLABUS OF MATERIA MEDICA FOR III & IV B.H.M.S. EXAMINATION

In addition to the list of drugs (Appendix I & II) for the I & II B.H.M.S. examinations the following additional drugs are included in the syllabus of Materia Medica for the III & IV B.H.M.S. examinations.

1. Abies Can.
2. Abies Nigra.
3. Acalypha Indica
4. Actea Spicata
5. Adonis Vernalis
6. Adrenalin
7. Anthraxium
8. Antimonium Ars.
9. Artemisia Vulgaris
10. Asafoetida
11. Asterias Rubena
12. Avena Sativa
13. Bacillinum
14. Baryta Mur.
15. Bellis Perennis
16. Benzoic Acid

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| 17. Blatta Orientalis | 74. Mercurius Sol. |
| 18. Bufo Rana | 75. Millefolium |
| 19. Caladium | 76. Mezereum |
| 20. Cannabis Ind. | 77. Moschus |
| 21. Cannabis Sat. | 78. Murex |
| 22. Capsicum | 79. Muriatic Acid |
| 23. Carbo Animalis | 80. Naja T. |
| 24. Carboic Acid | 81. Onosmodium |
| 25. Cardus Marianus | 82. Oxalic Acid |
| 26. Carsinosin | 83. Passiflora |
| 27. Caulophyllum | 84. Petroleum |
| 28. Cedron | 85. Phosphoric Acid |
| 29. Ceanothus | 86. Physostigma |
| 30. Chininum Ars | 87. Picric Acid |
| 31. Cholesterium | 88. Plumbum Met. |
| 32. Cicutta virosa | 89. Psorinum |
| 33. Clematis | 90. Pyrogenium |
| 34. Coca | 91. Radium Bro. |
| 35. Cocculus Ind. | 92. Ranunculus Bulb |
| 36. Coffea Crud | 93. Raphanus |
| 37. Collinsonia | 94. Ratanhia |
| 38. Condurango | 95. Rheum |
| 39. Corallium | 96. Rhododendron |
| 40. Crataegus | 97. Rumex Cr. |
| 41. Crocus Sat. | 98. Ruta G. |
| 42. Crotalus Hor. | 99. Sabadilla |
| 43. Croton Tig. | 100. Sabal Ser. |
| 44. Cuprum Met. | 101. Sabinæ |
| 45. Cyclamen | 102. Sambucus Nigra |
| 46. Dioscorea Villosa | 103. Sanguinaria Can |
| 47. Diphtherinum | 104. Sanicula |
| 48. Equisetum | 105. Sarsaparilla |
| 49. Erigeron | 106. Squilla |
| 50. Eupatroium Perfol. | 107. Spigelia |
| 51. Flouric Acid | 108. Stannum Met. |
| 52. Glonoine | 109. Staphysagria |
| 53. Helonias | 110. Sticta Pul |
| 54. Hydrastis Can. | 111. Selenium |
| 55. Hydrocotyle | 112. Stramonium |
| 56. Hypericum | 113. Sulphuric Acid |
| 57. Iodum | 114. Symphytum |
| 58. Kalmia Lat. | 115. Syphilinum |
| 59. Lac Caninum | 116. Sysygium Jam. |
| 60. Lac Def. | 117. Tabacum |
| 61. Lillium Tig. | 118. Taraxacum |
| 62. Lithium Carb. | 119. Tarentula C. |
| 63. Lobelia Inflata | 120. Terëbinthina |
| 64. Lyssin | 121. Theridion |
| 65. Magnesia Carb. | 122. Thälspi Bursa |
| 66. Magnesia Mur. | 123. Thyroidinum |
| 67. Malandrinum | 124. Tullium Pendulum |
| 68. Medorrhinum | 125. Urtica Urens |
| 69. Mephitis | 126. Ustilago M. |
| 70. Melilotus A. | 127. Vaccinumm |
| 71. Menyanthes | 128. Valeriana |
| 72. Mercurius Cynatus | 129. Variolinum |
| 73. Mercurius Dulcis | 130. Veratrum Viride |
| | 131. Vinca Minor |

132. Vipera
133. Vibernum Opules
134. X-Ray
135. Zincum Met.

APPENDIX II

SYLLABUS OF MATERIA MEDICA FOR THE
II. B.H.M.S. EXAMINATION

In addition to the list of 70 drugs for the first B.H.M.S. Examination, (Appendix I) the following additional drugs are included in the syllabus of Materia Medica for the II B.H.M.S. examination.

EXAMINATION

1. Acetic Acid
2. Actea Racemosa
3. Agaricus Muscarius
4. Agnus Castus
5. Alumina
6. Ambra Grisea
7. Ammonium Mur.
8. Anacardium Ori.
9. Apocynum Can.
10. Arsenicum Iod.
11. Bismuth
12. Bromium
13. Bovista
14. Cactus G.
15. Calcareo Ars.
16. Camphora
17. Cantheris
18. Chelidonium Maj.
19. Conium Mac.
20. Digitalis P.
21. Ferrum Met.
22. Kali Brom.
23. Kreosotum
24. Natrum Carb.
25. Nux. Moschata
26. Opium
27. Petroleum
28. Phosphorus
29. Phytolacca
30. Platina Met
31. Sepia.

ORGANON AND PRINCIPLES OF HOMOEOPATHIC PHILOSOPHY

I. II. & III B.H.M.S. EXAMINATIONS

Hahnemann's Organon of medicine is the high water mark of medical philosophy. It is an original contribution in the field of medicine in a codified form. A study of Organon as well as of the history of homoeopathy and its founder's life story will show that homoeopathy is a product of application of the inductive logical method of reasoning to the solution of one of the greatest problems of humanity namely the treatment and cure of the sick. A thorough

aquaintance with the fundamental principles of logic, both deductive and inductive is therefore essential. The Organon should accordingly be taught in such manner as to make clear to the students the implications of the logical principle by which homoeopathy was worked out and build up and with which a homoeopathic physician has to conduct his daily work with ease and facility in treating every concrete individual case.

The practical portions should be thoroughly understood and remembered for guidance in practical work as a physician.

I. B.H.M.S. Examination

- (1) Introductory lectures 10 lectures.

Subjects :

What is homoeopathy ?

It is not merely a special form of therapeutics, but a complete system of medicine with the distinct approach to life, health, disease, remedy and cure.

- Its out and out logical and objective basis and approach.
- Homoeopathy is nothing but an objective and rational system of medicine.
- Homoeopathy is thoroughly scientific in the approach and methods.
- Based on observed facts and data and on inductive and deductive logic inseparably related with observed facts and data.
- Distinct approach of Homoeopathy to all the pre-clinical para-clinical and clinical subjects.
- Preliminary idea about all the para-clinical and pre-clinical subjects. Their mutual relations, and relation with the whole living organism.
- Importance of learning the essentials of subjects for efficient applications of the principles of homoeopathy for the purpose of cure and health.
- Distinctive essential features of the dynamic pharmacology (proving) and pharmacy of Homoeopathy.

- (2) Hahnemann's life and pioneers of Homoeopathy and their contributions.
- (3) Hahnemann's Organon of Medicine—aphorism 1 to 70.

II B.H.M.S. Examination

- (1) Hahnemann's Organon of Medicine should be completed during the II B.H.M.S. course though the examination may be limited to Aphorism 1 to 145.
- (2) Introduction to Organon of Medicine (5th and 6th Editions).
- (3) Homoeopathic philosophy (a) Kent's lectures in Homoeopathic philosophy,

(b) Stuart Close—lectures and Essays on homoeopathic philosophy (Genius of Homoeopathy) (c) Art of cure by Homoeopathy—H. Roberts (d) Science of therapeutics—Dunham. During the lectures on Homoeopathic philosophy, the following terms should be elucidated :—

- (i) The scope of homoeopathy.
 - (ii) The logic of homoeopathy.
 - (iii) Life, Health, Disease and Indisposition.
 - (vi) Susceptibility, reaction and immunity.
 - (v) General pathology of Homoeopathic theory of acute and chronic miasms.
 - (vi) Homoeopathic Philosophy.
 - (vii) Potentisation and infinitesimal dose and the drug and the drug potential.
 - (viii) Examination of the patient from the Homoeopathic point of view.
 - (ix) Significance and implications of totality of symptoms.
 - (x) The value of symptoms.
 - (xi) The Homoeopathic aggravation.
 - (xii) Prognosis after observing the action of the remedy.
 - (xiii) The second prescription.
 - (xiv) Difficult and incurable cases—palliation.
- (4) Introductory chapters of Huges's Principles and practice of Homoeopathy. In their introductory lectures to organon the professors are requested to impress upon the mind of the students the implications of the logical principles of which homoeopathy was built and worked out; and the history of the development of medicine in the West and Hahnemann's contribution to it in order to arrive at a right assessment of the place of Homoeopathy in all its aspects in the field of medicine and life of Hahnemann.

III. B.H.M.S. Examination

- (1) Hahnemann's Organon of Medicine (5th & 6th Editions).
- (2) History of homoeopathic medicine—as it existed during Hahnemann's time, early life of Hahnemann; his disgust with the existing system of treatment; his discovery of law of similars; history of the late life of Hahnemann. Introduction of Homoeopathy in various countries. Pioneers of Homoeopathy and their contributions. Development of Homoeopathy upto the present day. The present trends in the development of Homoeopathy on other systems of medicine.
- (3) Homoeopathic philosophy.
- (4) Hahnemann's on chronic Diseases.

Topicwise Study of Organon

- A. Lectures on doctrinal part (Aphorism 1—70)
 - (a) Aim of physician and highest ideal cure Aph 1 & 2.
 - (b) Knowledge of a physician—Aph 3 & 4.
 - (c) Knowledge of disease which supplies the indication—Aph. 5 to 15.
 - (d) Knowledge of medicines—Aph 19 to 21.
 - (e) Evaluation of Homoeopathic method from other methods of treatment—Aph 22 to 69.
 - (f) Summary—three conditions for cure—Aph. 70.
- B. Lectures on practical part of organon is to be divided into and taught under the following subjects :—
 - (a) That is necessary to be known in order to cure the diseases and case taking method—Aph 71 to 104.
 - (b) The pathogenetic powers of medicine i.e. drug proving or how to acquire knowledge of medicine—Aph 105—145.
 - (c) How to choose the right medicine—Aph. 147, 148, 149, 150, 153, 155.
 - (d) The right dose—Aph. 157, 160, 161, 162, 163, 164, 169, 171, 173.
 - (e) Local disease—Aph. 186, 187, 190, 191, 196, 197, 199, 201, 202, 203.
 - (f) Chronic diseases—Aph. 204, 206, 208.
 - (g) Mental diseases Aph. 200 to 230.
 - (h) Intermittent diseases—Aph. 231, 232, 236, 238, 240 to 242.
 - (i) Diet regimen and the modes of employing medicines—Aph. 245, 248, 252, 253, 256, 262, 263, 269, 270, 272, 275, 276, 280, 286, 289, 290, 291.

PRACTICAL

Practical application of knowledge of Organon :—

Clinical lectures both in an out patients departments examination of the patient from homoeopathic point of view :—

- (a) Disease determination
- (b) Disease individualisation.
- (c) Evaluation of symptoms
- (d) Gradation of symptoms
- (e) Selection of medicine and potency and repetition of dose.

The value of symptoms

- (f) Disease aggravation or Homoeopathic Aggravation.

- (g) Miasmatic diagnosis.
- (h) Second prescription.
- (i) Prognosis after observing the action of the remedy.

III. B.H.M.S. Organon Examinations

At the III B.H.M.S. examination the written papers in Organon and Principles of Homoeopathy Philosophy shall be distributed as follows :—

Paper I—Introduction to organon (5th and 6th Editions)—Aphorism 1—294

Paper II—(i) History of Homoeopathic Medicine.
(ii) Homoeopathic Philosophy.
(iii) Chronic Diseases.

PATHOLOGY BACTERIOLOGY AND PARASITOLOGY

The teaching of pathology and bacteriology has to be done very cautiously and judiciously, while allopathy associates the pathology of tissues and micro-organisms with disease conditions and considers bacteria as conditioned causes of diseases, homoeopathy regards disease as purely a dynamic disturbance of the vital force expressed as altered sensations and functions which may or may not ultimate in gross tissue changes. The tissue changes are not therefore an essential part of the disease *per se* and are not accordingly in homoeopathy the object of treatment by medication.

2. Since the discoveries of Louis Pasteur and Robert Koch the medical world has come to believe in the simple dogma "kill the germs and cure the disease". But subsequent experience has revealed that there is an elusive factor called 'susceptibility' of the patient which is behind infection and actual outbreak of disease. As homoeopathy is mainly concerned with reactions of the human organism to different morbid factors, microbial or otherwise, the role of bacteria or viruses in the production of disease is therefore in homoeopathy quite secondary.

3. Knowledge of bacteriology is nevertheless necessary for a complete homoeopathic physician; but it is for purposes other than therapeutics such as for diagnosis, prognosis, prevention of disease and general management. Similarly knowledge of pathology is necessary for disease determination, prognosis, for discrimination between symptoms of the patient and symptoms of the disease and for adjusting the dose and potency of indicate homoeopathic remedy.

4. Only broad basic training in pathology, free from specialist bias, should however be imparted to students. Teachers of pathology should never lose sight of the fact that they are training medical practitioners, especially homoeopathic practitioners, and not technicians and specialists in pathology. The living patient, and not the corpse, should be the central theme in the teaching of this subject.

5. The purpose of the instruction in pathology is to enable the student to correlate subjective symptoms with the objective ones to interpret clinical symptoms

and their inter-relationship of the basis of underlying pathology.

Introduction : Scope of pathology—old school—new school (Homoeopathic). How to study pathology.

THEORETICAL

1. BACTERIOLOGY :

Morphology, biology, sterilisation, chemotherapy, principles of artificial media, infection, defence reaction, immunity, hypersensitiveness, skin tests, systematic study of bacterial habits, importance—morphological, cultural, bio-chemical, serological and toxic behaviour of the common pathogenic and non-pathogenic species. Pathologic changes produced by diseases—bacteria and their laboratory diagnosis. Staphylococci, streptococci, diplococci, Neisseria, Mycobacterium tuberculosis (Types) micobacterium leprae, names and differentiation of spirochaetes from pathogenic mycobacteria, corynebacterium diphtheriae. Aerobic spore bearing bacteria—bacillus anthracis, anaerobes, general and special features of the pathogens. Names of some important non-pathogens. Gram negative intestinal bacteria classification, identification of the pathogen salmonella, vibrio bacterium, pasteururella, general idea about haemophiles, pseudomonas, brucella, rickettsia, proteus, spirochaetes—general idea, details of treponema pallidum and leptospiraictero haemorrhagiae.

Viruses—general characters, classification of disease, immunological measures, against some important viruses disease, e.g. varicella, Rabies, Bacteriophage.

2. PARASITOLOGY :

Protozoa—classification names of important rhizopoda, ent. histolytica, morphology, pathogenesis and pathogenicity, diagnosis, differences from ent. coli sporozoa species of plasmodia life history and pathogenesis differentiation of species.

Mastigophora—general broad morphological features, classification, pathogenesis, vectors, pathology of Kalazar important features source disease due to balantidium coli.

Helminths—definition of certain terms, simple classification differences between nematodes, cestodes and trematodes. Broad differentiating morphological features and broad life history and pathogenesis of important species of Cestodes and Nematodes—infesting liver, lungs, intestines and blood—general life differences between schistosomes and other trematodes.

3. Pathology :

(a) Principles of general pathology :

Injury, inflammation and repair, degenerations, cloudy swelling and post-mortem degeneration. Principles of fixation. Fatty changes, Lipoid degeneration, tumours Hyaline, mucoid and myloid degenerations. Necrosis and gangrene. Disturbances of pigment, calcium and uric acid metabolism. Avitaminosis. Anaemias. Disorders of growth metaplasia, uaplasia, atrophy, hypertrophy, erysipedious. Neoplasm classification benign and malignant, spread, cytological

factors, experimental carcinogenesis theories, circulatory disturbances, clothing, ischaemia, thrombosis, embolism, infarction, hyperaemia, oedema, shock.

(b) Pathology and special organs :

Morbid anatomy (Microscopic) in common disorders.

(c) Clinical and chemical pathology :

Blood—collection for different purposes. Estimation of haemoglobin, total count of R.B.Cs., platelets, M.C.H., M.C.V., M.C.H.C. significance, differential leucocyte count. Malaria-parasites, leishmania, trypanosomes in peri-pheral blood, marrow or spleen puncture material, Development of R.B.C. and W.B.C. Leukaemia. Erythrocyte sedimentation rate, blood culture. Aldehyde and Chopra's test. Bleeding and coagulation time Prothrombin time.

Blood groups, Estimation of blood sugar. Sugar tolerance test. Liver function tests, specially bilirubin, vandenbergh's reaction, icterus index, fractional meal test.

Urine—estimation of urea, urea clearance test, water diuresis, urinary deposits, faeces, different ova-differentiation bacillary dysentery. Amoebic desentary. Examination of throat swab, sputum, C.S.F. ascitic and pleural fluids.

Practical

Clinical and Chemical Pathology :

Estimation of haemoglobin (by acidometry)—Count of R.B.Cs. and W.B.Cs. staining of thin and thick films, differential counts and parasites.

Erythrocyte sedimentation rate, urine, physical, chemical microscopical, quantity of albumin and sugar, faeces—physical chemical (ocult blood) and microscopical for ova and protozoa.

Methods of sterilisation, preparation of a media. use of microscope. Gram and acid fast stains. Motility preparation. Gram positive and negative cocci and bacilli. Special stains for corynebacterium-gram and acid fast stains of pus and sputum.

Haconkeys plate—sugar reactions-gram stain and motility of gram negative intestinal bacteria, widal and demonstration of pasteurilla and of spirochaetes by dark field illumination—Fentans's strain-Lovaditt's stain. Demonstration of Methods of macrobiosis.

Morbid Histology :

Practical training in methods of fixation, embedding, cutting and staining of paraffin and frozen sections. Grey hepatization, acute appendicitis, chronic appendicitis septic liver abscess. Granulation tissue, tuberculosis of lung, portal cirrhosis, fatty liver, malariae liver atheroma, papilloma, fibro-adenoma, fibromyoma, squamous cell and basal cell carcinomas, adenocarcinoma, scirrhous carcinoma, encephaloid carcinoma, secondary carcinoma in lymph gland, round and spindle-celled sarcoma.

FORENSIC MEDICINE AND TOXICOLOGY

The subject is of practical importance to the students of homoeopathic medicine as homoeopathic

physicians are to be employed by Government in areas where they may have to handle medico-legal cases, perform autopsies, apart from giving evidence in such cases. The training in forensic medicine at present conducted is inadequate to meet these needs.

The course should consist of a series of lectures and demonstrations including—

1. Legal Procedure :

Definition of Medical Jurisprudence, courts and their jurisdiction.

2. Medical ethics :

Law relating to medical registration and medical relation between practitioner and the State. The Central Council of Homoeopathy Act, 1973 and the Code of Ethics under it, the practitioners and the patients, Malpractices covering professional secrecy, the practitioner and the various legislations (Acts) Provincial and Union such as Workman's compensation Act, Public Health Act, Injuries Act, Child Marriage Registration Act, Borstal Schools Act, Medical Termination of Pregnancy Act. Lunacy Act, Indian Evidence Act etc.

3. Forensic Medicine :

Examination and identification of persons living and dead : Parts, Bones, stains, etc. health : Medico-legal ; Post Mortem signs, stages and results ; putrefication, mummification ; saponification, forms of death, causes, agencies, onset etc. Assaults, wounds, injuries and death by violence. Asphyxial death, blood examination, blood stains, seminal stains ; burns, scalds, lightning stroke etc. Starvation, pregnancy, delivery, abortion, Infanticide, sexual crimes, Insanity in relation to the State life and accident insurance.

Toxicology

A separate course of lectures dealing poisoning in general, the symptoms and treatments of various poisons, post-mortem appearance, and test should be given, study of the following poisons :—

Mineral Acid, corrosive sublimate, arsenic and its compound alcohol, opium and its alkaloids, carbolic acid, carbon monoxide, carbon dioxide, Kerosene oil, cannabis indica, cocaine, belladonna, strychnin and nuxvomica, aconite, oleander, snake poisoning, prusic acid, lead poisoning.

4. Medico legal post-mortem :

Recording post mortem appearance, forwarding materials to chemical examiner ; Interpretation of laboratory and chemical examiner's findings. Students who are attending a course of lecture in forensic medicine should avail themselves of all possible opportunities of attending medico-legal post-mortems conducted by the professors of forensic medicine. It is expected that each student should attend at least 10 post-mortems.

5. Demonstration :

(1) Weapons,

(2) Organic & Inorganic poisons,

- (3) Poisonous plants,
 (4) Charts, diagram, models, X-ray films etc. of medico-legal interest.

PREVENTIVE AND SOCIAL MEDICINE & FAMILY WELFARE

(Including Health Education and Family Medicine)

Instruction in this course should be given in the third year of medical studies by lectures, demonstrations and field studies. This subject is of utmost importance, and throughout the period of medical studies the attention of the student should be directed to the importance of preventive medicine and the measures for the promotion of positive health.

His function is not limited merely to prescribing homoeopathic medicines for curative purposes but he has a wider role to play in the community. He has to be well conversant with the national health problems both of rural as well as urban areas, so that he can be assigned responsibilities to play an effective role not only in the field of curative but also of preventive and social medicine including family planning.

1. Introduction to preventive and social medicine concept, man and society; aim and scope of preventive and social medicine, social causes of disease and social problems of the sick. relation of economic factors and environment in health and disease.

2. Physiological hygiene—

Food and nutrition—food in relation to health and disease. Balanced diets. Nutritional deficiencies and nutritional survey. Food processing, pasteurisation of milk. Adulteration of food and food inspection.

Food poisoning.

(b) Air, light and sunshine.

(c) Effect of climate—Humidity temperature, pressure and other meteorological conditions—comfort zone, effect of overcrowding.

(d) Personal hygiene—(Cleanliness, rest, sleep, work) Physical exercise and training care of health in topics.

3. Environmental sanitation :

(a) Definition and importance.

(b) Atmospheric pollution—purification of air, air sterilisation. Air borne diseases.

(c) Water supplies—sources and uses, impurities and purification. Public water supplies in urban and rural areas. Standards of drinking water, water borne diseases.

(d) Conservancy—Methods in villages, towns and cities, septic tanks, dry earth latrines—water closets. Disposal of sewage, disposal of the diseased, disposal of refuse, incineration.

(e) Sanitation of fairs and festivals.

(f) Disinfection—disinfectants, deodorants, anti-septics germicides. Methods of disinfection and sterilisation.

(g) Insects—Insecticides and disinfection—insects in relation to disease. Insect control.

(h) Protozoal and helminthic diseases—Life cycle of protozoen and helminths, their prevention.

5. Medical statistics :

Principles and elements of vital statistics.

6. Preventive medicine :

(a) General principles of prevention and control of communicable diseases. Plague, cholera, small pox, diphtheria, leprosy, tuberculosis, malaria, kala-zar, filarisis, common viral diseases e.g. common cold measles, chicken pox, poliomyelitis, infective hepatitis, helminthic infections, enteric fever and dysenteries, also animal diseases transmissible to man. Their description and methods of preventive spread by contact, by droplet infection by environmental vehicles, (water, soil, food insects, animals, founderies etc.) homoeopathic point of view regarding prophylaxis and vaccination.

Natural history of diseases.

7. Maternal and child health, school health services health education, mental hygiene—elementary principles; school medicine its aim and methods.

8. Family Planning—channels of communication, planning programme, knowledge, attitudes regarding contraceptive practices. Population and growth control.

9. Public health administration and international health relation.

N.B.—Field demonstration—water purification plant, infectious diseases hospitals etc.

SURGERY INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Where medicine fails surgery begins. Affection of external parts requiring, mechanical skill properly belong to surgery; but frequently when the injury is to extensive or violent as to evoke dynamic reaction in the organism, dynamic treatment with remedies is necessary.

Surgery removes the end products of disease; but pre and post operative treatment is essential to correct the basic dyscrasia and prevent sequelae or complications.

A large number of conditions being amenable to internal medication in homoeopathy, the scope of the latter is much wider and that of surgery is to that extent limited. But as a supplement to medicine, surgery has definite place in homoeopathy and should be taught accordingly.

A. A course of systematic instructions in the principles of surgery.

B. During the first three months of the clinical period when the students will not be in charge of beds, they will be given instructions of fundamentals of clinical examination including physical signs, the uses of common

instruments, asepsis and antisepsis, dressing of wounds etc.

- C. Practical instructions in surgical method including physiotherapy.
- D. Practical instructions in minor operative surgery on the living.
- E. Instruction in the following subjects :
- (i) Radiology and electro-therapeutics and their application to surgery.
 - (ii) Venereal diseases.
 - (iii) Orthopaedics.
 - (iv) Dental diseases.
 - (v) Surgical diseases of infancy and childhood.
- F. As a matter of convenience, it is suggested that instructions may be given in the following manner during the two years of clinical course in surgery.

II. B.H.M.S.

1. General :

Applied anatomy and applied physiology, general surgical procedure. Inflammation, Infection-non-specific infections, specific infections, suppuration, bacteriology of surgical diseases, immunity, injuries, contusions, wounds, haemorrhage, shock, burns and scalds, tumours and cysts, injuries and diseases of skin and subcutaneous tissues, ulceration and gangrene, diseases of the blood vessels and lymphatic system, injuries of bones, injuries of joints, injuries of limbs, Injuries of the pelvis, diseases and tumours of bone and cartilage, diseases of joints, clinical manifestations of diseases of individual joints. Deformities of limbs, Amputation. Artificial limbs, Injuries and diseases of nerves, muscles, tendons, bursae.

2. General diseases.
3. Dental Surgery.
4. Lecture demonstrations on bandages and other surgical appliances.

III. B.H.M.S.

1. General :

Injuries and diseases of the scalp and skull, brain and its membrane, face, lips, mouth, jaws, tongue, salivary glands, neck, thyroid, parathyroid and thymus, breast, chest and thoracic viscera, spine, abdominal parieties and peritonium, stomach, duodenum, liver, gall bladder and bile ducts, pancreas and spleen, intestines rectum and anal canal. Intestinal obstruction, hernia, injuries and diseases of kidney, ureter, bladder, urethra and genitalia. Diseases of the suprarenal and the autonomic nervous system.

2. Otorhinolaryngology (E.N.T.) :

Knowledge of the common diseases and accidents of ear, nose and throat including tracheo-bronchial

tree and oesophagus with a knowledge of anatomy, physiology, pathology, treatment and simple operative measures.

3. Ophthalmology :

Clinical examination of the eye—subjective and objective elementary anatomy of the eye, Common diseases of the lids, lacrimal apparatus, conjunctivitis, cornea, sclera, iris, ciliary body and lens, glaucoma, orbital cellulitis, exophthalmos, Endophthalmos, Panophthalmitis, common diseases of the retina and the optic nerve, associated with general conditions. Injuries of the eye lids and eye ball. Elementary refraction of the eye. Squint Ophthalmoscopy, Common operations of the eye and its appendages.

4. Lecture demonstrations on X-ray.

5. Surgical diseases of infancy and childhood.

Note :

1. Throughout the whole period of the study, the attention of the student should be directed by the teachers of this subject to the importance of its preventive aspects.

2. Instructions in these branches of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and homoeopathic treatment.

3. Every student shall prepare and submit 20 complete case histories, 10 each in the II & III B.H.M.S. classes respectively.

The written papers in Surgery shall be distributed as follows :—

Paper I

General Surgery :

Inflammation, specific and non-specific infections, haemorrhage, shock, burns, ulcer and gangrene Tumours and cysts. Injuries and diseases of nervous, muscles, tendons and bursa, diseases of lymph, vascular system including spleen—

Head and neck surgery including surgery of thyroid, breast and congenital anomalies.

Abdominal surgery including gastrointestinal system Bone and joint surgery. Injuries and diseases of spine.

Deformities of limbs.

Thracic surgery and Homoeopathic therapeutics

Paper II

Otorhinolaryngology, general diseases, ophthalmology. Dental and Homoeopathic therapeutics and scope of surgery in Homoeopathy.

OBSTETRICS GYNAECOLOGY AND INFANT HYGIENE INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Homoeopathy adopts the same attitude towards these subjects as it does towards medicine and surgery. But while dealing with obstetrical and gynaecological

cases, a homoeopathic physician must be trained in special clinical methods of investigation for diagnosing local conditions and discriminating cases, there surgical intervention either as a life-saving measure for removing mechanical obstacles is necessary.

The best time to eradicate familial dyscrasias in a woman or to purify the foetus of such dyscrasias which it may inherit during pregnancy; and this should be specially stressed.

Students should also be instructed in the case of the new-born. The fact that the mother and child from a single biological unit and that this peculiar close psychological relationship persists for at least the first two years of the child's life should be particularly emphasised.

A course of systematic instructions in the principles and practice of obstetrics and gynaecology and infant hygiene, including the applied anatomy and physiology of pregnancy and labour.

II. B.H.M.S. Course

Obstetrics.—Applied anatomy, development of the ovum. The foetus and appendages, pregnancy—normal pregnancy, prenatal care, introduction to abnormal pregnancy. Labour—normal, introduction to abnormal labour. Puerperium; normal puerperium; Post-natal care.

Gynaecology.—Applied anatomy and physiology, gynaecological examination. Developmental anomalies of the female generative organs; sex-hormones and disorders of function, menstrual anomalies; displacement.

Infant Hygiene.—Care of the new-born.

III. B.H.M.S. Course

Obstetrics.—Pregnancy—abnormal pregnancy, abortions, molar pregnancy, extra-uterine pregnancy disease of placenta and membrane, toxæmia of pregnancy. Antepartum haemorrhage, Disorders of genital tract retroversion, prolapse, tumours etc. Multiple pregnancies. Protracted gestation. Common disorders associated with pregnancy, labour, abnormal presentation and position, twins, prolapse of the cord and limbs. Abnormalities in the action of the uterus. Abnormal conditions of the soft parts. Contracted pelvis. Obstructed labour. Complications of the third stage of labour. Injuries of birth canal. Common obstetrical operation. Puerperium, abnormal puerperium. Infection. Other common disorders

Gynaecology—Inflammation, ulceration and traumatic lesions of the female genital organs. New growth, common gynaecological operations and radiotherapy.

Infant Hygiene.—Breast feeding—artificial feeding. Management of prematurity, asphyxia, birth injuries and common disorders of the new-born.

Note :

1. Throughout the whole period of the study the attention of the student should be directed by the

teachers of this subject to the importance of its preventive aspects.

2. Instructions in this branch of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and treatment.

3. Every student shall prepare and submit 20 complete case histories, 10 each in the II and III B.H.M.S. classes respectively.

The written papers in Obstetrics and Gynaecology shall be distributed as follows :—

Paper I.—Obstetrics new born, infant hygiene homoeopathic therapeutics.

Paper II.—Gynaecology and Homoeopathic therapeutics.

MEDICINE INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Homoeopathy has a distinct approach to disease. It recognises diseases neither by its prominent symptoms nor by those of any organ or part of the body. It treats the patient as a whole and the totality of the symptoms exhibited by him represents his disease. Merely the name of the condition from which he suffers most is thus of no significance to a homoeopath.

The basic principles of homoeopathy that it treats the patient and not his disease should be constantly impressed in the minds of the students, and it is only when this approach is firmly inculcated in them that they will be true homoeopaths.

Medicine is essentially a practical science and can be more learnt at the bed-side than in a class room. Care should therefore be taken to impart an intensive clinical training to the students during the later part of their study in the college.

- A. A course of systematic instructions in the principles and practice of medicine.
- B. During the first three months of the clinical period when the students will not be in charge of beds they will be given instructions on elementary methods of clinical examination including physical signs, the use of the common instruments like stethoscope, ophthalmoscope, etc.
- C. Instruction in Homoeopathic therapeutics and prescribing.
- D. As a matter of convenience, it is suggested that instructions may be given in the following manner during the II, III and IV B.H.M.S. classes in medicine,

II B.H.M.S.

Applied Anatomy and Applied physiology.

Diseases of the respiratory system.

Diseases of the digestive system and peritoneum.

Diseases of metabolism and deficiency diseases.

Diseases of blood, spleen and lymph glands.

Pulmonary tuberculosis.

Disorders of endocrine system.

Applied materia medica/homoeopathic therapeutics.

III & IV B.H.M.S.

Infectious diseases:

Diseases of the cardio-vascular system.

Diseases of the genito-urinary system.

Diseases of the locomotor system.

Diseases of skin including leprosy.

Psychological medicine.

Tropical diseases.

Diseases of infants and children.

Applied materia medica/homoeopathic therapeutics.

Note :

1. Throughout the whole period of the study the attention of the student should be directed by the teachers of this subject to the importance of its preventive aspects.

2. Instructions in these branches of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and treatment.

3. Every student shall prepare and submit 20 complete case histories, 10 each in III and IV B.H.M.S. classes.

The written papers in Medicine shall be distributed as follows :—

Paper I :

Infectious diseases, Disorders of endocrine system, diseases of metabolism and deficiency diseases. Diseases of the digestive system and peritoneum. Diseases of respiratory system, diseases of blood, spleen and lymph glands and tropical diseases, Homoeopathic Therapeutics.

Paper II :

Diseases of locomotor system, Diseases of cardio-vascular system, diseases of urino-genital system, diseases of children, diseases of nervous system, psychological medicine, common skin diseases, Homoeopathic therapeutics.

HOMŒOPATHIC REPERTORY

Homoeopathic materia medica is an encyclopedia of symptoms. No mind can memorise all the symptoms of all the drug together with their characteristic gradation. The repertory is an index, a catalogue of the symptoms of the materia medica, neatly arranged in a practical form, and also indicating the relative gradation of drugs, and it greatly facilitates quick selection of the indicated remedy. It is impossible to practice homoeopathy without the aid of repertories and the best repertory is the fullest. Homoeopathic materia medica and repertory are thus like twins.

It is possible to obtain the needed correspondence between drugs and disease conditions in a variety of ways and degrees and there are therefore different types of repertories, each with its own distinctive advantages in finding the *similimum*.

Case taking :

Difficulties of taking a chronic case. Recording of cases and usefulness of record keeping.

Totality of symptoms. Prescribing symptoms; uncommon peculiar and characteristic symptoms. General and particular symptoms. Eliminating symptoms. Analysis of the case uncommon and common symptoms. Gradation and evaluation of symptoms. Importance of mental symptoms. Kinds of sources of general symptoms. Concomitant symptoms.

1. History of repertories.
2. Types of repertories.
3. Demonstration of 3 cases worked on Boenninghausen.
4. Kent's repertory—advanced study with case demonstration.
5. Boger's Boenninghausen repertory—his contribution to repertory.
6. Card repertory with demonstration of 5 cases, and advantages of Card repertories. Theoretical lectures with demonstrations.

PRACTICAL

Student are to repertories :

- (i) 15 short cases on Kent.
- (ii) 10 chronic (long cases on Kent).
- (iii) 5 cases to be cross checked.

PART VI

Examination

FIRST B.H.M.S. EXAMINATION

7. Admission to examination, scheme of examination, etc.—(i) Any undergraduate may be admitted to the First B.H.M.S. examination provided that he has

regularly attended the following courses of instructions in the subjects of the examination, theoretical and practical for not less than one and half years at a Homoeopathic College to the satisfaction of the head of such College.

The Courses of minimum number of lectures, demonstrations/practical/clinical classes/seminars etc. in the subjects shall be as shown below :—

Subjects		Theoretical	Number of lectures/ Demonstrations/ practical/tutorial classes.
*Introduction including	150 } *100 }	250 Hrs.	50 Hrs.
Materia Medical & Homoeopathic Philosophy			
Anatomy		200 Hrs.	450 Hrs.
Physiology including Biochemistry		250 Hrs.	400 Hrs.
Homocopathic Pharmacy		50 Hrs.	100 Hrs.

*Students should be given introductory lectures on history of medicine in general with special reference to the emergence of Homoeopathy, contribution made by Hahnemann to medicine in general life of Hahnemann, the history of the development of Homoeopathy in India, various schools of thought in Homoeopathy and their critical evaluation, comparative study of fundamentals of various systems of medicine, introduction of basic medical science like Anatomy, Physiology, Pathology etc. their inter-relationship and relevance to the clinical subjects, importance of biochemistry and pathology in homocopathic practice (as an illustration, a little exposure to the clinical materials) the outlines of homocopathic philosophy, study of man as a whole both in health and disease, introduction to the philosophy of materia medica and its study with illustration by a few drug-pictures of importance commonly used drugs, integrated approach towards the medical, surgical and gynaecological diseases, acquaintance with pharmacological action of some of the commonly used modern drugs so as to give them idea about the introgenic disease caused by those modern drugs, an introduction to biostatistics, a brief study of logic, psychology and psychiatry, the role of a physician in the changing society, national health and family welfare needs and programmes of the country.

Greater emphasis should be laid on teaching of Homoeopathic Materia Medica with the help of drug pictures of important drugs and on the Homoeopathic Philosophy.

The First B.H.M.S. examination shall be held at 182 GI/83—8

the end of 18 months of First B.H.M.S. Course.

(ii) The examination shall be written, oral and practical.

- (a) The examination in Homoeopathic pharmacy shall consist of one theoretical paper, one practical examination and one oral examination.
- (b) The examination in anatomy shall consist of two theoretical papers, one practical examination and one oral examination.
- (c) The examination in physiology shall consist of two theoretical papers, one practical examination and one oral examination.
- (d) The examination in Materia Medica and Homoeopathic Philosophy shall consist of one theoretical paper and one oral examination.

Three hours shall be allowed for each theoretical paper in each subject.

(iii) A candidate securing 75% or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in the first attempt.

(iv) In order to pass the first B.H.M.S. Examination a candidate must pass in all subjects of the examination.

(v) Pass marks in all subjects both homoeopathic and allied medical subjects shall be 50% in each part (written, oral and practical).

(vi) Full marks for each subject and the minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subjects	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks
Pharmacy	100	50	50	25	50	25	200	100
Anatomy	200	100	100	50	100	50	400	200
Physiology & Biochemistry	200	100	100	50	100	50	400	200
Materia Medical & Homoeopathic Philosophy (20 Polychrest drugs will be expected from Appendix I. In Organon Aphorism 1—145)	100	50	50	25	200	100

SECOND B.H.M.S. EXAMINATION

8. (i) No candidate shall be admitted to the II B.H.M.S. examination unless :—

- He has passed the First B.H.M.S. examination at least one year previously ; and
- has regularly attended the following courses of instructions, theoretical and practical in

the subjects of the examination over a period of at least one year in a recognised Homoeopathic College subsequent to his passing the First B.H.M.S. examination to the satisfaction of the head of the College.

(ii) Courses of the minimum number of lectures, demonstrations and practical/clinical classes in the subjects shall be shown as below :—

Subjects	Theoretical	Practical/clinical/ tutorial classes
Pathology, bacteriology and parasitology	150	50
Forensic medicine & Toxicology	50	20
Social and preventive medicine (including health education and family medicine)	150	100
Materia Medica	50	70
Organon and Homoeopathic Philosophy	125	100

(iii) The Second B.H.M.S. Examination shall be held at the end of 2½ years of B.H.M.S. Course.

(iv) The examination shall be written, oral, practical and/or clinical as provided hereinafter, three hours being allowed for each paper.

(v) The examination in pathology, bacteriology and parasitology shall consist of one theoretical paper, one practical examination and one oral examination including questions of microscope and microscopic specimens.

(vi) The examination in social and preventive medicine including health education and family medicine shall consist of one theoretical paper, one oral examination and one spotting and identification of specimens.

(vii) The examination in forensic medicine and toxicology shall consist of one theoretical paper one oral examination and one identification and spotting of specimens.

(viii) The examination in Homoeopathic Materia Medica shall consist of one theoretical paper, one practical and one oral examination.

(ix) The examination in organon shall consist of one theoretical paper, one oral and practical examination.

(x) The candidate securing 75 per cent or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in the first attempt.

(xi) In order to pass the Second B.H.M.S. examination, a candidate shall have passed in all subjects or the examination.

(xii) Pass marks in all subjects, Homoeopathic and allied medical subjects shall be 50% in each part (written, oral and practical).

(xiii) Full marks for such subjects and the minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks
Pathology	100	50	50	25	50	25	200	100
Forensic Medicine & Toxicology	100	50	50	25	50	25	200	100
Social and Preventive Medicine (including education and family medicine)	100	50	50	25	50	25	200	100
Materia Medica	100	50	50	25	50	25	200	100
Organon & Homoeopathic Philosophy	100	50	50	25	50	25	200	100

THIRD B.H.M.S. EXAMINATION

9. (i) No candidate shall be admitted to the Third B.H.M.S. examination unless :

- (a) he has passed the Second B.H.M.S. examination at least one year previously ; and
(b) has regularly attended the following courses of instructions, theoretical and practical in

the subjects of examination over a period of at least two years in a Homoeopathic College subsequent to his passing the First B.H.M.S. examination to the satisfaction of the head of the College.

(ii) The Courses of minimum number of lectures, demonstrations and practical/clinical classes in the subjects shall be as shown below :—

Subjects	Theoretical	Practical/clinical/tutorial classes
1. Surgery, including E.N.T., Eye, Dental and Homocopathic Therapeutics	200 (in two years)	150—Two terms of 3 months each in surgical ward & OPD.
2. Obstetrics and Gynaecology, infant hygiene and Homoeo. therapeutics	200 (in two years)	150—Two terms of 3 months homoeopathic therapeutics each in Obs. and Gyn. ward and OPD.
3. Materia Medica	200 (in two years)	75
4. Organon of Philosophy	250 (in two years)	100

(iii) The Third B.H.M.S. examination shall be held at the end of 3½ years of B.H.M.S. course.

(iv) The examination shall be written, oral, practical and/or clinical as provided hereinafter, three hours being allowed for each paper.

(v) The examination in surgery shall consist of two theoretical papers, one oral examination and one clinical examination not less than one hour being allowed to each candidate for the examination of and report on his cases with special reference to the scope of Homoeopathic therapeutics vis-a-vis the necessity of surgical treatment in the particular case.

(vi) A practical examination in which questions on the use of surgical instruments and other appliances shall form special part.

(vii) The examination in obstetrics, gynaecology and infant hygiene including diseases of new-born shall consist of two theoretical papers, one oral examination including questions on pathological specimens, models and X-ray films including question on instruments and appliances and one clinical examination of not less than one hour being allowed to the candidate for the examination and report on his cases (one obstetric and gynaecological case) with special reference to both nosological and therapeutic diagnosis from Homoeopathic point of view.

(viii) The examination in Materia Medica shall consist of one theoretical paper, one oral examination and one bedside practical examination of 2 short cases not less than half an hour being allowed for examinations of and report on each case.

(ix) The examination in organon shall consist of two theoretical papers, one oral examination and one bed-side practical examination of one long case in the application of the tenets of the organon in case taking evaluation of symptoms and guidelines of treatment not less than 2 hours being allowed for examinations of an report of each case.

(x) A candidate securing 75 per cent or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in first attempt.

(xi) In order to pass Third B.H.M.S. examination a candidate shall have passed in all subjects of the examination.

(xii) Pass marks in all subjects both homoeopathic and allied medical subjects shall be 50% in each part (written, oral and practical).

(xiii) Full marks for each subject and minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks
Surgery	200	100	100	50	100	50	400	200
Obstetric & Gynaecology	200	100	100	50	100	50	400	200
Organon and Homoeopathic Philosophy	200	100	100	50	100	50	400	200
Materialia Medica	100	50	100	50	100	50	300	150

FOURTH B.H.M.S. EXAMINATION

10. (i) No candidate shall be admitted to the Fourth B.H.M.S. examination unless :—

- (a) he has passed the Third B.H.M.S. examination at least one year previously; and
(b) has regularly attended the following courses of instructions, theoretical and practical in

the subject of the examination over a period of at least three years in a recognised Homoeopathic College subsequent to his passing the First B.H.M.S. examination to the satisfaction of the head of the College.

(ii) Courses of the minimum number of lectures, demonstrations and practical/clinical classes in the subjects shall be as shown below :—

Subjects	Theoretical	Practical/clinical/tutorial classes
1. Practice of medicine	250 (in 3 yrs.)	400 (3 terms of 3 months each in homoeopathic ward & OPD including children mental and skin, diseases deptts.)
Children diseases	40	
Mental diseases and	40	
Skin diseases	20	
including homoeopathic therapeutics		
2. Homoeopathic Materia Medica	200 (in one yr.)	125
3. Repertory	100 (in 3 yrs.)	150

(iii) The Fourth B.H.M.S. examination shall be held at the end of 4½ years of B.H.M.S. Course.

(iv) The examination shall be written, oral, practical or clinical as provided hereinafter, three hours being allowed for each paper.

(v) The examination in medicine, (including children, mental and skin) shall consist of two papers, one oral examination and one bed-side practical examination in case taking of two short cases with a view to determining both nosological and therapeutic diagnosis from the Homoeopathic point of view. Time allotted shall be half an hour for each case.

(vi) The examination in Materia Medica shall consist of two theoretical papers, one oral examination and one bed-side practical examination, not less than two hours being allowed for examination and report on his case.

(vii) The examination in Repertory shall consist of one theoretical paper, one oral examination and one practical examination in two cases of repertorial work. Time allotted shall be half an hour for each case.

(viii) A candidate securing 75 per cent or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in first attempt.

(ix) In order to pass Third B.H.M.S. examination a candidate shall have passed in all subjects of the examination.

(x) Pass marks in all subjects, both homoeopathic and allied medical subjects shall be 50 per cent in each subject.

(xi) Full marks for each subject and minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks
Medicine	200	100	100	50	100	50	400	200
Homoeopathic Materia Medica	200	100	100	50	100	50	400	200
Repertory	100	50	50	25	50	25	200	100

11. Results and readmission to examination.—(i) Every candidate for admission to an examination shall 21 days before the date fixed for the commencement of the examination send to the authority concerned his application in the prescribed form alongwith the examination fee.

(ii) As soon as possible after the examination the examining body shall publish a list of successful candidates arranged in the following manner :—

- (a) the names and roll numbers of the first ten candidates in order of merit, and

(b) the roll numbers of others arranged serially.

(iii) Every candidate on passing shall receive a certificate in the form prescribed by the examining body concerned.

(iv) A candidate who appears at the examination but fails to pass in a subject or subjects may be admitted to a supplementary examination in the subject or subjects of that part of the examination in which he has failed after six weeks from the publication of result of the first examination on payment of the pres-

cribed fee alongwith an application in the prescribed form.

(v) If a candidate obtains pass marks in the subject or subjects at the supplementary examination he shall be declared to have passed at the examination as a whole.

(vi) If such a candidate fails to pass in the subject or subjects at the supplementary examination he may appear in that subject or subjects again at the next annual examination on production of a certificate (in addition to the certificate required under the regulations) to the effect that he had attended, to the satisfaction of the Principal, a further course of study during the next academic year in the subject or subjects in which he had failed, provided that all the parts of the examination shall be completed within four chances (including the supplementary one) from the date when the complete examination came into force for the first time.

(vii) If a candidate fails to pass in all the subjects within the prescribed four chances, he shall be required to prosecute a further course of study in all the subjects and in all parts for one year to the satisfaction of the head of the college and appear for examination in all the subjects.

Provided that if a student appearing for the IV B.H.M.S. examination has only one subject to pass at the end of prescribed chances, he shall be allowed to appear at the next examination in that particular subject and shall complete the examination with this special chance.

(viii) All examinations shall ordinarily be held on such dates, time and places as the examining body may determine.

(ix) The examining body may, under exceptional circumstances, partially or wholly cancel any examination conducted by it under intimation to the Central Council of Homoeopathy and arrange for conducting re-examination in those subjects within a period of thirty days from the date of such cancellation.

12. Examiners.—(i) No person other than the holder of a Diploma obtained after 4 years of study or a Degree in Homoeopathy or a person possessing qualification included in the Third Schedule shall be appointed as an internal or external examiner or paper-setter for the conduct of a professional examination for the B.H.M.S. (Degree) any course.

Provided that—

- (a) no such person shall be appointed as an internal examiner unless he has at least three years' teaching experience in the subject;
- (b) no person below the rank of Reader/Assistant Professor in the subject of a Degree level institution shall be appointed as an internal examiner;
- (c) no person shall be appointed as an external examiner in any allied medical subject unless

he possesses a recognised medical qualification as required for appointment to a relative teaching post in accordance with Annexure B, of the Homoeopathy (Minimum standard of Education) Regulation, 1983;

- (d) external examiners shall be appointed only from the teaching staff of recognised Homoeopathic College and Colleges of Modern Medicine;
- (e) not more than one-third of the total number of external examiners shall be from amongst practitioners in Homoeopathy or Modern Medicine who, in the opinion of the examining body are practitioners of repute and who have obtained a Homoeopathic qualification or a medical qualification recognised under the Indian Medical Council Act, 1956;
- (f) persons in Government employment may also be considered for appointment as external examiners provided they possess a medical qualification as specified in sub-regulation (e) above;
- (g) a paper-setter may be appointed as an internal or external examiner.

(ii) The examining body may appoint a single moderator or moderators not exceeding three in number for the purpose of moderating question papers.

(iii) Oral and practical examinations shall as a rule be conducted by the respective internal and external examiners with mutual co-operation. They shall each have 50 per cent of the maximum marks out of which they shall allot marks to the candidates appearing at the examination according to their performance and the marks-sheet so prepared shall be signed by both the examiners. Either of the examiners shall have the right to prepare sign and send mark-sheets separately to the examining body together with his comments. The examining body shall take due note of such comments but it shall declare results on the basis of the marks-sheets.

(iv) Every Homoeopathic College shall provide all facilities to the internal and external examiners for the conduct of examinations, and the internal examiners shall make all preparations for holding the examinations.

(v) The external examiner shall have the right to communicate to the examining body his views and observations about any shortcomings or deficiencies in the facilities provided by the Homoeopathic College.

(vi) He shall also submit a copy of his communication to the Central Council for such action as the Central Council may consider fit.

Dr. P. L. VERMA, Secy.
Central Council of Homoeopathy.

